यीशु मसीह के साथ हमारी एकता

अनुग्रह के द्वारा विश्वास से जीवन
जीने हेतु एक अध्ययन

लेखक

डेविड कुयीकेन्डल

अनुवादक

सैमुएल विलयम्स्

Verses marked TLB are taken from The Living Bible, copy-right 1971 by Tyndale House Publishers, Wheaton, Illinois. Used by permission.

This work is published by
David Kuykendall Ministries Dallas, Texas

Copyright2006
David KuyKendall

विषय–सूचि

प्राक्कथन /4
भूमिका /6
भाग एक – व्यक्तिगत अनुभव /9
1. सोमवार की सुबह के लिये कुछ /10
भाग दो – पवित्र शास्त्र के अनुसार शिक्षाऐं /22
2. यीशु ''अन्तिम आदम है'' /24
3. पाप को समझना /29
4. अब – हम यीशु में क्रूस पर चढ़ाये गये हैं / 38
5. अब – हम यीशु में दफनाये गये और जी उठे हैं /45
6. अब – यीशु आप में है /51
भाग तीन – प्राथमिक प्रस्ताव /55
7. विश्वास का प्रस्ताव /57
8. चयन का कार्य /67
भाग चार – जीवन परिवर्तन / 74
9. आखिरकार – आत्मा से परिपूर्ण जीवन / 75
10. आत्मा क्या भिन्नता लाती है /81
11. पाप से स्वतंत्रता /97
12. संसार से स्वतंत्रता / 104
13. व्यवस्था से स्वतंत्रता /112
14. स्वर्गीय स्थानों में जीवन / 125
15. परमेश्वर के आश्चर्यकर्म करने वाले कार्यकर्ता / 141
भाग पांच – व्यवहारिक मुद्दे / 155
16. दुख सहने को समझना / 156
17. इसके विषय में क्या ? / 166
18. चेतावानियां / 179
19. आज्ञाकारिता / 188
निष्कर्ष / 195
अन्तिम शब्द / 202

प्राक्कथन

पौलुस प्रेरित 1कुरिन्थियों 6:17 में बताता है, ''परन्तु जो प्रभु से संगति करता है उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।''

जब हम मसीही बने थे तो हमारे साथ क्या हुआ था, इसके लिये, नये नियम के लेखकों ने अनेक शब्दावलियों का उपयोग किया है : निर्दोष ठहराया जाना, पवित्रीकरण, गोद लिया जाना, क्षमा, छुटकारा, नया जन्म। हममें से बहुत से लोग इन बातों के विषय में थोड़ा–बहुत अवश्य समझते हैं।

यद्यपि, अनेक विश्वासी यह नहीं समझ पाते हैं कि यीशु मसीह पर विश्वास लाने के समय, हम क्रूस पर चढ़ाये गये, दफन किये गये और जी उठे प्रभु के साथ एक हो जाते हैं। और जीवन की परिपूर्णता और मसीही सेवा में अधिकत्तम सफलता पाने के लिये, विश्वासियों को अपने प्रभु के साथ एकता पर आधारित जीवन को समझना और अनुभव करना आवश्यक है।

बीसवीं शताब्दी के मध्य में, अनेक विश्वासियों ने इस आशीषमय सत्य को समझ लिया था कि **यीशु मसीह, प्रत्येक विश्वासी में है**। यद्यपि यह मसीही समझ और अनुभव में आगे बढ़ाया गया एक महान कदम था, परन्तु मात्र यह समझ ही, हमें वह आत्मिक जीवन और फल धारण करने की योग्यता प्रदान नहीं करेगी जिसकी खोज में हम हैं।

यीशु के साथ हमारी एकता के सम्बन्ध में एक अन्य महत्वपूर्ण सत्य को नये नियम में सिखाया गया है जिसे हमें समझना और लागू करना है, वह सत्य है : **प्रत्येक विश्वासी, यीशु मसीह में है**। इस सत्य को अनेक प्रकार से पवित्रशास्त्र में वर्णित किया गया है, जैसे कि : ''उसमें होना,'' ''मसीह यीशु में'',

''जिसमें'' अथवा ''प्रिय में''। बाइबिल के उच्च रूप से सम्मानित विद्वान सिखाते हैं कि बहुधा इन शब्दावलियों का अभिप्राय होता है कि कि विश्वासी, ''मसीह के साथ एकता में'' है।

और यह समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि यीशु मसीह जो हममें निवास करता है, वह तब तक हमें निरन्तर स्वयं से परिपूर्ण नहीं करता है अथवा हमारे जीवनों में प्रदर्शित नहीं होता है, जब तक हम इस सत्य को पहिचानते और लागू नहीं करते हैं। इसलिये हमें यीशु मसीह के साथ हमारी एकता के इस सन्तुलित दृष्टिकोण को बड़ी सावधानीपूर्वक जांचना चाहिये। वह ''हम में'' है और हम ''उस में'' हैं। इस अध्ययन में यह भी सम्मिलित किया जायेगा कि जब एक विश्वासी इस सच्चाई को समझ लेता है और इसे लागू करता है तो कैसे उसका जीवन और सेवकाई बदल जायेगी।

अतः मेरा अभिप्राय है, कि हमारी ''यीशु के साथ एकता'' के इस सन्तुलित दृष्टिकोण पर परिचर्चा करूँ और इसे स्पष्ट करूँ। वह ''हम में'' है और हम ''उस में'' हैं। जो मसीही प्रभु के साथ अपनी एकता को समझते हैं और उसके अनुसार जीवन जीते हैं, उन सब के लिये यह अध्ययन उन बातों को सम्मिलित करेगा जिनसे उनके जीवन और सेवकाई और अधिक विशेष बनेंगे।

भूमिका

''यीशु मसीह के साथ एकता'' की विषय–वस्तु पांच भागों में विकसित की गयी है, जिसके बाद अन्तिम निष्कर्ष में दो व्यक्तिगत गवाहियां सम्मिलित हैं।

भाग एक – ''व्यक्तिगत अनुभव'' – हमारी कुछ सामान्य आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति के साथ आरम्भ होता है। इसके बाद यह उन अनेक लोगों की कहानियां बताता है जिन्होंने यीशु मसीह के साथ अपनी एकता की समझ पाने और उसे जीने के द्वारा इन आवश्यकताओं के समाधान – और बहुतायत के जीवन को प्राप्त कर लिया है।

भाग दो – ''पवित्रशास्त्र के अनुसार शिक्षाऐं'' – यीशु मसीह के साथ हमारी एकता की बाइबिल सम्बन्धी आधारभूत शिक्षाओं को सम्मिलित करता है।

भाग तीन – ''प्राथमिक प्रस्ताव'' – दर्शाता है कि हम यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को कैसे जी सकते हैं।

भाग चार – ''जीवन परिवर्तन'' – हमें दर्शाता है कि प्रभु के साथ अपनी एकता को जीने के द्वारा हम अनेक बदलावों की अपेक्षा कर सकते हैं।

भाग पांच – ''व्यवहारिक मुद्दे'' – उन अनेक व्यवहारिक मुद्दों का समाधान प्रस्तुत करता है जिनका सामना वे लोग करते हैं जिन्होंने यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को जीने की यात्रा आरम्भ की है।

इस पुस्तक के अध्यायों को क्रमानुसार पढ़ना सहायक होगा क्योंकि वे एक–दूसरे पर आधारित हैं।

पाठक शीघ्र ही यह देखेंगे कि पर्याप्त पुनरावृति हुयी है। ऐसा जानबूझ कर किया गया है। यीशु के साथ एकता की

अवधारणा को वर्षों से सिखाने ने दो कारण प्रगट किये हैं कि यदि अधिकतर जीवनों में सन्देश को प्रासंगिक बनना है, तो पुनरावृति क्यों अनिवार्य है।

सर्वप्रथम, मसीह के साथ हमारी एकता को जीना एक ऐसी प्रक्रिया है जो पुनः सीखने की मांग करती है। क्योंकि सीखने के लिये पुनरावृति अनिवार्य है, अतः यह दोबारा सीखने के लिये और अधिक आवश्यक है।

दूसरा, शैतान, जो अनुग्रह में होकर जीवन जीने के सन्देश का अत्याधिक विरोधी है, अनेक बार लोगों को वास्तव में इन सच्चाईयों को सीखने से पृथक रखने में सफल होता है। वह यह जानता है कि जो लोग यीशु के साथ अपनी एकता को समझते हैं और उसके अनुसार जीवन जीते हैं, वे उसे और उसके राज्य को अपार क्षति पहुंचाते हैं।

मैं विश्वास करता हूँ कि यद्यपि, आपको पुनरावृति अनावश्यक भी प्रतीत हो तौभी आप धीरज और समझदारी रखेंगे।

पूरे अध्ययन में, ''यीशु मसीह के साथ हमारी एकता'' और ''यीशु मसीह में हमारा एकत्व'' शब्दावलियों को एक ही बात के अभिप्राय के प्रति उपयोग किया गया है। इसके साथ ही, ''अनुग्रह का जीवन'' और ''विश्वास का जीवन'' शब्दावलियों का उपयोग उन लोगों के अनुभव को वर्णित करने के लिये हुआ है जो यीशु के साथ अपनी एकता को जीते हैं।

जब कभी भी मैं यीशु के साथ हमारी एकता विषय पर सन्देश देता हूँ तो मैं इस प्रकार आरम्भ करता हूँ : ''यदि आप प्रभु यीशु से अत्याधिक प्रेम करते हैं, और जो मैं आपको बताऊंगा उसे आपने पहले कभी नहीं जाना है और यदि परमेश्वर का आत्मा इन सच्चाईयों को आप पर प्रगट करना चाहता है तो आप इस अध्ययन के बाद पहले जैसे कभी नहीं रहेंगे।''

जब आप इस अध्ययन के पृष्ठों को पढ़ते हैं तो मैं आपके प्रति भी इसी सम्भावना को व्यक्त करना चाहता हूँ। उन लोगों की

अनेक उत्तेजनात्मक गवाहियां जिन्होंने इन सच्चाईयों को सीखा है, इस पूर्व घोषणा की सत्यता को प्रमाणित करती हैं।

यदि आपका जीवन भली प्रकार से चल रहा है, तो सम्भव है कि आप केवल इसे एक और रूचिकर पुस्तक के ही रूप में देखेंगे। परन्तु यदि आप निराश हैं, तो आप उस जीवन से कुछ ही घंटे दूर हो सकते हैं, जिसकी आप इच्छा रखते हैं और वर्षों से जिसे पाने का प्रयास करते रहे हैं – जो ''बहुतायत'' का जीवन है।

भाग – एक

व्यक्तिगत अनुभव

भाग–एक में केवल एक ही अध्याय है – ''सोमवार की सुबह के लिये कोई बात।'' यह अध्याय स्पष्ट रूप से दो विभागों में विभाजित है। पहिले विभाग में कुछ ऐसी निराशाऐं और असफलताऐं प्रस्तुत की गयी हैं जिनके साथ हममें से अधिकतर लोग संघर्ष करते हैं। दूसरे विभाग में उन अनेक लोगों की व्यक्तिगत गवाहियों की एक श्रृंखला को सम्मिलित किया गया है जिन्होंने इन असफलताओं और निराशाओं पर विजय प्राप्त की है और उस बहुतायत के जीवन को पाया है, जिसकी प्रतिज्ञा हमारे प्रभु के द्वारा का गयी थी कि वह जीवन हमें यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को जीने के अनुसार मिल सकता है।

आरम्भ में इन रोमांचकारी गवाहियों को इस प्रमाण के रूप में दिया गया है कि वह जीवन, जिसे परमेश्वर से प्रेम करने वाले विश्वासी खोज रहे हैं, उन सबके लिये सम्भव है जो यीशु मसीह के साथ उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनः जी उठने की अपनी एकता में जीवन जीते हैं।

अध्याय 1

सोमवार की सुबह के लिये कोई बात

''मेरे लोग सोमवार की सुबह के लिये कुछ चाहते हैं।''

यह कहने वाली महिला एक बड़ी मसीही कलीसिया में एक कार्यकर्ता थी। उसकी आवाज में निराशा स्पष्ट रूप से झलक रही थी।

''हमें धर्मसिद्धान्त केवल इसलिये नहीं चाहिये क्योंकि वे धर्मसिद्धान्त हैं परन्तु हम उन्हें जीवन जीने के लिये एक संसाधन के रूप में चाहते हैं'', उसने आगे कहना जारी रखा, उसने बताया कि उसकी समस्या इस तथ्य से उपजी है कि उसकी कलीसिया रविवार को बाइबिल के धर्मसिद्धान्तों को सिखाती थी, लेकिन उसने वहां कुछ भी ऐसा नहीं सीखा था जिसने उस पर प्रभाव डाला हो अथवा सोमवार या सप्ताह के अन्य दिनों में उसके जीवन को बदला हो।

''सोमवार की सुबह के लिये कोई बात'' पाने की इस मसीही अगुवे की इच्छा, सम्भवतः हमारी अपनी आवश्यकता को व्यक्त करती है। यदि ऐसा है, तो आप भी परमेश्वर की उन अनेक सन्तानों में से एक हैं जिनको इसी आवश्यकता का अनुभव होता है।

कुछ चाहिये

क्या आप भी, अन्य मसीहियों के समान बहुधा स्वयं को एक असफल व्यक्ति मानते हैं ? आप उन बातों को ही करते हैं और उन्हें सोचते हैं जिनसे आपको घृणा है ? क्या आप अपने आपको उन तमाम बातों को आत्मिक रूप से करने के अयोग्य पाते हैं जिन्हें करने की आप चाह रखते हैं – और आप जानते हैं कि एक मसीही

के रूप में आपको उन्हें अवश्य करना चाहिये ?

यदि इन प्रश्नों के प्रति आपका उत्तर 'हाँ' में है, तो आप उन लोगों में से एक हैं जिनके लिये यह अध्ययन तैयार किया गया है।

इसके प्रति शायद आप प्रतिवाद कर सकते हैं, कि ''परन्तु अन्य लोगों की समस्याओं से मेरी समस्याऐं भिन्न लगती हैं। वे भिन्न नहीं है। सारे विश्वासी आपके ही समान हैं। हम सभी नीचे दी गयी असफलता की इन अनेक गवाहियों से सहमत हो सकते हैं। हम सब को कुछ चाहिये–कुछ ऐसी सच्चाई जो सोमवार की सुबह और सप्ताह की प्रत्येक सुबहों पर हमारे जीवनों को बदल देगी। यहां कुछ ऐसी गवाहियां दी जा रही हैं जिनमें लोगों ने असफलताओं को अनुभव किया है और वे कुछ समाधान चाहते हैं।

क्रोध के निवारण लिये कुछ चाहिये

''मैं अपनी सन्तानों से प्रेम करता हूँ, परन्तु प्रत्येक दिन में पापपूंर्ण तरीके से उन पर क्रोधित हो जाता हूँ। एक अभिभावक बनने के लिये जितना अधिक सम्भव हो सकता है, मैंने सीखा है; मैंने स्वयं इसके लिये प्रार्थना की है; मैंने अन्य लोगों को भी प्रार्थना करने को कहा है। मैं बस क्रोध पर विजय प्राप्त नहीं कर पाता हूँ। मुझे कहां से सहायता प्राप्त हो सकती है?''

भय से मुक्ति के लिये कुछ चाहिये

''मैं भय के कारण असहाय हूँ। मुझे निरन्तर इसका भय सताता रहता है कि मेरे परिवार के किसी सदस्य के साथ कुछ बुरा होने वाला है। मैं जानता हूँ कि मुझे प्रभु की साक्षी देनी चाहिये, लेकिन मैं अस्वीकृति से डरता हूँ। मेरे मित्र मुझे एक चिन्ता में फंसे व्यक्ति के रूप में जानते हैं। मैं हर एक बात के लिये चिन्तित रहता हूँ। मैंने वर्षो तक अपने भयों से छुटकारा पाने के बारे में प्रार्थना की है, परन्तु मैं अब भी स्वयं को उतना ही भयभीत अनुभव करता हूँ जितना कि मैं तब था जब मैं एक मसीही बना था। परमेश्वर क्यों

नहीं मेरी सहायता कर पाता है ?''

कामुकता को हटाने लिये कुछ चाहिये

''मुझे यह स्वीकार करते हुये घृणा होती है, लेकिन मैं निरन्तर कामुकता की समस्या से ग्रस्त रहता हूँ। मैं स्वयं को सत्यतापूर्वक समझ नहीं पाता हूँ। मैं अनुभव करता हूँ कि मैं एक डरावना मसीही हूँ। मेरी ग्लानि बहुधा मुझ पर हावी हो जाती है। मैंने सारे प्रयास किये हैं, मैं जानता हूँ कि मुझे इस पर जय पानी है, परन्तु मैं नहीं जानता हूँ कि कैसे परिवर्तित हूँ। क्या परमेश्वर मुझे बदल सकता है ?''

कड़वाहट से बचने के लिये कुछ चाहिये

''मेरी समस्या, मेरा कटु स्वभाव है। कुछ मसीही मित्रों ने मेरा गलत लाभ उठाया था, और मैं इसे भुला नहीं सकता हूँ। प्रत्येक दिन मैं उनके विषय में और उन्होंने मेरे साथ जो किया था उस बारे में सोचता हूँ। जब मैं उनके साथ होता हूँ, तो उनसे वैसा व्यवहार नहीं कर पाता हूँ जैसा मुझे करना चाहिये। प्रार्थना ने किसी प्रकार की सहायता नहीं की है। आखिरकार मैंने निर्णय लिया है कि ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे मैं कभी बदल पाऊंगा।''

ईर्ष्या से दूर रहने लिये कुछ चाहिये

''लगता है कि ईर्ष्या ने मुझ पर अपना अधिकार जमा रखा है। मेरे मित्र जब मुझसे अधिक अच्छा घर पा जाते हैं तब मुझे उनसे ईर्ष्या होती है। मैं उनके अच्छे कपड़ो के लिये ईर्ष्या करता हूँ। मैं मसीही सेवा में जितना सफल हूँ जब वे मुझसे अधिक सफल होते हैं तब मुझे उनसे ईर्ष्या होती है। मुझे अनुभव होता है कि मैं संसार का सबसे ज्यादा आडम्बरी व्यक्ति हूँ। परन्तु मैंने स्वयं को बदलने के सारे प्रयास त्याग दिये हैं। मुझे नहीं लगता है कि मेरी सहायता की जा सकती है।''

स्वार्थ से बचने लिये कुछ चाहिये

''मैं अत्याधिक स्वार्थी हूँ। मैं केवल अपने ही बारे में सोच पाता हूँ। दिन समाप्त होने पर मैं अनुभव करता हूँ कि मैं कितने ही लोगों की सहायता कर सकता था यदि मैंने केवल उनके विषय में मात्र सोचा होता। मैंने अन्य लोगों की सहायता किये बिना न केवल पूरा दिन बिता दिया था। परन्तु अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये मैंने बहुत से लोगों के प्रति कठोर व्यवहार किया था मैं क्यों विश्वास नहीं रख सकता हूँ ?''

सन्देह के निवारण लिये कुछ चाहिये

''मेरे पास विश्वास नहीं है। मैं ऐसे अन्य लोगों को देखता हूँ जो विश्वास में हो कर कदम उठाते हैं, और वे आश्चर्यकर्मो को होते देखते हैं। जैसे कि, मेरे एक मित्र ने दसवां अशं देना आरम्भ किया था जबकि उस समय वह हमसे आर्थिक रूप से कमजोर था। परमेश्वर ने उसके लिये आर्थिक आश्चर्यकर्म किये। परन्तु दसमांश देना मुझे बड़ा भयभीत करता है। मैं जानता हूँ कि यह अनुचित है। मैं क्यों नहीं विश्वास रख पाता हूँ?''

उदासी को हटाने के लिये कुछ चाहिये

''जब मैं मसीही बना था तब आरम्भ में आनन्द और विश्वास से परिपूर्ण था। अब बहुत लम्बे समय से मैंने वैसा अनुभव किया है। अब मेरे जीवन में आनन्द और विश्वास से कहीं अधिक उदासी प्रदर्शित होती है। क्या परमेश्वर पुनः उन भावनाओं से मेरे ह्रदय को भर सकता है ? अपनी उदासी पर विजय पाने के लिये मैं कुछ भी करूंगा।''

फलदायक होने के लिये कुछ चाहिये

''मैं प्रभु से अत्याधिक प्रेम करता हूँ। उसकी कलीसिया में उसकी सेवा करना, मुझे प्रिय है। मुझे उद्धार से विहीन लोगों से यीशु की सहभागिता करने से प्रेम है। परन्तु अन्य लोगों को यीशु के पास लाने में मैं कभी सफल नहीं हो पाता हूँ। मैं अपना सर्वोत्तम प्रयास करता हूँ, फिर भी मेरे सारे प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं। प्रभु के

लिये अपने कार्य में फलदायक होने के लिये क्या कोई बात सहायता कर सकती है ? यीशु के प्रति अन्य लोगों को जीतने के लिये क्या परमेश्वर मुझे सामर्थ दे सकता है ? क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे किसी भी व्यक्ति के लिये किसी भी प्रकार से मेरा जीवन एक आशीष हो सके ?

यह अति सम्भव है कि उपरोक्त कथनों में अभिव्यक्त अनेक समस्याओं से आप अपने को जुड़ा हुआ पायें। आप शायद इन सभी को अपनी समस्याओं के रूप में देख सकते हैं। सम्भवतः आप कह सकते हैं : ''मैं न केवल इन्ही समस्याओं को रखता हूँ परन्तु ऐसी समस्याओं से भी ग्रस्त हूँ जो ऊपर बतायी गयी समस्याओं से भी अधिक बुरी हैं। क्या अभी भी मुझे सहायता मिल सकती है ?''

कुछ प्रदान किया गया है

जी हाँ, आपके लिये सहायता उपलब्ध है !

यीशु मसीह की मृत्यु, दफनाये जाने और पुनरूत्थान के साथ अपनी एकता को समझने और जीने के द्वारा, सोमवार की सुबह की यह सामर्थ जिसे हम पाना चाहते हैं, वह हमारी है।

निम्नलिखित कहानियों को वास्तविक जीवन से लिया गया है (यहां असली नामों का उपयोग नहीं किया गया है) जो उन लोगों के बारे में हैं जिन्होंने यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को जीने के द्वारा पराजय को विजय में बदल दिया है।

क्रोध से सहनशीलता की ओर

जॉन और रूथ अनेक माह पहिले मसीही बने थे और परमेश्वर जो उन्हें बनाना चाहता था वैसा बनने की उनमें बड़ी लालसा थी। प्रभु ने उन्हें अनेक तरीकों से बदला था, लेकिन वे अभी भी क्रोध करने की समस्या से जूझ रहे थे।

एक दिन वे एक अन्य विवाहित जोड़े से मिलने के लिये गये। क्योंकि इन दोनो दम्पत्तियों के पास बच्चे थे, इसलिये उनके मध्य हो रही चर्चा, अपने बच्चों के साथ सहनशील होने पर केन्द्रित थी। वे चारों इस विषय में सहमत थे कि उनके पास यह समस्या

थी परन्तु वे यह नहीं जानते थे कि इस बारे में क्या करें – यद्यपि वे चारों ही विश्वासी थे।

इस बातचीत के 24 घंटो के बाद उनकी कलीसिया का पास्टर उन से मिलने के लिये आया। परमेश्वर के लिये प्रेम और मसीहियों के रूप में वृद्धि करने की उनकी इच्छा के कारण, यह पास्टर उनसे बड़ा प्रभावित था। पास्टर ने उनसे पूछा, क्या उन्होंने यीशु मसीह के साथ उनकी एकता के विषय में नये नियम के सन्देश को कभी सुना था। उन्होंने बताया, कि उन्होंने कभी नहीं सुना था।

पास्टर ने उनसे अपनी इस गवाही की सहभागिता की थी कि कैसे परमेश्वर ने उसे क्रोध और ईर्ष्या जैसी बातों पर, यह प्रगट करने के द्वारा विजय प्रदान की है, कि जब वह एक मसीही बना था तब वह क्रूस पर चढ़ाया गया था, दफनाया गया था और पुनः जी उठा था।

क्रोध के विषय में पास्टर के सन्दर्भ से जॉन और रूथ चकित थे। अभी कुछ घंटे पहिले ही वे अपने क्रोध का समाधान खोज रहे थे। अब समाधान उनके सामने था। यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनः जी उठने में अपनी एकता पर उन्होंने तुरन्त ही विश्वास किया और इसके अनुसार जीवन जीने का चुनाव किया। कुछ घंटो में ही, उन्होंने उस बदलाव को अनुभव करना आरम्भ कर दिया जिसकी वे इच्छा रखते थे।

भय से विश्वास की ओर

ल्यूक सात वर्षो से एक मसीही था परन्तु उसे भय के साथ एक वास्तविक संघर्ष का सामना करना पड़ा था। वह एक आराधना सभा में गया जहां तिमोथी ने, जो यीशु मसीह के साथ एकता का अनुभव कर रहा था, बताया कि कैसे प्रभु उसे बदल रहा था।

अन्य बातों के साथ–साथ, तिमोथी ने यह भी बताया था कि भय ने उसे तब तक निष्क्रीय कर रखा था जब उसने यीशु के साथ

अपनी एकता को जीना आरम्भ नहीं किया था – परन्तु अब परमेश्वर उसे स्वतंत्र कर रहा था। ल्यूक जान गया कि उसे तिमोथी के साथ बात–चीत करनी चाहिये।

आराधना सभा के बाद वह तिमोथी के पास गया और उससे कहा, ''जो तुम्हें मिला है, वही मैं भी पाना चाहता हूँ।'' उन्होंने 15 मिनटों तक बातचीत की और तिमोथी ने ल्यूक को बताया कि जिस दिन उसने उद्धार प्राप्त किया था तभी से वह एक क्रूस पर चढ़ाया गया, दफनाया गया और पुनः जी उठा व्यक्ति था। तीन दिनों के बाद मिलने पर जब तिमोथी ने ल्यूक से पूछा कि उसका क्या अनुभव है, तो ल्यूक का उत्तर था, ''अब सारा भय समाप्त हो गया है।''

कामुकता से शुद्धता की ओर

पीटर के मसीही परिवर्तन का अवसर एक तलाक था। यद्यपि उसके इस मसीही परिवर्तन ने उसे उसकी सभी समस्याओं पर विजय नहीं प्रदान की थी। मसीही बनने से पूर्व, वह कामुकता की एक गम्भीर समस्या से ग्रस्त था। और एक परिपक्व मसीही बनने के बाद भी, पीटर कामुकता की समस्या में निरन्तर फंसा रहा था, जिससे वह बेचैन था क्योंकि वह परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता था।

पीटर को मसीही बने लगभग तीन वर्ष बीत चुके थे जब एक मित्र ने उसे बताया कि जब वह एक मसीही बना था, तो वह क्रूस पर चढ़ाया गया, दफनाया गया, और पुनः जी उठा था। उसके मित्र ने उसे एक पुस्तक भी दी, जो इसी सच्चाई को बताती थी।

जब पीटर ने उस पुस्तिका को पढ़ा, तो पवित्र आत्मा ने उस पर यह प्रगट किया कि अन्य सभी विश्वासियों के साथ वह पहिले ही क्रूस पर चढ़ाया गया है, दफनाया गया है, और पुनः जी उठा था। जैसे–जैसे उसने स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर के प्रति जीवित मानना आरम्भ किया, उसे कामुकता से एक

विकासात्मक स्वतंत्रता का अनुभव होने लगा।

अब पीटर गवाही देता है, ''कि मैं इस विषय में विश्वस्त हूँ कि कोई भी ऐसा मसीही जो यीशु के साथ अपनी एकता को जीता है, वह कामुकता की अपनी समस्या पर विजय प्राप्त कर सकता है।''

कड़वाहट से प्रेम की ओर

जेम्स, परमेश्वर से प्रेम करता था और अन्य किसी बात से अधिक वह अपने जीवन से परमेश्वर की महिमा प्रदान करने की इच्छा रखता था। यद्यपि, जब कुछ घनिष्ट मित्र उसका अनादर करने लगे तब उसने कटु स्वभाव की समस्या को विकसित करने के द्वारा प्रतिक्रिया की थी।

इस कड़वाहट ने उसमें ग्लानि और आत्मिक पराजय की गहरी भावनाओं को भर दिया था, और कुछ भी करके वह इस पर विजय प्राप्त नही कर पाया था।

जब जेम्स ने यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को समझा, तो तुरन्त ही उसने स्वयं को कड़वाहट के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर तथा उसके प्रेम के प्रति जीवित समझना आरम्भ कर दिया। उसकी कड़वाहट की जगह प्रेम इस तरीके से आने लगा जिससे वह आश्चर्यचकित हो गया। उसकी यह विजय विकासात्मक थी और यह एक सच्चाई थी।

ईर्ष्या से दूसरो की चिन्ता करने की ओर

फिलिप जो एक पास्टर है, वह चाहता था कि उसके जीवन के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो सके। जब परमेश्वर ने उसे वैसे प्रभावशाली तरीके से सेवकाई में उपयोग नहीं किया जैसे उसके अन्य मित्रों को किया था तो उसने आनन्दित होने के बजाये स्वयं को दुखी पाया, जिससे वह परेशान था।

फिर फिलिप ने यीशु के साथ अपनी एकता के बारे में सीखा। जिससे उसने परमेश्वर का धन्यवाद करना आरम्भ किया

कि वह ईर्ष्या के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर तथा उसके प्रेम के प्रति जीवित था। परमेश्वर ने धीमे–धीमे उसकी ईर्ष्या की जगह प्रेम को लाना आरम्भ किया। अब वह अपने मित्रों की सेवकाईयों में निष्कपट ढंग से रूचि लेता है और उनकी चिन्ता करता है, तथा तब आनन्द का अनुभव करता है जब वह यह सुनता है कि परमेश्वर उसके साथियों को सेवकाई में उपयोग कर रहा है।

स्वार्थ से उदारता की ओर

थॉमस को बचपन से धन उर्पाजन करना और इसे बचाना सिखाया गया था। उसने भली प्रकार से इस शिक्षा का अनुसरण किया और जो बातें उसने सीखी थीं उन्हें पूरा करने में बड़ा सफल हुआ था।

फिर थॉमस ने परमेश्वर के उद्धार को प्राप्त किया था। अपने मसीही बनने के कुछ वर्षों बाद, उसने यीशु मसीह के साथ मृत्यु, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में अपनी एकता के बारे में सुना था। उसने अपनी इस एकता के अनुसार जीवन जीना आरम्भ किया। परिणामस्वरूप, उसने अपने जीवन में अनेक परिवर्तनों को अनुभव किया था।

इन परिवर्तनों में से एक, उसके लम्बे समय से चले आने वाले लोभ से एक सामर्थी छुटकारा पाना और उदारता की एक उत्तम आत्मा पाना था।

अब थॉमस, प्रभु के काम के लिये बहुत बड़ी मात्रा में धन का निवेश करता है। वह स्वयं को उन लोगों की सहायता करने में भी सम्मिलित करता है जो आर्थिक आवश्यकता में पड़े हैं।

सन्देह से निर्भरता की ओर

डॉरकस ने 13 वर्ष की आयु में यीशु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया था और वह प्रभु के साथ अपनी संगति मे भी पथभ्रष्ट नहीं हुयी थी। वह प्रभु से प्रेम करती थी और उसको आदर देना चाहती थी। फिर भी वह जानती थी कि

परमेश्वर के राज्य में कुछ ऐसे जोखिम हैं जिन्हें उठाने लिये उसके पास उपयुक्त विश्वास नहीं था।

परमेश्वर ने, उसे, यीशु मसीह के साथ उसकी एकता को सिखाने के लिये उसके एक मित्र का उपयोग किया। इससे उसने उन शर्तो के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करना आरम्भ किया। अब वह प्रतिदिन स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर के प्रति जीवित अनुभव करती है जिसका कारण यीशु मसीह के साथ उसकी एकता है।

परिणामस्वरूप, डॉरकस अब अपने आप को उन जोखिमों को उठाने के योग्य पाती है जिन्हें उठाने में पहिले उसे डर लगता था। उसने यह जान लिया है कि परमेश्वर कभी असफल नहीं होता है। अब परमेश्वर उसे जितनी अधिक विजय प्रदान करता है, जोखिम उठाने के लिये वह उतना ही अधिक विश्वास रखती है। उसके जीवन को विजय का एक महिमामय आयाम प्राप्त हो गया है।

उदासी से आनन्द की ओर

मैरी को उदासी इतना अधिक घेरे रहती थी कि उसे अगला दिन आरम्भ करने के विचार से भी घृणा होती थी। उसकी यह अशक्त बना देने वाली उदासी का कारण आत्म ग्लानि, अपनी बड़ी खराब आत्म–छवि, और अन्य लोगों के साथ जुड़ने में कमी की अयोग्यता थी।

एक रात उसने एक कलीसिया की आराधना सभा में भाग लिया जहां पास्टर ने सहभागिता की थी कि एक मसीही के रूप में वह पहिले से एक क्रूसीकृत व्यक्ति थी। इस नये विचार ने, उसे आकर्षित किया था।

उस आराधना सभा के बाद उसने एक क्रूसीकृत व्यक्ति होने के बारे में और अधिक जानने के लिये अपनी रूचि को पास्टर को बताया। उस पास्टर और एक युवा विवाहित जोड़े ने मरियम के

साथ लगभग 30 मिनट व्यतीत किये कि उसे यह आश्वासन दे कि वह मसीही बनने के समय से ही क्रूस पर चढ़ायी गयी थी, दफनायी गयी थी और पुनः जी उठी थी। उन्होंने उसे दर्शाया कि वह कैसे क्रूसीकरण, दफनाये जाने और पुनरूत्थान का अनुभव कर सकती थी।

उसने जो सुना था उसे समझने में परमेश्वर की आत्मा ने उसे योग्य बनाया था, और उसी रात से वह यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को अनुभव करने लगी थी।

अब वह बताती है कि, ''उसमें तत्काल परिवर्तन हुआ था।'' उसका यह अभिप्राय नहीं था कि अब वह सिद्ध बन गयी है, परन्तु उसका आशय था कि बदलाव की प्रक्रिया उसी रात से आरम्भ हो गयी थी। अब वह एक आनन्दित जीवन से परिपूंर्ण युवा महिला है।

मैरी ने आगे बताया कि, ''मैंने स्वयं को सुधारने के प्रत्येक उन तरीकों को उपयोग किया था जिन्हें मैं जानती थी परन्तु मेरी समस्याओं से मुझे स्वतंत्र करने में यह सब असफल रहे थे। यीशु के साथ अपनी एकता और यह जानने के लिये मैं पहिले से क्रूस पर चढ़ायी, दफनायी जा चुकी थी और मुझे पुनः जिलाया गया था, यह सुनने के विषय में मैं तैयार थी।

सुसमाचार प्रचार में असफलता से सफलता की ओर

अपने मसीही बनने के तुरन्त बाद से ही, जोसफ ने लगभग प्रत्येक उस व्यक्ति के साथ सुसमाचार की सहभागिता आरम्भ कर दी थी जिसे वह देखता था – और एक व्यवसायी होने के कारण वह प्रतिदिन बहुत से लोगों से मिला करता था। इससे उसे बड़ी परेशानी हुयी जब उसने देखा कि यीशु को ग्रहण करने के उसके आमंत्रण को एक भी व्यक्ति ने स्वीकार नहीं किया था।

'यीशु के साथ अपनी एकता' को सीखने पर उसने पाया, कि अब यीशु मसीह उसके द्वारा गवाही देगा। तुरन्त ही उसने उसकी मृत्यु, दफनाये जाने और पुनः जी उठने पर विश्वास करना

आरम्भ कर दिया। इससे प्रभु ने उसके द्वारा गवाही देनी आरम्भ की थी। अब जोसफ अनेक लोगों को यीशु मसीह के पास आते हुये देखता है।

यह साक्षियां विशिष्ट रूप से उन लोगों की हैं, जो प्रभु से प्रेम करते हैं, यीशु के साथ अपनी एकता की समझ प्राप्त करते हैं, और उस एकता को जीना आरम्भ कर देते हैं। यहां जीवन के अन्य क्षेत्रों में विजय को बताने के लिये और भी गवाहियों की सहभागिता की जायेगी।

यह सम्भव है, कि आपकी सबसे बड़ी आत्मिक समस्याओं को यहां सम्बोधित नहीं किया गया हो। आपके लिये भी उत्तर वही है, जो उन लोगों के लिये था जिन्होंने अपनी गवाहियों की सहभागिता की है। जब आपने यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया था तब आप उसकी मृत्यु, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में सम्मिलित हो गये थे, यह, उसे ही समझना और उसके अनुसार जीवन जीना है।

आगे के पृष्ठों के एक प्रार्थनापूर्वक अध्ययन के परिणामस्वरूप जहां आप नये प्रकाशनों के प्रति प्रतिक्रिया करने के इच्छुक होते हैं, वहीं आप यीशु मसीह के साथ एक ऐसा सम्बन्ध रखते हैं, जो आपके जीवन में सप्ताह के प्रत्येक दिन, अत्यन्त महत्वपूंर्ण बात है।

भाग दो

पवित्र शास्त्र के अनुसार शिक्षाऐं

''मैं जानता हूँ कि यीशु मुझसे प्रेम करता है क्योंकि बाइबिल मुझे यह बताती है।''

हम यह मानते हैं कि यीशु हम से प्रेम करता है क्योंकि बाइबिल हमें बताती है कि वह ऐसा करता है– चाहे हम प्रेम किया जाना अनुभव करते हों अथवा नहीं करते हों। आत्मिक विषयों में एकमात्र बाइबिल हमारा अधिकार है, और इसके परिणामस्वरूप, हम एक विषय के बारे में अपने स्वयं के विचारों और भावनाओं से अधिक बाइबिल की शिक्षाओं को स्वीकार करते हैं।

पवित्र शास्त्रों में विश्वास की इस विशेषता के साथ, भाग दो – यीशु के साथ हमारी एकता की बाइबिल के अनुसार आधारभूत सच्चाईयों को समझाता है। यह सम्भव है, कि सम्भवतः यह सच्चाईयां आपके लिये नयी हों। तब भी यह वे सच्चाईयां हैं जिन्हें समझना हमारे लिये आवश्यक है, यदि हम उस उच्च कोटि के जीवन को चाहते हैं जिसे प्रभु ने सम्भव बनाया है।

कुछ लोगों ने यह कहा है कि हमें यीशु के साथ एकता के नये नियम के सन्देश को समझने के पहिले, अवश्य ही एक परिपक्व मसीही होना चाहिये। यह सत्य नहीं है। सच यह है कि कुछ सच्चाईयों को समझने के लिये हमें पवित्र आत्मा के बुद्धि प्रकाशन को पाना आवश्यक है। परन्तु उस ज्ञानोदय से, एक बच्चा भी इन सच्चाईयों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

विश्वास द्वारा, अपने हृदय को प्रभु के प्रति केवल खोलिये

और उससे कहिये, कि आप उस पर विश्वास कर रहे हैं कि यीशु मसीह के साथ आपकी एकता की बाइबिल के अनुसार शिक्षाओं को आपको समझाये।

आप देखेंगे कि इस पूरे अध्याय में बाइबिल के केवल कुछ ही गद्यांशों का सन्दर्भ दिया गया है। यद्यपि जिन लोगों ने यीशु के साथ अपनी एकता को समझा और अनुभव किया है, उन्होंने कुछ इस प्रकार गवाही दी है, ''अब मैं बाइबिल में जहां भी पढ़ता हूँ, वहां मुझे यह दिखायी देता है।''

अध्याय 2

यीशु ''अन्तिम आदम है''

मनुष्य जाति के प्रति हमारे प्रभु यीशु की सेवकाई में महानता का एक संकेत, उसकी वे पदवियां हैं जिनके द्वारा पवित्रशास्त्र उसे प्रगट करते हैं। इनमें से कुछ उपाधियां हैं : ''मार्ग'', ''सत्य,'' ''जीवन'', ''जीवन की रोटी'', ''संसार की ज्योति'' और ''परमेश्वर का मेमना।''

1कुरिन्थियों 15:45 में पौलुस ने प्रभु यीशु को, ''अन्तिम आदम'' बताया है, जो बड़ा महत्वपूर्ण है। परन्तु यह दुखद है कि सुसमाचार प्रचार करने वाले मसीहियों ने इस महत्वपूर्ण सच्चाई को अधिकतर अनछुआ और अनदेखा किया है। सच तो यह है, कि यदि हम, ''अन्तिम आदम'' के रूप में यीशु का अनुभव नहीं करते हैं तो हम उसके साथ हमारी एकता को पूर्ण रूप से नहीं समझेंगे।

यह इस पुस्तक का सबसे छोटा अध्याय होते हुये भी इस पूरी पुस्तक में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण अध्याय है। इसे ध्यानपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक पढ़ना लाभदायक होगा।

जब हम इस अध्याय की सच्चाईयों को समझ लेते हैं तो यीशु के साथ उसकी मृत्यु, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में हमारी समझ और अनुभव के लिये हमें एक आवश्यक आधार प्राप्त होता है।

प्रथम आदम में प्रभु यीशु का चित्र प्रस्तुत किया गया था

रोमियों 5:14, आदम को ''मसीह के प्रतीक'' के रूप में वर्णित करता है। एक प्रतीक, एक समानता है। आदम, इसलिये, यीशु के समान है। आदम इतना अधिक यीशु के समान है जिससे

कि यीशु को ''अन्तिम आदम'' कहा गया है।

हममें से अनेक लोगों ने वर्षों से आदम और यीशु के मध्य महान भिन्नताओं को समझा है। आदम संसार में पाप और मृत्यु लाया था; वहीं यीशु संसार में धार्मिकता और जीवन लाया था। तब आदम और यीशु किस प्रकार से एक समान है ? इसका उत्तर हैः कि इनमे से प्रत्येक एक वंश का प्रधान है।

आदम प्राकृतिक वंश का प्रधान है। यीशु आत्मिक वंश का प्रधान है।

निम्नलिखित परिचर्चा यह प्रगट करती है कि प्राकृतिक वंश के प्रधान ने कैसे उन सबको प्रभावित किया था जो उसके वंश में उत्पन्न हुये हैं। एक व्यक्ति आदम ने उन सब पर प्रभाव डाला है जो उसके वंश में उत्पन्न हुये हैं, यह सच्चाई, यीशु और उसके उस प्रभाव जो उन सब पर डाला है जो उसके वंश में प्रवेश करते हैं को चित्रित करती है। यहां हम आदम के विषय में जो पढ़ते हैं वह महत्वपूर्ण है, परन्तु आदम का प्रधान होना यीशु के बारे में जो प्रगट करता है, वह और भी महत्वपूर्ण है।

आदम से हमने अपने प्रकार की देह प्राप्त की थी

पहिला कुरिन्थियों 15 जहां यीशु को ''अन्तिम आदम'' बताया गया है, यह भी कहता है, ''और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था, धारण किया वैसे ही उस स्वर्गिक की समानता भी धारण करेंगे'' (पद 49)।

यह पद पुनरूत्थान के विषय में है और सिखाता है कि जब पुनरूत्थान प्राप्त प्रभु यीशु लौटता है तब हम उसी के समान देहों को प्राप्त करेंगे। इस गद्यांश के जिस भाग पर हमें ध्यान देना है वह यह कि हमारे पास अभी उस प्रकार की देह है जो परमेश्वर ने सृष्टि में आदम को प्रदान की थी। जैसे कि वे सब जिनका सामान्य रूप से जन्म होता है, वे दो आँखे, दो कान, दस उंगलियां, और दस पैर की उंगलियां रखते हैं। ऐसा इसलिये है क्योंकि जब परमेश्वर ने

आदम को रचा था तब उसने उसे दो आँखों, दो कानों, दस उंगलियों और दस पैर की उंगलियों के साथ बनाया था।

आदम से हमने अपने प्रकार की पाप की समस्या प्राप्त की थी

दूसरी बात जो आदम के मानव जाति के प्रधान होने के परिणामस्वरूप हुयी थी उसे रोमियों 5:12 में दिखाया गया है। यहां पौलुस लिखता है, ''.....एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया. .....।'' इसी अध्याय में पौलुस यह भी बताता है, ''.....एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे.....'' (पद 19)।

यह आवश्यक है कि हम इस पाप की समस्या के स्वभाव को समझें, परन्तु यहां हमारा उद्देश्य केवल यही दर्शाना है कि जब आदम ने अनुचित पेड़ से फल खाया था, तो उसने न केवल अपने लिये पाप की समस्या उत्पन्न की थी परन्तु उसने इसे अपने वंश में आगे जन्मे प्रत्येक व्यक्ति को भी स्थानान्तरित कर दिया था – जहां एकमात्र यीशु ही इसका अपवाद है।

आदम से हमने अपनी प्रकार की मृत्यु की समस्या प्राप्त की थी

रोमियों 5:12–14 दर्शाता है कि आदम के कारण हम सबके पास मृत्यु की भी एक समस्या है। एक व्यक्ति–आदम के कारण हम सबकी नियति मृत्यु है।

जब आदम ने अनुचित पेड़ से फल खाया, तब परमेश्वर ने उसे और हव्वा को अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया था जिससे कि वे जीवन के पेड़ से फल खाकर हमेशा के लिये इस पृथ्वी पर जीवित नहीं रह पायें। आदम और हव्वा पर इस दण्ड के बाद, सारी मानव जाति, पर शारीरिक मृत्यु का एक दण्ड आया। यदि यीशु अगले 150 वर्षों में नहीं लौटता है तो हमारे परिचित प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु हो जायेगी।

ऐसा इसलिये है क्योंकि हम आदम के वंशज हैं। जब हम

आदम के वंश में उत्पन्न हुये थे, तब हम अपनी देहों में पाप के बीजों के साथ जन्मे हैं।

आदम और उसके वंश के इस अध्ययन से हमने निम्नलिखित सत्य को स्थापित किया है : जब हम आदम के वंश में जन्मे थे, तो आदम के साथ जो कुछ भी सत्य है वही हमारे साथ भी सत्य है।

क्योंकि यीशु ''अन्तिम आदम'' है और इसलिये वह प्रथम आदम में चित्रित हुआ है, इससे हमने एक और भी अधिक महत्वपूर्ण सत्य स्थापित किया है और वह यह है कि : जब हमने यीशु के वंश में प्रवेश किया तो उसके प्रति जो बातें सत्य हैं वे हमारे प्रति भी सत्य हो जाती हैं।

जब हम यीशु के ''अन्तिम आदम'' होने की अवधारणा को समझ गये हैं तो हम अब तैयार हैं कि यह समझें कि वे क्या बातें हैं जो हमारे लिये तब सत्य हुयी हैं जब हमने उसके वंश में प्रवेश किया था।

यीशु एक अद्‌भुत मीरास को प्रदान करता है

नये नियम के अनेक गद्यांश उन बातों को बताते हैं जो तब हमारे लिये सत्य होती हैं जब हम यीशु के वंश में प्रवेश करते हैं, परन्तु इन्हें रोमियों 6:3–5 में बड़ी स्पष्टतापूर्वक बताया गया है :

> ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।''

जब हमने यीशु के वंश में प्रवेश किया था तो हम क्रूस पर चढ़ाये गये थे, दफनाये गये थे और पुनः जी उठे थे।

आगे के अध्याय, हमें हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान अभिप्राय को तथा उन्हें अनुभव करने के द्वारा, यीशु ने सभी विश्वासियों को एक बहुतायत की मीरास प्रदान की है, इन दोनो बातों को सिखायेंगे।

महत्वपूर्ण सत्य के इस अध्याय की समीक्षा निम्नलिखित कथन में की जा सकती है। इन्हें याद कर लेना, अधिक सहायक होगा।

आदम प्राकृतिक वंश का प्रधान है। इसलिये, जब हमने आदम के वंश में प्रवेश किया था, जो बातें उसके प्रति सत्य की थी वे हमारे प्रति भी सत्य हो गयी थीं।

यीशु आत्मिक वंश का प्रधान है। इसलिये, जब हमने यीशु के वंश में प्रवेश किया था तो जो बातें उसके प्रति सत्य थीं वे ही हमारे प्रति भी सत्य हो गयीं थीं।

इन संक्षिप्त कथनों को यदि हम याद कर लें, तो यीशु के साथ हमारी एकता की सच्चाई को समझने और दूसरों को सिखाने दोनों में यह अत्यन्त सहायक होगा।

प्रथम आदम और जब उसने वर्जित पेड़ के फल को खाया तो उसने हममें से प्रत्येक को किस प्रकार का पापी बनाया था, इस परिचर्चा को अध्याय–तीन जारी रखता है। हम विश्वासी क्योंकि पहिले से क्रूस पर चढ़ाये जा चुके हैं, दफनाये जा चुके हैं और पुनः जीवित हुये हैं अतः हमारे पास जो सब है, उस सब की एक व्याख्या के साथ अध्याय–चार आरम्भ होता है।

अध्याय 3

पाप को समझना

''मुझे पहिले से ज्ञात था कि मेरे पास पाप की समस्या थी और मैंने इसे सामान्य शब्दावलियों जैसे ''अंहकार'' और ''अहम'' आदि से परिभाषित होते सुना था। परन्तु अब मैं इसे और अधिक स्पष्टतापूर्वक समझता हूँ।''

वक्ता ने अभी जल्द ही अपने पापपूंर्ण स्वभाव की समस्या को सुना और समझा था – जिस पर इस अध्याय में परिचर्चा की गयी है। इस नयी परिभाषा से वक्ता ने जो ज्ञान प्राप्त किया था, उसके कारण ही वह अपने द्वारा अनुभव किये जाने वाले पाप पर गवाही के देने के समय विजय प्राप्त कर पाया था।

यदि हम बहुतायत का जीवन अनुभव करना चाहते हैं, तो हमें अपनी पाप की समस्या को सही ढंग से पहिचान कर और समझ कर यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में अपनी एकता को अवश्य ही अनुभव करना है। इस अध्याय को इसी पहिचान और समझ को प्रदान करने के लिये लिखा गया है।

हमारे पाप की समस्या की पहिचान

हमारी आत्मिक असफलताऐं कष्टदायक और बहुधा निराश कर देने वाली होती हैं। उनसे हमने यह जाना है कि हम इस संसार में पाप के एक स्वभाव के साथ आये थे – और यह अभी भी

हममें विद्यमान है।

जब तक हम पाप की समस्या को स्वीकारते, पहिचानते और समझते नहीं हैं, तब तक हम अपने बाकी के जीवन में केवल विशिष्ट पापों का समाधान करते रहते हैं और कभी भी उनके स्रोत को सम्बोधित नहीं करते हैं।

हमारी पाप की समस्या को बताने के लिये, नया नियम तीन शब्दावलियों का उपयोग करता है : ''पाप'', ''पुराना मनुष्यत्व'' और ''शरीर''। पुराना नियम, उत्पत्ति के दूसरे और तीसरे अध्यायों में एक चौथी शब्दावली का भी उपयोग करता है, ''भले और बुरे का ज्ञान''।

हम उत्पत्ति की पुस्तक में गद्यांशों के एक अध्ययन के साथ एक परिभाषा पाने के लिये अपनी खोज आरम्भ करते हैं, जो हमारे पापी स्वभाव को, भले और बुरे के ज्ञान के रूप में बताती है। इन अनेक गद्यांशों में उत्पत्ति 2:9 एक है : ''और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिनके फल खाने में अच्छे हैं उगाए, और बाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया।''

यह पद बिना किसी सन्देह के यह दर्शाते हैं कि यह ''भले और बुरे का ज्ञान'' था, जिससे, आदम ने स्वयं को – और हमें दूषित किया था।

यहां विशेष रूप से इस कारण पर ध्यान दें जिससे आदम और हव्वा को वाटिका से निकाला गया था। ''भले और बुरे को जानने'' में वे अब परमेश्वर के समान थे (उत्पत्ति 3:22)।

आदम के लिये भले और बुरे के ज्ञान से दूषित होना क्या अभिप्राय रखता था ? हमारे लिये भले और बुरे के ज्ञान से दूषित होना क्या अभिप्राय रखता है?

इसके उत्तर का कुछ भाग हमें ''भले'' और ''बुरे'' शब्दों के एक अध्ययन में मिलता है। जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद ''भला''

हुआ है, वह वही शब्द है जिसका उत्पत्ति के पहिले अध्याय में अनुवाद ''भला'' किया गया है, जहां यह, ज्योति और घास जैसी बातों को बताता है। इसलिये ''भला'' शब्द केवल उस बात के सन्दर्भ में नही है जो नैतिक रूप से अच्छी हैं। यह उसका सन्दर्भ देता है जो किसी के लाभ के लिये है – चाहे यह नैतिक रूप से भली हो अथवा न हो।

जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद ''बुरा'' किया गया है, वह वही शब्द है जो भजन 23:4 में आया है – ''मैं किसी हानि से नहीं डरूंगा।'' यह उसका सन्दर्भ देता है जो हानि की बात है – चाहे यह अनैतिक बात हो अथवा नहीं हो।

अतः इसलिये आदम ने पाप की जिस समस्या से हमें तब दूषित किया था जब उसने वर्जित फल को खाया था, ''वह उस बात का ज्ञान है जो हमारे लाभ अथवा हानि की है।''

इससे पहिले कि इसका क्या अभिप्राय है इस बारे में आप किसी अक्स्मात और शायद गलत निष्कर्ष पर पहुंचे, पहिले इस पर विचार करें : क्या आपने कभी यह अनुभव किया है कि एक बात जो पहिले एक आशीष नहीं लगती थी वह आगे एक आशीष बन जाती है ? अथवा किसी बात को जो आरम्भ में बुरी दिखती थी उसे आप बाद में भली कहने लगते हैं? दूसरे शब्दों में, आपने इसे एक हानि की बात सोचा था परन्तु यह एक लाभ की बात साबित होती है।

परमेश्वर सम्भवतः अनुभव को ''भला'' कह रहा है, जबकि उस समय हम इसे ''बुरा'' कह रहे हैं। अतः हमारे अपने अनुभव यह प्रमाणित करते हैं कि हम यह जानने में कि क्या लाभ का है अथवा क्या हानि का है, हम परमेश्वर के समतुल्य नहीं है। तब, भले और बुरे का ज्ञान क्या है?

इसका उत्तर रोमियों की पत्री के पहिले अध्याय में मिलता है। पद 18–20, मनुष्य द्वारा परमेश्वर को नकारने की भयानक कहानी को और इसके बाद बढ़ती हुये नैतिक और आत्मिक अवनति

का वर्णन करते हैं। इस पूर्णतया किये गये नकारने और इसके परिणामस्वरूप हुयी अवनति के लिये दिया गया एक कारण है कि उन्होंने ''बुद्धिमान होने का दावा किया था परन्तु वे मूर्ख बन गये थे'' (रोमियों 1:22)।

भले और बुरे के हमारे विनाशकारी ज्ञान को पौलुस हमारी एक ऐसी मान्यता बताता है कि हम मानते हैं कि हम भले हैं। इस पुस्तक में हम बहुधा इस बारे में बात करेंगे कि यह विनाशकारी मान्यता हमें कैसे प्रभावित करती है। यदि हम इसके साथ उचित ढंग से व्यवहार नहीं करते हैं तो यह हम पर एक भयानक निरंकुश शासक की तरंह अधिकार रखेगी। अतः यह वाक्यांश, ''भले और बुरे का ज्ञान'' (अथवा एक आत्म–पर्याप्तत्ता, अहंकारपूंर्ण सोच) हमारे घातक पापी स्वभाव का एक सन्दर्भ है।

बहुधा हमने इस मनोवृति को अन्य लोगों में ढूंढ लिया है। यह कुछ में इस प्रकार से सुनिश्चित होती है मानो वे एक चमकदार लाल वस्त्र पहिने हों। अन्य लोगों में यह तत्काल रूप से इतनी निश्चित नहीं है। परन्तु यह हम सब में पायी जाती है। आदम ने इससे स्वंय को – और हम सब को – दूषित किया था।

आदम के वंश में होने के कारण जैसे हमारे पास दो आंखें और दस उंगलियां हैं, ठीक वैसे ही हमारे पास यह सोचने की मनोवृति है कि हम सब कुछ जानते हैं।

हमारे पाप की समस्या का अहंकार

सर्तक रहें ! हमारी यह मनोवृति कि हम बुद्धिमान हैं, चुपचाप काम नहीं करती है और केवल उसी व्यक्ति–विशेष के लिये नहीं होती है जिसमें यह पायी जाती है। यह हर जगह है। यह सीमाओं को नहीं जानती है। यह सारी दिशाओं में सक्रिय रहती है चाहे यह समान्तर हो या उर्ध्वाधर दिशा हो। यह दोष लगाती रहती है और किसी के भी और सभी के लिये निर्णय करती है – चाहे यह प्रभु परमेश्वर क्यों न हो।

जैसे कि, प्रभु की कलीसियाओं में से एक में संगति की एक गहरी समस्या विकसित हुयी है क्योंकि उसके एक या एक से अधिक सदस्यों ने इस बात पर बल दिया था कि उनका दृष्टिकोण सही था। प्रत्येक व्यक्ति ने जो प्रभु के कार्य में चाहे कुछ वर्षो से ही सम्मिलित क्यों नहीं हो, विश्वासियों के द्वारा उत्पन्न किये गये दुख और समस्याओं को अधिकतर अनुभव किया है क्योंकि वे सोचते हैं कि वे सब कुछ जानते हैं और इस विषय में अहंकार से भरे हुये हैं।

पाप की हमारी समस्या की सुनिश्चितत्ता

हमारे विचारों की समस्या के रूप में पाप की हमारी समस्या की व्याख्या को पवित्रशास्त्र के अन्य सन्दर्भ भी सुनिश्चित करते हैं। इफिसियों 4:17 में, पौलुस, अविश्वासियों को ''अपने मन की अनर्थ रीति'' पर चलते हुये बताता है। लोकप्रिय पद रोमियों 12:2 कहता है कि हम सब ''बुद्धि के नये हो जाने से'' बदलते जायेंगे। पुराने नियम का एक महत्वपूर्ण पद नीतिवचन 23:7 कहता है, ''क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा ही आप है।'' और ''मन फिराना'' (पश्चात्ताप) शब्द दो यूनानी शब्द से निकला है जिसका अर्थ ''मन को बदलना'' है।

पाप की हमारी समस्या के विषय में नये नियम की अभिव्यक्तियां

जैसा कि हम पहिले देख चुके हैं, पाप की हमारी समस्या को बताने के लिये नये नियम की तीन शब्दावलियां हैं। आवश्यक है कि हम उन्हें समझें और परिभाषित करें। यह शब्द पाप, पुराना मनुष्यत्व और शरीर है। जब ''पाप'' शब्द नये नियम में हमारे पापी स्वभाव के सन्दर्भ में उपयोग किया जाता है तो हमें उसे भले और बुरे के ज्ञान के रूप में समझना चाहिये।

''पुराना मनुष्यत्व'' शब्दावली एक वह सन्दर्भ है जो बताता है कि आदम के वंश में जन्म लेने के कारण हम किस प्रकार के

व्यक्ति हैं। हमारा पुराना मनुष्यत्व हमारी उस सोच का फल है कि हम बुद्धिमान हैं और सब कुछ जानते हैं।

पाप की हमारी समस्या के सन्दर्भ में जो एक अन्य शब्दावली उपयोग की गयी है वह ''शरीर'' है। कुछ लोग ''शरीर'' और ''पुराने मनुष्यत्व'' को बिल्कुल एक सा अभिप्राय प्रदान करते हैं। यह उचित प्रस्ताव नहीं है क्योंकि रोमि. 6:6 बताता है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है, जबकि गलतियों 5:24 कहता है, कि शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषा समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। अतः हमें यह अवश्य समझना है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व हमारी लालसाओं और अभिलाषाओं के साथ हमारा शरीर है। यद्यपि शरीर और पुराने मनुष्यत्व का यथार्थ में एक ही अर्थ नहीं है, परन्तु शरीर, पुराने मनुष्यत्व का मुख्य लक्षण है।

तब हमारा शरीर क्या है ? हमारा शरीर, हमारा स्वभाव है कि हम सोचते हैं कि हमें सब कुछ मालूम है, जो आत्म–विश्वास का सबसे गहरा रूप है। जब हम ''शरीर में'' होकर जीवन जीते हैं तो हम स्वयं पर भरोसा करते हैं। यह सच है कि नये नियम में शब्द ''शरीर'' का जब उपयोग किया गया है तब सदैव उसका आशय हमारी अपनी बुद्धि में विश्वास पर आधारित आत्म विश्वास नहीं होता है। परन्तु आत्म विश्वास का हमारा अत्यन्त आधारभूत रूप, भले और बुरे का हमारा ज्ञान है – हमारा यह स्वभाव, कि हम सब कुछ जानते हैं। इस रूप में, शरीर तथा भले और बुरे का हमारे ज्ञान का, एक ही अभिप्राय है।

पौलुस रोमियों 8:3 में आत्म–विश्वास के रूप में शरीर की परिभाषा को और अधिक स्पष्ट करता है : ''जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल हो कर न कर सकी.....।'' इस घोषणा के अनुसार, व्यवस्था, परमेश्वर के नियमों और मनुष्य के शरीर के मध्य एक इन्तजाम है। तीन अवसरों पर निर्गमन 19:8; 24:3 और 24:7 – जब व्यवस्था का इन्तजाम किया जा रहा था तब इस्राएलियों ने कहा था कि परमेश्वर ने जो कहा था, वे वह सब करेंगे। इससे बढ़कर

आत्म–विश्वास का अन्य और कोई रूप नहीं हो सकता है। यह उनका शरीर बोल रहा था।

परन्तु ''शरीर'' शब्दावली का उपयोग क्यों हुआ है?

उत्पत्ति 3:7 यह बताता है कि आदम और हव्वा के द्वारा वर्जित फल खाने का तत्कालिक प्रभाव यह था कि ''उन दोनों की आँखें खुल गयीं और उनको मालूम हुआ कि वे नग्न थे।'' यह कितना अद्‌भुत कथन है ! इसका यह अर्थ नहीं हो सकता है कि वे पहिले अन्धे थे, क्योंकि पद 6 यह स्पष्ट करता है कि वे देख सकते थे।

इससे भी अधिक यह हुआ कि उन्होंने अपनी नग्नता को अनुभव किया था, ''सो उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़–जोड़ कर लंगोट बना लिये'' (पद 7)।

वर्जित फल को खाने से पहिले आदम और हव्वा की नग्नता उनके लिये एक समस्या नहीं थी। इसके साथ ही, यदि उनकी नग्नता परमेश्वर के लिये एक समस्या रही होती तो वोह उनकी आवश्यकता के समय उन्हें वस्त्र अवश्य पहिनाता।

आदम और हव्वा अचानक अपनी देहों पर अत्यन्त केन्द्रित हुये, और सारे प्रमाण यह इंगित करते हैं कि इसका कारण उनके जीवनों में भले और बुरे के ज्ञान का प्रवेश है।

इसका पर्याप्त प्रमाण है, कि सभी जगहों पर सभी लोगों में यह देह पर केन्द्रित होना परिलक्षित होता है। जब आपने यहां आने से पहिले अन्तिम प्रार्थना सभा में भाग लिया था तब प्रार्थना निवेदनों का प्राथमिक विषय क्या था? इन प्रश्नों के उत्तर सुस्पष्ट है। हम अपनी देहों पर केन्द्रित करते हैं। परन्तु यह हमारे लिये और हमारे आस–पास के लोगों के लिये क्यों सच है?

क्योंकि हमारे पास पांच इन्द्रियां और मस्तिष्क की सामर्थ है, हम निष्कर्षो पर पहुंचने और चयन करने की योग्यता रखते हैं। यह योग्यताऐं हमें बुद्धिमान दर्शाती हैं।

एक बार जब हम अपनी सोच के स्वभाव में जानते हैं कि

सब कुछ अपने निष्कर्षो पर पहुंच चुका है और हमने अपने चुनाव कर लिये हैं, तब हम स्वयं के विषय में इतना गर्व करने लगते हैं कि हम दूसरों को अपने इस महान ज्ञान को बताना चाहते हैं। और यह करने के लिये हमें हमारे शरीर की आवश्यकता होती है।

तब इससे हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि नया नियम हमारे पापी स्वभाव का सन्दर्भ शरीर के रूप में देता है क्योंकि शरीर आत्म–विश्वास है और इसका अत्यन्त आधारभूत लक्षण हमारी यह मनोवृति है कि हम बुद्धिमान है, जिसे अवश्य ही देह के द्वारा कार्य करना चाहिये।

इन प्रत्येक शब्दावलियों – ''पुराना मनुष्यत्व'', ''पाप'', ''शरीर'' और ''भले और बुरे का ज्ञान'' – के द्वारा जो सामान्य बात सक्रिये होती है वह इस सोच का एक स्वभाव है कि हम सब कुछ जानते हैं। बहुधा यह एक चेतन बात नहीं है यद्यपि यह हम सब में उपस्थित है।

यह विषय नहीं है कि हम अपनी आत्मिक बिमारी को ''भले और बुरे के ज्ञान'', अथवा ''पाप'', अथवा ''हमारे पुराने मनुष्यत्व'' या ''शरीर'' के रूप में समझते हैं, यहां समस्या यह है कि इसे हमारे प्राकृतिक पिता आदम के द्वारा उत्पन्न किया गया है – जब उसने अपनी पत्नी हव्वा की सहायता से अनुचित वृक्ष के फल को खाया था।

जब आदम ने हमें दूषित किया था तब हम वहां नहीं थे। जब उसने स्वयं को दूषित किया था तभी हमें संक्रमित कर दिया था क्योंकि वह प्राकृतिक वंश का प्रधान है। पाप का स्वभाव हम पर गृभधारण–जन्म देने की प्रक्रिया के द्वारा स्थान्तरित हुआ था।

इस अध्याय को समाप्त करने के पहिले, यहां यह कहना आवश्यक है कि परमेश्वर की सन्तानों के अपने पाप की समस्या के सच्चे स्वभाव को इस मनोवृति के रूप में कि वे बुद्धिमान हैं और सबकुछ जानते हैं, समझने की आवश्यकता को अधिक आंकना असम्भव होगा।

वे लोग जो दूसरों को सिखाते हैं कि परमेश्वर के साथ कैसे चलना है, हमें उन्हें यह सूचित करने में विश्वासयोग्य होना चाहिये कि वे पाप की ऐसा समस्या का समाधान कर रहे हैं जो इस एक स्वभाव से कुछ कम नहीं है कि हम मानते हैं कि हम सब पूरी तरह से बुद्धिमान हैं।

अध्याय 4

अब हम यीशु में क्रूस पर चढ़ाये हुये हैं

हममें से कुछ अपने साथी विश्वासियों को यह बताने के दोषी हैं कि उन्हें ''स्वयं को क्रूस पर चढ़ाना है।'' एक मसीही के द्वारा स्वयं को क्रूस पर चढ़ाने का कोई भी प्रयास – एक असम्भव बात को करने का प्रयास है। यह वह करने का एक प्रयास है जो पहिले ही किया जा चुका है।

अध्याय दो इस सच्चाई को बताता है कि जब हमने यीशु के वंश में प्रवेश किया था, तो हम क्रूस पर चढ़ाये गये थे, दफनाये गये थे और पुनः जी उठे थे। यह इसलिये है, क्योंकि हमारा प्रभु यीशु ''अन्तिम आदम'' – आत्मिक वंश के प्रधान के रूप में क्रूस पर चढ़ाया गया था।

जबकि यह सत्य है कि हमने एक आत्मिक जन्म के द्वारा यीशु के वंश में प्रवेश किया था, तो पौलुस प्रेरित रोमियों 6:3 में यीशु के वंश में हमारे प्रवेश को ''बपतिस्मा पाने'' के रूप में बताता है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया था, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया था?''

यहां पौलुस पानी के बपतिस्मे का सन्दर्भ नहीं दे रहा है, परन्तु वह पवित्र आत्मा के कार्य का सन्दर्भ दे रहा है। वह लिखता है :

> ''क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह

भी है। क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या युनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्रा एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया'' (1कुरिन्थियों 12:12–13)।

पानी से बपतिस्में की सारी घटना–नीचे पानी में जाना और पानी से निकलना–यीशु की मृत्यु, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में हमारे रखे जाने का एक सुन्दर चित्र है।

इस अध्याय और अगले अध्याय में, हम हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान के अभिप्राय और महत्व को ढूंढेंगे। यहां विशेष ध्यान हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने पर है।

हमारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया है

नया नियम हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने के बारे में चार भिन्न–भिन्न बातें बताता है। उनमें से एक यह है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया है। रोमियों 6:6 में पौलुस लिखता है, ''क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था।''

तीसरे अध्याय में, हमने अपने ''पुराने मनुष्यत्व'' को हमारी इस सोच की मनोवृति के रूप में परिभाषित किया था कि हम सब कुछ और साथ ही जो इस मनोवृति ने हममें उत्पन्न किया है, उसे जानते हैं। अथवा गलातियों 5:24 जिस प्रकार इसे बताता है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व अपनी लालसाओं और अभिलाषाओं के साथ हमारा शरीर है। इसे एक अन्य तरीके से भी बताया गया था कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उस प्रकार का व्यक्ति है जो हम प्रथम आदम के वंश में हमारे जन्म के परिणामस्वरूप बने थे।

कुछ ही मिनटों में, हम पुराने मनुष्यत्व की अपनी समझ में अत्याधिक वृद्धि करने के योग्य होंगे।

इस दृश्य की कल्पना करें। आप और आपका एक मित्र अपने कई मित्रों की उपस्थिति में एक परिचर्चा कर रहे हैं। आप

दोनों (अपने मनों में) यह मानते हैं कि आप परमेश्वर से अधिक बुद्धिमान हैं। समय के साथ ही, यह परिचर्चा एक वाद–विवाद में बदल जाती है।

आपको देखने वाले सारे मित्रों ने यदि अचानक ही यह कहा कि आप गलत हैं और आपका विरोधी सही है तो आपके आन्तरिक विचार और भावनाऐं कैसे होंगी? क्रोध? अहंकार? द्वेष? प्रतिस्पर्धा की आत्मा? उदासी? ईर्ष्या? भय? लालच? घृणा? संभ्रति? बदला लेने की इच्छा? विरक्ति? आत्म–दया?

अनेक लोगों ने कहा है कि इन परिस्थितियों में उनके यही विचार और भावनाऐं होंगी।

इसके साथ ही आपके विरोधी के आन्तरिक विचार और भावनाऐं क्या होंगी? अहंकार? निरादर?

कल्पना करने का यह अभ्यास हमें हमारे पुराने मनुष्यत्व के एक और अधिक पूंर्ण जानकारी प्रदान करता है। यह आपकी इस सोच का स्वभाव कि आप इसे तथा बतायी गयी सभी बातों को– और अधिक बातों को जानते हैं।

क्योंकि हमारा ''पुराना मनुष्यत्व ''अपनी लालसाओं और अभिलाषाओं के साथ हमारा शरीर है, इसलिये आइये, हम गलत रूप से यह नहीं सोचें कि हमारा पुराना मनुष्यत्व ही क्रूस पर चढ़ाया गया है परन्तु शरीर नहीं चढ़ाया गया है।

इसके साथ ही हमें यह भी जानना है कि हमारे पुराने मनुष्यत्व का अपनी लालसाओं और अभिलाषाओं के साथ शरीर का – क्रूस पर चढ़ाया जाने का अभिप्राय हमारे पुराने मनुष्यत्व का पूरी तरह से नाश हो जाना नहीं है। यदि यह सच होता, तो हम मसीहियों के पास अब वह पाप की समस्या नहीं होनी चाहिये जिसका समाधान हमें पाना है। इसके साथ–साथ, मसीही माता–पिता अपनी सन्तानों के प्रति पाप की एक समस्या को स्थानन्तरित भी नहीं करेंगे।

फिर भी, यद्यपि हमारे क्रूस पर चढ़ाया जाने का यह अभिप्राय नहीं है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व पूरी तरह से नाश हो जाता है, परन्तु इसका अभिप्राय है कि पुराने मनुष्यत्व को शक्तिहीन किया जा सकता है। परिणामस्वरूप हम यीशु के साथ एकता में जीवन व्यतीत करके उससे एक बढ़ती हुयी स्वतंत्रता पा सकते हैं।

पाप के प्रति मरे हुये

रोमियो 6:2 और 6:11 दोनो ही पद हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने के बारे में एक दूसरी बात को इंगित करते हैं – कि हम पाप के प्रति मरे हुये हैं। पौलुस लिखता है :

''सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो? कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बितायें?'' (रोमियों 6:1–2)।

यहां वाक्यांश ''मरे हुये'' एक क्रिया है, और इसका शाब्दिक अनुवाद है ''हम जो पाप के प्रति मरे हुये हैं कैसे .... बिताऐं।''

रोमियों 6:10 कहता है कि यीशु ''पाप के लिये मर गया।'' अर्थात, वह पाप के सन्दर्भ के प्रति मरा था। पौलुस के इस कथन के तुरन्त बाद कि यीशु पाप के प्रति मरा है, वह हमें आज्ञा देता है कि हम भी अपने आप को पाप के प्रति मरा हुआ समझें। अर्थात, हमें यह मानना है कि हम ''पाप के प्रति'' मरे हुये हैं।

''पाप के प्रति मरा'' वाक्यांश का एक शाब्दिक अनुवाद है ''पाप के सन्दर्भ के प्रति मर गये लोग।'' पुनः ''पाप'' हमारी इस मनोवृति के प्रति एक सन्दर्भ है कि हम सोचते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं। जब हम एक बात के प्रति मरे हुये हैं, तो हम इससे अलग हैं। जब हम स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ सोचते हैं, तो हम स्वयं को इससे अलग सोचते हैं। हम स्वयं को इससे पृथक मानते हैं।

संसार के प्रति मरे हुये

हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने का एक तीसरा पक्ष यह है कि हम संसार के प्रति क्रूस पर चढ़ाये गये हैं। पौलुस यह गवाही देता है :

> ''पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमंड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं'' (गलातियों 6:14)।

संसार में वे सब सम्मिलित होते हैं जो आत्मा में होकर नहीं चल रहे हैं। इसका अभिप्राय है – सांसारिक मसीही और साथ वे जो संसार के बिना बचाये गये लोग हैं। आपके जीवन में संसार के वे लोग हो सकते हैं जो आपके अत्यन्त घनिष्ट हैं – इसमें आपकी कलीसिया के ''सर्वोत्तम'' लोग भी सम्मिलित हो सकते हैं।

इन ''सर्वोत्तम'' लोगों मे से कुछ जिन्हें हम जानते हैं शायद हमें हमारे जीवनों के कुछ क्षेत्रों में परमेश्वर की इच्छा से दूर ले जा सकते हैं, और इसलिये, यह सम्भव है कि हम जितना जानते हैं सम्भवतः उससे अधिक हमने संसार के दर्शन और अभ्यासों को स्वीकार कर लिया है।

क्रूस के द्वारा संसार हमारे प्रति क्रूस पर चढ़ाया गया है। हमें तब विचलित नहीं होना चाहिये जब संसार के लोग अब हमारे साथ जुड़ना नहीं चाहते हैं। हमें तब चिन्तित होना चाहिये यदि हमारे बारे में कुछ ऐसा नहीं है जो हमारी उपस्थित में संसार के लोगों को व्याकुल नहीं करता है। लूका 6:26 में यीशु कहता है, ''हाय तुम पर; जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें।''

यह मानने में कि हम संसार के प्रति और संसार हमारे प्रति क्रूस पर चढ़ाया गया है, महान विजय विद्यमान है।

व्यवस्था के प्रति मरे हुये

पौलुस प्रेरित के अनुसार, परमेश्वर के अनेक सेवकों की आत्मिक असफलताऐं व्यवस्था द्वारा जीवन जीने के प्रयासों के

परिणामस्वरूप हैं।

तब हमारे लिये आनन्द मनाने का अधिक कारण है, जब हम यह जानते हैं कि हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने मे, हम व्यवस्था द्वारा जीवन जीने के प्रति मर गये थे। व्यवस्था के प्रति हमारी मृत्यु को सिखाने वाला प्रमुख गद्यांश रोमियो 7:1–4 है।रोमियों 7:1–3 में एक सरल उदाहरण दिया है : यदि एक स्त्री का पति मर जाता है तो वह पुनः विवाह करने के लिये स्वतंत्र है। इस उदाहरण का पौलुस द्वारा प्रयोग इतना सरल नहीं है। उसका कथन इस प्रकार से है :

''और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है''

(रोमियो 7:4)।

यहां इस उदाहरण के पौलुस के प्रयोग में, एक मसीही, पत्नी है। उसके दो पति, व्यवस्था और यीशु हैं। पत्नी को जो मृत्यु स्वतंत्र करती है वह उसकी है। हम विश्वासी यीशु की देह के द्वारा व्यवस्था के प्रति मर गये थे। अर्थात, यीशु के साथ हमारा क्रूस पर चढ़ाया जाना हमारे लिये व्यवस्था के अर्न्तगत जीने से हमारी स्वतंत्रता को सम्भव करता है। जब हम उस स्वतंत्रता को अनुभव करते हैं, तो हम यीशु के साथ एक विवाहित सम्बन्ध में जी सकते हैं। इस एकता का परिणाम परमेश्वर के सम्मुख फल के समान है।

रोमियो 8:3 द्वारा व्यवस्था से हमारी स्वतंत्रता पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है : ''क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल हो कर नहीं कर सकी।'' यहां ''व्यवस्था'' के द्वारा, पौलुस का अभिप्राय ''व्यवस्था का आयोजन'' है। शरीर के कारण व्यवस्था का आयोजन दुर्बल था। हमारा निष्कर्ष ! व्यवस्था का आयोजन, शरीर के साथ एक आयोजन था।

व्यवस्था का कोई भी आयोजन, चाहे यह बाइबिल की आज्ञाऐं हों अथवा हमारे अपने बनाये गये नियम हों, वह हमारे शरीर

के साथ एक आयोजन है। जब मसीही जीवन के लिये हमारा प्रस्ताव नियमों का पालन करना है, तब हम बोझ को अपने ऊपर रख लेते हैं। यहां हमारी मनोवृति है, ''मैं यह करूंगा'' अथवा ''मैं यह नहीं करूंगा।''

दूसरे शब्दों में, जिस क्षण हम यह कहते हैं कि हम कुछ नियमों का पालन करेंगे, तो हमने शरीर को अत्यन्त महत्वपूंर्ण बात बना दिया है और हम और अधिक असफलता का अनुभव करने जा रहे हैं।

रोमियो 7:21 में पौलुस यह बताता है कि अच्छा करने का हमारा चुनाव भी व्यवस्था के अनुसार रहना है।

अतः व्यवस्था के प्रति हमारी मृत्यु, हमारी अपनी सामर्थ में बाइबिल की आज्ञाओं का पालन करने के प्रयास से, स्वतंत्रता है; मनुष्य द्वारा बनाये गये नियमों का पालन करने से स्वतंत्रता, यीशु के लिये अपना सर्वोत्तम करने की एक व्यवस्था से स्वतंत्रता है, और भलाई करने को चुनने से भी स्वतंत्रता है।

व्यवस्था के प्रति हमारी मृत्यु, शरीर और इसकी सारी दुखद क्षमताओं से स्वतंत्रता है।

अध्याय 5

अब हम – यीशु मसीह में दफ़नाये गये और पुनः जी उठे हैं

जब हमने यीशु को विश्वास द्वारा ग्रहण किया था तब पवित्र आत्मा द्वारा यीशु मसीह में हमारे डुबोये जाने का एक सुन्दर चित्र पानी का बपतिस्मा है। यह यीशु की मृत्यु, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में हमारे डुबोये जाने को भी चित्रित करता है।

अब हम – दफनाये गये हैं

रोमियो 6:4 कहता है, ''सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गये हैं।'' यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाये जाने के जिस प्रकार हमारे लिये अनेक अर्थ है, उसी प्रकार से यीशु के साथ हमारा दफनाया जाना भी अनेक अभिप्राय रखता है।

हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिये इसका महत्व

यीशु के साथ हमारा क्रूस पर चढ़ाया जाना जितना वास्तविक है उतना ही वास्तविक उसमें होकर हमारा दफनाया जाना है। जैसे कि हमारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया था वैसे ही वह दफनाया भी गया है।

हमारा दफनाया जाना, हमारे पुराने मनुष्यत्व पर हमारी जय को अतिरिक्त महत्व प्रदान करता है। वह क्रूस पर चढ़ाया और दफनाया भी गया है। हमारे दफनाये जाने का अभिप्राय दरवाजे पर एक और ताला भी जड़ देना है।

हमारे पुनरूत्थान के लिये इसका महत्व

हमारे दफनाये जाने का जो एकमात्र कारण पवित्रशास्त्र बताते हैं, कि यह हमारे पुनरूत्थान के लिये तैयारी है। रोमियो 6:4 बताता है :

''सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह, पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।''

हम इसलिये दफनाये गये हैं कि हम पुनः जिलाये जा सकें। अतः हमारे दफनाये जाने पर कोई भी परिचर्चा, हमारे पुनरूत्थान के एक
अध्ययन का परिचय कराती है।

अब – जी उठे

रोमियो 6:5 में पौलुस प्रेरित लिखता है, ''क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।''

रोमियो 6:4–5 का सन्देश यह है कि विश्वासियों के पास जीवन की नवीनता में जीने का विशेषाधिकार और सामर्थ है क्योंकि वे भी अपने प्रभु के समान पुनः जी उठे हैं।

हमारा पुनरूत्थान और मृत्यु, यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान के समान है, परन्तु उसके लिये यह शारीरिक था, और हमारे लिये यह आत्मिक है।

इफिसियों 2:4–6 में, पौलुस हमारे आत्मिक पुनरूत्थान को समझने के लिये हमें एक अच्छा तरीका प्रदान करता है। वह पुनरूत्थान के एक पक्ष को लेने और इसे तीन अलग–अलग और विशिष्ट विचारों में विस्तृत करने के द्वारा यह करता है। वह लिखता है :

> ''परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े
> प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। जब

हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।) और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया'' (इफिसियों 2:4–6)।

सारे विश्वासियों का आत्मिक पुनरूत्थान, तीन आयामों में एक है। हम जिलाये गये, उठाये गये और स्वर्गीय स्थानों में बैठे हुये हैं।

अपने पुनरूत्थान के महत्व को हम तब भली प्रकार से समझने के योग्य होंगे जब हम अपने प्रभु के पुनरूत्थान के समय उसके साथ अपने होने की कल्पना करते हैं। आइये, क्यों नहीं अभी ही कल्पना के सामर्थी वरदान का उपयोग करते हुये हम प्रभु यीशु की निर्जीव देह के साथ उसकी कबर में अपने उस समय होने की कल्पना करें जब उसका पुनरूत्थान हो रहा था ? उसकी देह में पहिली हरकतें हो रहीं थीं।

यीशु के साथ जीवित किये गये

देह में हरकत होने से पहले क्या होना चाहिये था ? जीवन– परमेश्वर के जीवन को–यीशु की देह में लौटना था। उस क्षण ही, यीशु जी उठा था। यही हमारे साथ भी उसी क्षण आत्मिक रूप से होता है जब हम यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं। रोमियो 8:9 में पौलुस लिखता है : ''यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।'' परमेश्वर का आत्मा, हमारे मसीही परिवर्तन के समय ठीक उसी प्रकार से हममें रहने के लिये आता है जैसे कि वह यीशु के पुनरूत्थान के समय उसकी देह में रहने के लिये आया था।

यीशु के साथ उठाये गये

हमारे पुनरूत्थान के दूसरे भाग कि हम उसके साथ उठाये गये हैं का वर्णन हमें इफिसियों 2:4–6 में मिलता है। अपनी कल्पना में होकर, आइये पुनः प्रभु यीशु की कबर में लौटें। हमने पहिले

निर्जीव देह में हरकतें देखी थीं जो देह में परमेश्वर के जीवन के लौट आने को इंगित करती थीं। अब हम अपने प्रभु को कबर से निकलते हुये देखते हैं। वह मरे हुयों के स्थान को छोड़ता है। इसे और अच्छी तरह से समझने के लिये, हमें रोमियो 6:4 पर लौटना है :

> 'सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।''

''मरे हुओं में से जिलाया गया'' वाक्यांश का शाब्दिक अनुवाद ''मरे हुओं लोगों मे से जिलाया गया था।'' पौलुस यह नहीं कहता है कि वह मृत्यु से जिलाया गया था।

जब प्रभु यीशु के पुनरूत्थान में हमारा बपतिस्मा हुआ था, तो हम मरे हुये लोगों के मध्य से उठाये गये थे। धर्मविज्ञान के इस थोड़े से भाग को हमारा अनुभव सुनिश्चित करता है। यदि आप ने अपनी युवा अवस्था में प्रभु यीशु को ग्रहण किया है, तो आप यह भली प्रकार से याद कर सकते हैं कि आप ने अचानक या धीमे–धीमे अपने घनिष्ठ साथियों को भी बदल दिया था। आप उन मित्रों से दूर हो गये थे जिन्हें उद्धार प्राप्त नहीं हुआ था – जो आत्मिक रूप से मरे हुए थे, और उन लोगों के निकट आ गये थे जो यीशु मसीह में जीवित हैं। उस समय के बाद से, आप उन लोगों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ने के योग्य नहीं रहे हैं, जो हमारे प्रभु को नहीं जानते हैं।

अपने पुराने मित्रों को छोड़ने के बदलाव के प्रति एक अपवाद हो सकता है। ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो कलीसिया में अनेक वर्ष बिताने के बाद अपनी उद्धार रहित अवस्था को जान पाये हैं। इसलिये उनके घनिष्ठ साथी सम्भवतः सदा से मसीही रहें हैं। अन्यथा उपरोक्त कथन सत्य है।

आप सम्भवतः तर्क कर सकते हैं, ''मैंने एक छोटे बच्चे के रूप में उद्धार प्राप्त किया था और निश्चित रूप से मरे हुए लोगों मे से जीवित नहीं किया गया था।'' लेकिन आप के साथ यह हुआ था। क्या आप को याद नहीं है जब आप एक युवा बन गये थे तो आप के जो ''मृतक'' मित्र थे उन्होंने मृतक लोगों के समान ही व्यवहार किया था, आपको उनके साथ घनिष्ठ मित्रता को तोड़ना पड़ा था ? यही हुआ था ! यद्यपि जब आप एक मसीही बने थे तो कई वर्षों तक आप को इसका अनुभव नहीं हुआ था परन्तु आप मृतकों में से जीवित किये गये थे।

यीशु मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाये गये

आइये हम प्रभु यीशु के पुनरूत्थान की अपनी कल्पना को जारी रखें। अपने प्रभु को उसके जीवित होने के कुछ सप्ताहों बाद ही देखें जब वह पिता के दाहिने हाथ पर बैठने के लिये स्वर्ग में उठाया जा रहा था। प्रेरितों के काम के पहिले अध्याय में उसके स्वर्गारोहण के विवरण के कारण यह कल्पना करना कठिन नहीं है।

हम विश्वासी स्वर्ग में उसके साथ बैठे हुए हैं, इस सच्चाई को हमें समझना आवश्यक है। अपने मसीही परिवर्तन के अनुभव पर यीशु की मृत्यु, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में उसके साथ अपनी एकता के समय ही हम वहां उसके साथ बैठाये गये हैं।

यीशु के साथ हमारी एकता के संदेश का यह भाग समझने के प्रति अत्यन्त कठिन जान पड़ता है। यीशु के साथ हमारे बैठाये जाने को बताने वाला एक महत्वपूर्ण गद्यांश इफिसियों के पहले अध्याय में है। इसे प्रार्थना पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

यहां पौलुस प्रार्थना करता है, कि पाठकों को आत्मिक समझ प्राप्त हो जिससे कि वे कुछ बातों को जाने। अपने पाठको के लिये जिन बातों की वह प्रार्थना करता है उनमें से एक यह है कि वे उस सामर्थ की महानता को जाने जो विश्वासियों को उपलब्ध है। इफिसियो 1:19–20 बताता है कि यह सामर्थ उन लोगों को

उपलब्ध है जो उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार विश्वास करते हैं।

पौलुस यह प्रार्थना नहीं कर रहा है, कि हम यह जानेंगे कि यीशु को कितनी अधिक सामर्थ उपलब्ध है। उसकी प्रार्थना है कि हम यह जानेंगे कि कितनी सामर्थ उन मसीहियों को उपलब्ध है जो परमेश्वर पर निर्भर एक जीवन को जीना जारी रखते हैं।

इस गद्यांश में यीशु का वर्णन किया गया है क्योंकि उसमें प्रगट सामर्थ के सारे लक्षण उस सामर्थ के माप हैं, जो उन लोगों को उपलब्ध हैं जो परमेश्वर पर निर्भरता का जीवन जीते हैं।

अतः यह गद्यांश हमें सूचित करता है कि यीशु की सामर्थ वास्तव में कैसी है :

> ''सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया। और सब कुछ उसके पांवों तले कर दियाः और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया।''
>
> (इफिसियों 1:21–22)।

क्योंकि विश्वासी यीशु के साथ एक हैं अतः हम पुनरूत्थान, उसके साथ बैठने और अधिकार के एक जीवन का अनुभव कर सकते हैं।

अध्याय 6

अब–यीशु मसीह आप में हैं

अनेक लोगों की यह अभूतपूर्व गवाही है, ''कि यीशु मुझमें रहता है।'' अन्य लोग गवाही देते हैं कि ''मैंने यीशु को मेरे द्वारा जीवन जीने की अनमुति दी है।''

यीशु के साथ हमारी एकता की बाइबिल के अनुसार विषय–वस्तु पर कोई भी परिचर्चा तब तक पूर्ण नहीं होगी जब तक यह इस सच्चाई पर विचार नहीं करती है, कि यीशु मसीह सारे विश्वासियों ''में'' है।

सुसमाचार प्रचार करने वाले मसीहियों ने पचास वर्षों से अधिक समय से इस सच्चाई पर पर्याप्त मात्रा में ध्यान दिया है कि यीशु सभी विश्वासियों ''में'' उपस्थित है। यद्यपि, अनेक लोग, अपने द्वारा यीशु के जीवन का सीमित अनुभव रखते हैं, क्योंकि वे यह नहीं समझते हैं कि वे यीशु ''में'' हैं। फिर भी उनके अनुभव यथार्थ और फलदायक रहें हैं। वे एक सच्चाई में आनन्दित हुए हैं कि यीशु उनमें रहता है।

यह सत्य पवित्रशास्त्र में सिखाया गया है

चाहे एक व्यक्ति बड़ी गहराई से नये नियम को ना भी पढ़ता हो तौभी वह इसकी शिक्षाओं को जानने से चूक नहीं सकता है, कि यीशु मसीह, विश्वासियों में वास करता है। रोमियो 8:9 बताता है, ''यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन

नहीं।'' गलातियों का प्रसिद्ध पद 2:20 कहता है, ''मसीह मुझ में जीवित है।'' इसी सच्चाई को बताने वाले अन्य गद्यांश भी हैं।

पवित्रशास्त्र के अनुसार, ''पिता परमेश्वर और पवित्र आत्मा परमेश्वर भी विश्वासियों में निवास करता है अथवा उनमें बना रहता है।''

यूहन्ना 14:23 में यीशु मसीह कहता है, ''यीशु ने उस को उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे। ''

यूहन्ना 14:16–17 में यीशु ने अपने अनुयाईयों से प्रतिज्ञा की थी कि पवित्र आत्मा जो उनके ''साथ'' था –क्योंकि वह यीशु में था–वह उन ''में'' होगा। सुसमाचार प्रचार करने वाले सारे मसीहियों में सामान्य रूप से यह स्वीकार किया गया है, कि पिन्तेकुस्त के दिन से पवित्र आत्मा जो मसीह का आत्मा है, वह सभी विश्वासियों ''में'' विद्यमान है।

अनुभव में सुनिश्चित किये गये हैं

यीशु हम ''में'' निवास करता है इस सच्चाई को प्रस्तुत करने के लिये हमारे पास न केवल पवित्रशास्त्र के बहुत से पद हैं, परन्तु बहुत से लोगों ने व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा इस सच्चाई को बार–बार सुनिश्चित किया है।

इफिसियों 4:30 जो बताता है कि, ''पवित्र आत्मा को शोकित मत करो'' यह प्रगट करता है कि पवित्र आत्मा विश्वासियों में निवास करता है।

पाप, पवित्र आत्मा को शोकित करता है। जब पवित्र आत्मा हमारे पाप के कारण शोकित होता है तो उसका दुख हमारे हृदय में फैल जाता है। परिणामस्वरूप, पाप करने पर जिस दुख को हम अनुभव करते हैं वह इस आशीषमय सत्य को सुनिश्चित करता है कि अब – यीशु हम में है। वे लोग जो पाप करने पर दुख का

अनुभव नहीं करते हैं उनके पास यह संदेह करने का कारण होगा कि क्या उन्होंने वास्तव में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया है।

इब्रानियों के 8वें अध्याय के अनुसार परमेश्वर अपनी व्यवस्था को हमारे मन में डालता है और उन्हें हमारे हृदयों में लिखता है। यह हम में निवास करने वाले यीशु मसीह के बारे में है जो तब क्षण प्रतिक्षण ''हाँ'' अथवा ''नहीं'' कहता है जब हम अपना जीवन जीते हैं।

केवल हम विश्वासियों के पास ही यह निरन्तर चलने वाला मार्गदर्शन होता है कि हमें क्या बातें करनी चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये। यह इसका एक निरन्तर जारी प्रभावकारी प्रमाण है कि यीशु हम में निवास करता है।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहने पर हम पहले जैसे नहीं रहते हैं

इफिसियों को लिखे गये अपने पत्र में पौलुस की एक और महत्वपूर्ण प्रार्थना दी गई है, वह लिखता है:

> ''मैं इसी कारण उस पिता के साम्हने घुटने टेकता हूं, जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है। कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ। '' (इफिसियों 3:14–17*a*)।

यीशु हममें बिना सुविधा अनुभव किये हुए भी हम ''में'' हो सकता है। पौलुस इस शब्दावली का उपयोग उसे व्यक्त करने के लिये करता है जो उसके इफिसियों 5:18 में दी गयी आज्ञा से अभिप्राय था, कि हमें निरंतर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना है।

पूर्णतया यह निश्चय होना कि यीशु, हम ''में'' है, अत्यन्त प्रोत्साहन देने वाला है परन्तु हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिये कि हमें केवल हम ''में'' उसकी उपस्थिति की ही आवश्यकता है। उसे अवश्य ही हम में स्वयं को सुविधाजनक अनुभव करना चाहिये। हमें

अवश्य ही निरन्तर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना है। क्योंकि यीशु हम ''में'' है : अतः हमारे लिये पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना सम्भव है।

हमें अवश्य ही यीशु की आत्मा से परिपूर्ण होना है, हम स्वयं अपने को परिपूर्ण नहीं कर सकते हैं।

फिर भी यह केवल तभी होता है जब हम यह अनुभव करते हैं कि हमारे लिये यीशु ''में'' होने का क्या अभिप्राय है कि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते जायेंगे।

भाग 3

आधारभूत दृष्टिकोण

स्वयं की कल्पना एक इस्राएली याजक के रूप में करें जो सूर्य अस्त होने के समय, नदी को पार करने और कनान को जीतना आरम्भ करने से पहले, यरदन के क्षेत्र को देख रहा है।

आप उत्तेजना से भर जाते हैं ! केवल कुछ ही घंटो में परमेश्वर सदियों पूर्व की गयी अपनी प्रतिज्ञा को आपके और आपके लोगों के लिये पूरा करना आरम्भ कर देगा कि आप इस विश्राम और बहुतायत के देश को प्राप्त करेंगे। इस प्रतिज्ञा की पूर्ती को सर्वप्रथम जिन्होंने अनुभव किया था उनमें से एक होना, आपका विशेष अधिकार बनने जा रहा है। यद्यपि, आप व्याकुल भी हैं – क्योंकि युद्ध का होना अवश्य है।

आप इस विषय में उत्सुक हैं कि परमेश्वर विजय के लिये युद्ध की कौन सी योजनायें प्रदान करेगा। वे योजना कुछ भी हो फिर भी आप उनका पालन करेंगे। आप इस विषय में बहुत कम जानते हैं कि शत्रु के साथ आपकी पहली लड़ाई में उसकी युद्ध की योजनाओं में यह सम्मिलित होगा कि आप यरीहो के चारों तरफ चक्कर लगायें और एक बैल के सींग से बने नरसिंगे को फूंके।

एक मसीही के रूप में आप की वर्तमान स्थिति अति सम्भव वैसी ही है जैसा कि आप ने उपरोक्त कल्पना की है। आप परमेश्वर की सन्तान हैं। आप ने बहुतायत और विश्राम के देश में प्रवेश नहीं किया है। आप जीवन में अपनी व्यक्तिगत विजय के लिये परमेश्वर

द्वारा दी गयी योजना को नहीं जानते हैं। फिर भी आप जानते हैं कि वे योजनायें कुछ भी हो – जब परमेश्वर उन्हें प्रगट करता है तो आप उनका पालन करेंगे।

बहुतायत और विश्राम के जीवन को पाने के लिये परमेश्वर की दो योजनायें हैं और उन्हें आगे के दो अध्यायों में बताया गया है जिनका शीर्षक ''विश्वास का दृष्टिकोण'' और ''चुनाव का दृष्टिकोण है।''

अध्याय 7

विश्वास का प्रस्ताव

वे विश्वासी भी जिन्होंने, यीशु के साथ अपनी एकता को कभी नहीं सुना है, एक अशं तक अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान के कुछ लाभों को अनुभव करते हैं। जैसे कि यीशु को ग्रहण करने के समय हम कैसे अपने घनिष्ठ मित्रों के प्रति बदल गये थे, यह हमारे पुनरूत्थान का एक लक्षण है।

यद्यपि हम तब तक कभी भी अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान को पूरी तरह से अनुभव नहीं कर पायेंगे जब तक कि हम उन तकनीकों का उपयोग नहीं करते हैं जिनकी आज्ञा पवित्रशास्त्र में दी गयी है।

ठीक उसी प्रकार से जैसे हम सीखने, विश्वास करने, और चुनने के द्वारा उद्धार ग्रहण करते हैं उसी प्रकार से हम अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान को पूंर्णतया अनुभव करते हैं।

हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान को अनुभव करने के लिये इन तीन भागों वाली प्रक्रिया को रोमियों 6:3–13 में क्रमानुसार बताया गया है। पद 3–9 में पौलुस हमें हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान की सूचना देता है; पद 11 और 13 में वह यह विश्वास करने की आज्ञा देता है; पद

12–13 में वह हमें चुनने की आज्ञा देता है।

इस अध्याय में हम यह विश्वास करने के अपने इस उत्तरदायित्व पर केन्द्रित करेंगे कि हम पहले से ही क्रूस पर चढ़ाये गये हैं, दफनाये गये हैं और पुनः जी उठे हैं।

विश्वास की आज्ञायें

यह विश्वास करने के लिये दो आज्ञायें दी गयी हैं। पहली आज्ञा पद 11 में मिलती है। रोमियों 6:10 में अपनी इस घोषणा के बाद कि हमारा प्रभु पाप के लिये तो मरा हुआ परन्तु परमेश्वर के प्रति जीवित है, पौलुस आगे लिखता है, ''ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो'' (रोमियों 6:11)।

यहां हमारा विशेष ध्यान ''समझो'' शब्द पर है। नये नियम में इस शब्द के दो अन्य उपयोग इसके अर्थ को समझने में हमारी सहायता करेंगे। लूका 22:37 बताता है कि हमारे प्रभु को अपराधियों के साथ ''समझा अथवा गिना गया था।'' रोमियों 8:18 में पौलुस यह बताता है कि, ''क्योंकि मैं समझता हूँ, कि इस समय के दुख और कलेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं है।''

इन दोनों गद्यांशों में ''समझो'' शब्द ''मानने'' के विचार को लागू करता है। रोमियो 6:11 का यही विचार है। हमे यह मानना है कि हम पाप के प्रति मरे हुए और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं।

हमारा यह मानना कि हम पाप के प्रति मरे हुए और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं परमेश्वर को यह वचन देना नहीं है कि हम पाप नहीं करेंगे और न ही यह पाप का पश्चाताप है। यहां हम समान रूप से मान रहे हैं कि हम पाप के प्रति मरे हुए और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं।

रोमियो 6:11 में ''समझो'' एक आज्ञा है। हम यह

मानने के कि हम पाप के प्रति मरे हुए और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं, उतने ही उत्तरदायी हैं, जितना की हम यीशु मसीह के सुसमाचार को पृथ्वी के छोर तक ले जाने के लिये उत्तरदायी हैं।

यह चकित करने वाला है, कि कुछ ऐसे लोग जो सुसमाचार प्रचार और सेवकाईयों के बारे में अत्याधिक उत्तेजित हैं वे इस आज्ञा पर हंसते दिखाई देते हैं, कि हमें स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर के प्रति जीवित समझना है। ऐसी असंगता विचित्र है। फिर भी यदि हम स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर के प्रति जीवित नहीं समझते हैं तो हम आज्ञाकारी नहीं है।

वास्तव में, यदि हम अपने आप पाप के प्रति मरा हुआ परमेश्वर के प्रति जीवित नहीं समझते हैं तो हम उतने ही अवाज्ञाकारी हैं जितने की हम तब होते हैं जब पृथ्वी के छोर तक सुसमाचार का प्रचार नहीं करते हैं। इससे भी अधिक जो लोग इस आज्ञा का पालन करते हैं वे प्रचार कार्य और सेवकाईयों में अधिक प्रभावकारी होते हैं। इसका प्रमुख उदाहरण पौलुस प्रेरित है।

विश्वास की दूसरी आज्ञा पद 13 में मिलती है। इस पद के मध्य में पौलुस लिखता है, ''अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा जानकर समझो।'' इस सम्पूर्ण गद्यांश के प्रकाश में, पौलुस यह कह रहा है कि हमें स्वयं को परमेश्वर के प्रति ऐसे सौंपना या प्रस्तुत करना है जैसे कि हम जो क्रूस पर चढ़ाये गये, दफनाये गये और पुनः जी उठें हो। क्योंकि वह पद 6 में यह बताता है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया है तो यहां पौलुस का अवश्य ही यह अभिप्राय है कि विश्वास द्वारा हमें स्वयं को परमेश्वर को उन लोगों के समान सौंपना है जिनका पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया है, दफनाया गया है, और जो मरे हुओं में जी उठे हैं।

विश्वास का जारी रहना

पौलुस की आज्ञा ''समझो'' – अर्थात ''मानो'' – एक ऐसी आज्ञा है जो हम से निरंतर सक्रिये होने की मांग करती है। हमें प्रतिदिन प्रत्येक क्षण यह मानना है कि हमारे प्रभु यीशु के द्वारा हम पाप के प्रति मरे हुए और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं। और जब हम अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान को जीने के लिये इन आज्ञाओं का पालन करते हैं तो हमें उन लोगों के समान जो मरे हुओं में से जीवित हैं स्वयं को निरंतर परमेश्वर के प्रति प्रस्तुत करना है।

कुछ लोगों ने यह धारणा व्यक्त की है कि इन बातों को हमें एक ही बार समझना और मानना है ! इस धारणा के अनुसार जिस क्षण एक व्यक्ति यीशु में अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में अपनी एकता को समझता मानता और चुनता है, तो वह पृथ्वी पर अपनी बाकी दिनों में एक विजयी जीवन व्यतीत करेगा।

यह दृष्टिकोण न तो पवित्रशास्त्र के अनुसार है और न ही सहायक है। रोमियों 8:2 में पौलुस लिखता है, ''क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में उसे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है।''

पवित्र आत्मा सारे विश्वासियों के जीवनों में एक नियम के द्वारा कार्य करता है। यह नियम हमें यीशु मसीह के साथ हमारी एकता के द्वारा हमें बहुतायत के जीवन को देना है। इसलिये, पवित्र आत्मा हमें प्रतिदिन यह याद करायेगा कि हम पाप के प्रति मरे हुये और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं। जब वह कोमलतापूर्वक यह याद दिलाता है तब हमें इस सकारात्मक विश्वास के साथ प्रतिक्रिया करनी है कि हम पाप के प्रति मरे हुये और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं।

रोमियों 6:16 में पौलुस हमें सिखाता है कि जिन बातों को हम बार–बार करते हैं, हम उनके दास बन जाते हैं। इसलिये जब

हम बार–बार यह मानते हैं कि हम पाप के प्रति मरे हुये और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं, तो समय के साथ–साथ हम इस विश्वास के दास बन जायेंगे।

परमेश्वर अपनी अनुग्रहकारिता में होकर, तब हमें बहुधा जयवन्त होने के अनेक सप्ताह प्रदान करता है जब हम पहिली बार यह समझते हैं कि कैसे बहुतायत के जीवन को अनुभव करें। समयानुसार, यद्यपि हम नये नियम में दी गयी विधि का अनुसरण आरम्भ करते हैं जो ऐसे विकास का विचार है जो धीमा होने के बाद भी सुनिश्चित है।

इन सिद्धान्तों की प्रथम समझ और परिणामस्वरूप विजय जो हमारे जीवनों में आती है, के बाद इस प्रकार से हमारा दिन आगे बढ़ता है। दिन के आरम्भ पर, पवित्र आत्मा हमें हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान को याद दिलाता है। यह बातें हमारे लिये सत्य हैं, यह स्वीकार करके हम प्रतिक्रिया करते हैं। इसके बाद पूरे दिन पवित्र आत्मा हमें कोमलतापूर्वक यह याद दिलाता रहता है। आरम्भ में हम परमेश्वर और यीशु के साथ हमारी एकता के बारे में जागरूक हुये बिना, सम्भवतः घंटो बिता सकते हैं। यद्यपि, समयानुसार हम यह विश्वास करने की एक आदत विकसित कर लेते हैं, कि हम पाप के प्रति मरे हुये और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं।

विश्वास के सिद्धान्त

क्योंकि रोमियों 6:11–13 की पांच आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीने के द्वारा हम यीशु मसीह के साथ अपनी एकता का अनुभव करते हैं, अतः हम इन पदों पर आते हैं जिससे कि अपने विश्वास के उन सिद्धान्तों को खोजें जो अनुभव के प्रति अगुवाई करते हैं।

विश्वास की यह अभिव्यक्तियां पद 11 और 13 में है। पद 11 में हमें स्वयं को पाप के प्रति मरा और परमेश्वर के प्रति जीवित

समझने (मानने) की आज्ञा दी गयी है। पद 13 में हमें स्वयं को ''मरे हुओं में जीवित'' होने के रूप में प्रस्तुत करने के लिये कहा गया है। इस गद्यांश के विस्तृत सन्दर्भ के कारण, हमें यह समझना है कि जब हम स्वयं को परमेश्वर के सम्मुख ''मृतकों में से जीवित'' होने के रूप में प्रस्तुत करते हैं, तो हम स्वयं को परमेश्वर के प्रति यह मानते हुये प्रस्तुत करते हैं कि हम पहिले ही क्रूस पर चढ़ाये गये हैं, दफनाये गये हैं और पुनः जी उठे हैं।

हमें यह मानना है कि हम पहिले ही क्रूस पर चढ़ाये जा चुके हैं

हम पहिले ही क्रूस पर चढ़ाये जा चुके हैं यह मानने का अभिप्राय यह मानना है कि हम पाप के प्रति मरे हुये हैं, हमारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया है, हम संसार के प्रति और हम व्यवस्था के प्रति क्रूस पर चढ़ाये गये हैं।

यह दर्शाया जा चुका है कि पाप के प्रति हमारे मरे होने को इस प्रकार अनुवादित किया जा सकता है कि, ''पाप के प्रति सन्दर्भ के साथ मरे हुये लोग'' अर्थात पाप से अलगाव। इसका अभिप्राय है कि हमें अब अपने पापी स्वभाव के बन्धन में नहीं रहना है।

हमारे पापी स्वभाव के बन्धन से हमारी स्वतंत्रता इस सत्य में भी व्यक्त हुयी है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया है। हमारा शरीर और हमारे जीवनों में जो कुछ भी यह उत्पन्न करता है, वह क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है।

यह विचार हमारे पापी स्वभाव पर हुये एक दोहरी विजय प्रदान करता है। जहां तक हमारे पापी स्वभाव का प्रश्न है हम मरे हुये हैं, और हमारा पापी स्वभाव क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है।

यह मानना हमारा अधिकार है कि हमें अब पाप नहीं करने हैं जो हमें दुखी बना रहे हैं। यहां यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हमें यह मानना है कि हम पाप करने नहीं जा रहे हैं। यहां यह कहना है, कि हमें पाप नहीं करना है।

अब शायद आप विश्वास के इस सिद्धान्त को व्यवहार में करने की इच्छा रख सकते हैं। परमेश्वर को इसके लिये धन्यवाद दें कि अब आपको, अपनी इस मनोवृति कि आप सब कुछ जानते हैं, के अधिकार के अर्न्तगत पुनः कभी नहीं होना है, आपकी पाप की चाहे कोई भी समस्याऐं क्यों नहीं हों, कभी भी भयभीत अथवा ईर्ष्यावान अथवा क्रोधित नही होना है।

हमें यह मानना है कि हम पहिले ही दफनाये जा चुके हैं

हम पाप के प्रति मरे हुये हैं और हमारे पुराने मनुष्यत्व को क्रूस पर चढ़ाया गया है, हमें हमारे पापी स्वभाव और जो कुछ भी यह हम में उत्पन्न करता है, उस पर एक दोहरी विजय प्रदान करता है। आइये अब दफनाये जाने पर विचार करें। पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया है और दफनाया गया है। इसका अभिप्राय, हमारे शरीर और इससे उत्पन्न होने वाली प्रत्येक बात पर एक तिगुनी विजय है।

यह पहिले बताया जा चुका है कि हमारा दफनाया जाना हमारे पुनरूत्थान के लिये तैयारी भी है।

हमें यह मानना है कि हम पहिले ही पुनरूत्थान प्राप्त कर चुके हैं

रोमियो 6:11 में हमें यह मानने की आज्ञा दी गयी है कि जिस प्रकार यीशु पाप के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर के प्रति जीवित है, वैसे ही हमें यह मानना है कि हम पाप के प्रति मरे हुये और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं। यीशु के लिये परमेश्वर के प्रति जीवित होने का क्या अभिप्राय होता है ? इसका अवश्य ही यह अभिप्राय है कि वह पिता परमेश्वर की यर्थाथ उपस्थित में है। इसलिये यह मानना कि हम परमेश्वर के प्रति जीवित हैं अवश्य ही यह अभिप्राय रखता है कि आत्मिक रूप से हमें पिता परमेश्वर की उपस्थिति में रखा गया है।

रोमियो 6:13 कहता है कि हमे अपने आप को मृतकों में से जीवित जान कर स्वयं को परमेश्वर को सौंपा। अर्थात हमें स्वयं को अपने स्वर्गीय पिता को उनकी तरह सौंपना है जो मृतकों में से जिलाये गये हैं।

इफिसियों 2:4–7 के अनुसार इसके तीन अभिप्राय है। इसका अभिप्राय है कि पवित्र आत्मा हममें निवास करने के लिये आ चुका है, हम मृतकों में से जीवित कर दिये गये हैं और हम स्वर्गीय स्थानो में बैठे हुये हैं।

हमारे लिये यह मानना कठिन नहीं है कि परमेश्वर हम में वास करता है। हमें वर्षो से यह सिखाया जाता रहा है और यह मानते हैं।

एक विश्वासी के लिये यह मानना कठिन नही है कि परमेश्वर ने उसे मृतकों के मध्य से जीवित कर दिया है। वह जानता है कि उसे बिना उद्धार प्राप्त लोगों की घनिष्ट मित्रता अच्छी नहीं लगती है परन्तु वह परमेश्वर के लोगों के साथ अधिक सुविधाजनक है।

विश्वास की जिस सबसे कठिन अभिव्यक्ति का अभ्यास करने की हमें आज्ञा दी गयी है वह यह है कि हम यीशु मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाये गये हैं। इसके पीछे क्या कारण है?

क्या यह इसलिये कठिन है कि हम वर्षो से कलीसिया में है परन्तु हमें कभी भी इस सत्य को सिखाया नहीं गया है?

क्या यह इसलिये कठिन है क्योंकि यह हमें एक इतना अधिक महिमामय जीवन प्रतीत होता है कि हम इसकी कल्पना नहीं कर सकते हैं कि कोई परमेश्वर की उपस्थित में रहने के योग्य है?

क्या यह इसलिये है क्योंकि हम मानते हैं कि हम ऐसी आशीषों के योग्य नहीं हैं? हमें अवश्य यह ध्यान में रखना है कि हमारे उद्धार के बारे में सब कुछ परमेश्वर का एक उपहार है। हम इस योग्य नहीं है कि पाप के दोषी ठहराये जाये, अथवा सुसमाचार

सुने, अथवा यीशु के पास आयें अथवा यीशु को अपने जीवनों को सौंपने के प्रति विश्वास करें।

आइये हम, विश्वास का एक कदम उठायें और परमेश्वर को धन्यवाद दें कि हम स्वर्गीय स्थानों में है।

हमारे विश्वास के परिणाम

यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान के साथ हमारी एकता पर पहले हुई सारी परिचर्चाओं सम्भवतः आप को यह सोचने पर विवश किया है, ''यदि हम पहले ही क्रूस पर चढ़ाये गये हैं, दफनाये गये हैं और जी उठे हैं तो इन्हें अनुभव करने के लिये हमें क्यों मानना है कि ये बातें सत्य है ?''

यह प्रश्न अनेक लोगों को चिन्ता में डालता है और एक करता है। इसका उत्तर निम्नलिखित कथन में है और यह इतना महत्वपूर्ण है कि इसे याद कर लेना सारे विश्वासियों के लिये लाभप्रद होगा।

मसीह जीवन में हमारे प्रति कुछ बातें सत्य हैं जिन्हें हम तब तक अनुभव नहीं करेंगे जब तक हम यह नहीं मानते हैं कि हमारे लिये वे सत्य हैं और हम उन्हें चुनने का चुनाव करते हैं। पापों की क्षमा आत्मिक नियम का एक आदर्श उदाहरण है।

क्या आप ने पाप के एक कार्य को एक बार से अधिक स्वीकार किया है? आप ने अवश्य ऐसा किया है ! प्रभु के साथ अपने आरम्भिक दिनों में शायद आप ने पाप के कार्य को सैंकड़ो बार स्वीकार किया हो। सारे मसीही इस अनावश्यक पाप स्वीकृति के दोषी हैं।

आप कब क्षमा किये गये थे ? 1यूहन्ना 1:9 के अनुसार जब आप ने पहली बार पाप स्वीकार किया था तभी आप को क्षमा मिल गयी थी। ''यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।''

आप के क्षमा किये गये थे परन्तु फिर भी आप ने पाप स्वीकार करना जारी रखा था। क्यों ? आप ने क्षमा का अनुभव नहीं किया था। आप ने क्षमा का अनुभव किया था जब आप ने पवित्रशास्त्र की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया था। परमेश्वर से प्रेम करने वाले एक विश्वासी परमेश्वर से बारह वर्षों बाद एक पाप के लिये क्षमा का अनुभव किया था, अपनी क्षमा पाने के बाद वह बारह वर्षों तक उस पाप को स्वीकार करता रहा था।

यही बात प्रार्थना के विषय में भी सत्य है। जैसे हम कर सकते हैं वैसे हम परमेश्वर का अनुभव तब तक नहीं करते हैं जब तक हम यह नहीं मानते हैं कि हम उसकी उपस्थिति में है।

यह बात धर्मी ठहराये जाने के विषय में सत्य है। विश्व मण्डल के न्यायी होने के रूप परमेश्वर ने हमें उसी क्षण धर्मी घोषित किया था जब हम यीशु पर विश्वास लाये थे। न्यायी के रूप में, वह हमसे इस प्रकार सम्बन्धित होने की इच्छा रखता है जैसे कि हम यीशु के समान धर्मी हैं। फिर भी अपने निर्दोष ठहराये जाने की शब्दावली में हम तभी उसके साथ संगति रखते हैं जब हम यह मानते हैं कि उसने हमें उसी तरह ग्रहण किया है जैसे हम भी यीशु जितने धर्मी हैं।

इसी प्रकार से हम अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और अपने पुनरूत्थान को तभी अनुभव करेंगे जब हम यह मानते हैं कि हम पहले से क्रूस पर चढ़ाये गये हैं, दफनाये गये हैं और पुनः जी उठे हैं।

यद्यपि, यह सम्भव है कि वर्षों से हमने यह माना है कि हम क्रूस पर चढ़ाये गये हैं दफनाये गये हैं और पुनः जी उठे हैं परन्तु हमारे जीवन बदले नहीं हैं। हमें विश्वास के हमारे सिद्धान्त में चुनाव के कार्य को अवश्य ही जोड़ना है जिस पर हम आगे अध्याय 8 में परिचर्चा करेंगे।

अध्याय 8

चयन का कार्य

इससे पहले कि आप यह अध्याय पढ़ना समाप्त करें तो शायद एक परिपूंर्ण जीवन के लिये आपकी जीवन पर्यन्त चलने वाली खोज पूरी हो सकती है। यदि आप पिछले अध्यायों की यात्रा कर चुके हैं और परमेश्वर जो सब आप को देना चाहता है उसके लिये आप में भूख और प्यास है, तो लगभग आपका उद्वेश्य पूरा हो रहा है।

यीशु में मारे जाने, दफनाये जाने और पुनः जी उठने के साथ जब हम अपनी एकता को चुनते हैं और इसे समझते, मानते और चुनते हैं, तब हम उस बहुतायत के उस जीवन को जो परमेश्वर ने हमारे लिये रखा है अनुभव करना आरम्भ कर देते हैं। यह अध्याय हमें दर्शाता है कि बाइबिल हमें इस विषय में क्या सिखाती है कि क्रूस पर चढ़ाये गये, दफनाये गये और पुनरूत्थान प्राप्त जीवन को हम कैसे चुन सकते हैं।

क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनः जी उठने को चुनने के लिये बाइबिल के अनुसार मार्गदर्शन इस आज्ञा का अनुसरण करता है, कि हमें यह मानना है कि हम पाप के प्रति मरे हुए और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं। अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनः जी उठने के जीवन को जीने का चुनाव करने के लिये चार आज्ञायें रोमियो 6:12–13 में दी गयी हैः

तुम उसकी लालसाओं के अधीन न रहो।

अपने अंगो को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को मत सौंपो.

अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा जान कर परमेश्वर को सौंपो।

अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।

तुम्हारे मरणहार शरीर में पाप राज्य न करे

> ''इसलिये पाप तुम्हारे मरणहार शरीर में राज्य न करे कि तुम उसकी लालसाओं के आधीन रहो'' (रोमियो 6:12)।

यहां ''पाप'' हमारी इस मनोवृति का एक संदर्भ है कि हम सब कुछ जानते हैं। पौलुस ने इस प्रकार की एक आज्ञा दी है जो यह दर्शाती है, कि तुम्हारी यह मनोवृति कि हम सब कुछ जानते हैं निरंतर हमारे शरीरों को नियंत्रित करने का प्रयास करेगी। निरंतर, हमें अपनी प्रतिरक्षा करनी है।

हमारी प्रतिरक्षा, यह चुनाव करने की हमारी सामर्थ के अभ्यास में है कि पाप हमारे मरणहार शरीरों पर राज्य न करने पाये। हमें निरंतर यह चुनना है कि अपनी स्वंय की तार्किकता के अनुसार जीवन जीना जारी न रखें। हमें बुद्धिमानीपूर्वक और विवेकपूर्वक जीवन के विषय में अपने विचारों को त्यागना है। हमें क्या करना है अथवा यह निर्णय करना कि अन्य लोगों को क्या करना है हमें इस विषय में सोचना बन्द करना है। हमे इस बारे में भी सोचना बन्द करना है कि परमेश्वर क्या करेगा !

पौलुस कहता है कि जब पाप हमारे मरणहार शरीरों पर राज्य करता है तो हम अपने शरीरों की आज्ञा मानते हैं। जब पाप हमारे शरीरों पर राज्य करता है तब हम पूर्णतया अपने शरीरों पर केन्द्रित हो जाते हैं। हम अपने शरीरों के विषय में अत्याधिक

चिन्तित हैं। वे हमें नियन्त्रित करते हैं।

अपने अंगो को पाप के प्रति नहीं सौंपो

''अपने अंगो को अधर्म के हथियार होने के लिये नहीं सौंपो'' (रोमियो 6:13)।

यह आज्ञा पहली आज्ञा के ही समान है परन्तु अधिक विशिष्ट है। पद 12 की आज्ञा, पूरे शरीर के विषय में है। वहीं यह आज्ञा, हमारे शरीरों के विशिष्ट अंगो के बारे में दी गयी है। अपने शरीर के किसी भी अंग को अपनी स्वयं की तार्किकता के नियन्त्रण में नहीं दें। इसे उदाहरण के रूप में कि पौलुस की सोच में क्या है बोलने की अपनी योग्यता के बारे में सोचें। प्रतिदिन हम लोग सैंकड़ों बार बोलते हैं। फिर भी इस आज्ञा के अनुसार हमें यह कभी भी निर्धारित नहीं करना है कि हमें क्या बोलना है। और हमें प्रतिदिन बार–बार इस आज्ञा को मानना है।

पौलुस पद 12 में सम्पूर्ण शरीर और फिर पद 13 में शरीर के भागों के बारे में क्यों निर्देश देता है ? यहां इस परिवर्तन का यह अभिप्राय है कि परमेश्वर की अनेक सन्तानें यह चाहती हैं कि प्रभु उनको नियंत्रित तो करे परन्तु पूरी तरह से नहीं। वे अपने जीवनों के कुछ भागों को अपने ही नियंत्रण में रखना चाहती है। इसलिये पौलुस आज्ञा देता है कि हमारे शरीरों का एक भी अंग हमारे स्वयं की तार्किक शक्ति के नियंत्रण के अर्न्तगत नहीं होना चाहिये।

यह गद्यांश चेतावनी देता है कि जब हम अपने शरीरों के भागों का उपयोग करते हैं तो इसकी परिणाम अधार्मिकता होगी : अपने शरीर के अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को नहीं सौंपो।

स्वयं को उन लोगों की तरंह परमेश्वर को हाथ में सौंपो जो मृतकों में से जी उठे हैं

''अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौंपो'' (रोमियों 6:13)।

यीशु के साथ एकता के जीवन को चुनने के प्रति इस तीसरी आज्ञा में हमारे विश्वास का अभ्यास भी सम्मिलित है। अर्थात, हमें परमेश्वर को अपने जीवनों को ऐसे लोगों की तरह सौंपनी हैं जो क्रूस पर चढ़ाये गये, दफनाये गये और पुनः जी उठे है। इच्छा के इस अभ्यास को पांच शब्दों में व्यक्त किया है – ''स्वयं को परमेश्वर को सौंपो।''

यह इच्छा का एक बार किया जाने वाला अभ्यास है यहां पौलुस का अभिप्राय है कि हर बार जब हम अपने आप को परमेश्वर को सौंपते हैं तो हमें यह इस विचार के साथ करना है कि यह एक सारे जीवन का निर्णय है। अवश्य ही, हम स्वयं को पुनः अपने जीवनों का नियंत्रण करता हुआ पायेंगे। फिर भी जब हम ऐसा करते हैं तो हम जीवन पर्यन्त के एक अन्य निर्णय के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। कि स्वयं को परमेश्वर को उन लोगों की तरंह सौंपें जो पहले ही क्रूस पर चढ़ाये गये हैं, दफनाये गये हैं और पुनः जी उठे हैं।

उन लोगों के रूप में जो मृतकों में से जी उठे हैं। स्वयं को परमेश्वर को सौंपने की आज्ञा उस समान रूप से स्वीकार की गयी सलाह से पूर्णतया पृथक है जो हमने दूसरों को दी है। हमने उन्हें सिखाया और प्रोत्साहित किया है कि वे अपने आप को और समर्पित करते जायें। जो परमेश्वर के साथ चलने की इच्छा रखते थे हमने उन्हें नियमित रूप से सुझाव दिया है :

और अधिक बाइबिल पढ़ें।

और अधिक प्रार्थना करें।

अपने जीवन को पुनः परमेश्वर को समर्पित करें।

अपने जीवन को पूरी तरह से परमेश्वर को सौंपें।

किसी तरीके से दूसरों की सहायता करें।

हमने सोचा है कि हम अच्छी सलाह दे रहे हैं। हमने हमेशा से यह जाना था कि परमेश्वर के प्रति पूर्णतया उपलब्ध होना

आवश्यक था। परन्तु जिस आज्ञा पर हम परिचर्चा कर रहे हैं उसके अनुसार इसे एक ऐसी सम्पूर्ण उपलब्धता होनी चाहिये जो एक ऐसे विश्वास के द्वारा उत्पन्न हुई है जो यह जानता और मानता है कि हम क्रूस पर चढ़ाये गये हैं, दफनाये गये हैं और पुनः जी उठे हैं जब हम उनकी तरह जो मृतकों में से जीवित हैं, परमेश्वर को अपने जीवनों को सौंपते हैं तब हम उनकी तरह स्वयं को उसे देते हैं, जिनका दृष्टिकोण क्रूस पर चढ़ाया और दफनाया जा चुका है। अतः हम स्वयं को परमेश्वर को इसलिये सौंपते हैं कि केवल उसके ही दृष्टिकोण से जीवन व्यतीत करें। वास्तविक अर्थ में यह आदेश पहले बताये गयी तीन आदेशसूचक बातों का सार है : जानना, शरीर को पाप के विरूद्ध नियंत्रण करने वाले पाप को चुनना, और इस मनोवृति के नियंत्रण के प्रति देह के किसी भाग को सौंपने से इन्कार करना, कि हम सोचते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं।

अपने शरीर के अंगो को परमेश्वर को सौंपो

''अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो'' (रोमियो 6:13)।

हमें बोलने की अपनी योग्यता अथवा हमारे अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करने का उपयोग नहीं करना है। परन्तु इस योग्यता के उपयोग को परमेश्वर को सौंपना है। अब हमारे पास किसी को भी किसी बारे में बताने का कोई भी अधिकार नहीं है। इससे भी अधिक, हमें मौन रहने का भी
अधिकार नहीं है।

हमारे शरीरों के सभी अंगो को परमेश्वर के नियंत्रण के अर्न्तगत सौंपा जाना है। पौलुस की आखरी टिप्पणी इस प्रकार है कि जब परमेश्वर हमारे शरीर के अंगो का उपयोग करता है तो वह उन्हें धार्मिकता के हथियार बनाता है। परमेश्वर हमारे शरीरों के द्वारा धार्मिकता के कार्य करेगा।

यह ध्यान में रखें कि यह आज्ञाओं की एक श्रंखला में

अन्तिम बात है और पहले दी गयी चार आज्ञाओं को हमारे द्वारा माने जाने पर निर्भर है। परमेश्वर को हमारे शरीरों के अंगो को सौंपने की हमारे योग्यता केवल तभी सम्भव है जब हम हमारे शरीरों को पाप के नियंत्रण में सौंपने से इंकार करते हैं और जब हम स्वयं को परमेश्वर को उनके समान सौंपते हैं जो क्रूस पर चढ़ाये गये, दफनाये गये और पुनः जी उठे हैं।

पिछले अध्याय में यह सुझाया गया था कि हम अपने किस विश्वास को व्यक्त करने की प्रतिज्ञा नहीं करनी है कि हम क्रूस पर चढ़ाये गये हैं, दफनाये गये हैं और पुनः जी उठे हैं। इसके साथ ही, यीशु के साथ अपनी एकता जीने के चुनाव की इन चार आज्ञाओं का पालन करने के लिये भी हमें प्रतिक्षा नहीं करनी चाहिये।

आइये, अभी हम यह चुनाव करें कि हमारे मरणहार शरीर में पाप राज्य न करने पायें।

आइये हम यह चुनाव करें कि अपने शरीरों के अंगों को पाप को नही सौपें।

आइये अब हम यह चुनाव करें कि अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौपें।

आइये हम यह चुनाव करें कि अपने शरीर के सारे अंगों को परमेश्वर को सौपें।

फिर भी इच्छा का एक बार कार्य उन का कार्य उन परिवर्तनों को नही लाता है जिनकी हम लालसा रखते हैं। हमें तब तक रोमियों 6:11–13 के सारी पांच आज्ञाओं को मानना है जब तक वे हमारी आदत नही बन जाती हैं। हमें बार–बार तब तक उनका पालन करना चाहिए जब तक हम उनके दास नही बन जाते हैं।

रोमियों 8: 2 बताता है। ''जीवन की आत्मा की व्यवस्था में यीशु मसीह में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया'' अन्य बातों के साथ–साथ, इस गद्यांश का यह अभिप्राय भी है कि पवित्र आत्मा कभी भी उस बहुतायत के जीवन को हमें तक

लाने के प्रयास को समाप्त नही करेगा जो बहुतायत का जीवन यीशु के साथ हमारी एकता के अनुभव द्वारा हमें मिलता है। पवित्र आत्मा इस बारे में विश्वासयोग्य रहेगा कि इन पांच आज्ञाओं को हमें याद दिलाये और हमें इनका पालन करने के योग्य बनाये।

यहां हमें इनका पालन करने के लिये पवित्र आत्मा के द्वारा अत्याधिक कोमलतापूर्वक हमें याद दिलाने के प्रति प्रतिक्रिया करना है। जब हम ऐसा करते हैं तब परमेश्वर उन परिवर्तनों को हम में थोड़ा–थोड़ा करके पूरा करेगा जिनके लिए हम वर्षो से इच्छुक हैं। थोड़ा–थोड़ा करके हम बहुतायत और विश्राम के उस देश को प्राप्त करेंगे।

आइये, अभी इस जीवन में अपना पहला कदम उठायें।

आइये, पवित्र आत्मा के प्रत्येक धीमी आवाज को सुन कर इन कदमों को बढ़ाना जारी रखेगे। परिवर्तन आयेगा।

आइये, अब हम कुछ उन परिर्वतनों को देखें जिन्हें हम अनुभव करेंगे।

भाग 4

जीवन रूपान्तरण

''मैं एक भिन्न व्यक्ति बनना चाहता हूँ। मैं बदलाव चाहता हूँ।'' निश्चित रूप से हम सभी की यही अभिलाषा है। और जब हम निरंतर यीशु के साथ अपनी एकता के जीते हैं तो हम इन बदलावों को अनुभव करेंगे जिनकी हम तीव्र इच्छा रखते हैं।

सम्भवतः हम सब ने ऐसे स्थान पर जाने की योजना बनाने की उत्तेजना का अनुभव किया है जहां हम पहले कभी नहीं गये हैं। इस नये स्थान में जो कुछ हम देखेंगे और करेंगे उसके बारे में सीखना इस उत्तेजना का एक भाग था।

हमारे प्रभु यीशु के साथ अपनी एकता को जीने के द्वारा जिस स्थान में हम प्रवेश करेंगे उसके बारे में सीखना अब हमारे लिये उत्तेजनात्मक है। और इस विषय में हम किसी स्थान की एक यात्रा पर नहीं जा रहे हैं। हम इस स्थान में रहने के लिये प्रवेश करेंगे। और यहां जितना अधिक हम रहेंगे यह उतना ही आश्चर्यजनक हो जायेगा।

अगले सत्र में हम इस अद्‌भुत नये आत्मिक स्थान पर दृष्टिपात करेंगे जहां के लिये यात्रा हमें करनी है। इसे ''जीवन रूपान्तरण'' कहा गया है। अगले सात अध्यायों में इन परिवर्तनों पर परिचर्चा की गयी है : ''अन्ततः – पवित्रआत्मा से परिपूर्ण जीवन जीना'', ''पवित्र आत्मा क्या भिन्नता लाता है'', ''पाप से स्वतन्त्रता'', ''संसार से स्वतन्त्रता'', ''व्यवस्था से स्वतन्त्रता'', ''स्वर्गीय स्थानों में जीवन'' और ''परमेश्वर के आश्चर्यकर्म करने वाले सेवक।''

अध्याय–9

अन्ततः आत्मा से परिपूर्ण जीवन जीना

इस पुस्तक को लिखने के लिए मैंने एक कम्प्यूटर का उपयोग किया था। यदि आपने पहिले कम्प्यूटर का उपयोग कभी नही किया है, तो उनके बारे में कुछ ऐसी अदभुत बात है जिसे आपको जानने की आवश्यकता है। वे सदा वही करते हैं जो आज्ञा आप उन्हे देते हैं। वे सदैव वह नही करते हैं जो वे करना चाहते हैं।

यदा–कदा (मैं यह मानने का इच्छुक हूँ), जब मैने पहली बार कम्प्यूटर को उपयोग करना आरम्भ किया था, तो मैने उसके साथ अनेक धंटे यह प्रयास करते हुये बिताये थे कि वह वही करने लगे जो मैं उससे चाहता था। बहुधा मैं अपने कम्प्यूटर विशेषज्ञ मित्र को सहायता के लिए बुलाता था, और कुछ ही सेकन्डो में, कम्प्यूटर वही करने लगता था जो मेरी आवश्यकता थी।

हममे से अनेक लोग पवित्र आत्मा से निरन्तर एक परिपूंर्ण जीवन को पाने के प्रयास में ऐसी ही निराशा को पाते हैं। हम जानते थे कि हमें परिपूंर्ण होना था। हमने यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता ग्रहण करने के ठीक बाद इस परिपूंर्णता को अनुभव किया था। उसके बाद हमें इस परिपूंर्णता का एक संक्षिप्त स्वाद मिलता रहा है। परन्तु हमारे द्वारा किये किसी प्रयास का परिणाम निरन्तर परिपूंर्णता का कारण नही बना है।

हमारी आंशिक रूप से हमारी समझ की कमी के कारण थी। इसलिए, जैसा कि कम्प्यूटर के उपयोग में होता है वैसे ही कुछ

वचनों को ग्रहण करना और उनके प्रति प्रतिक्रिया करना, हमारे परमेश्वर के गम्भीर सोच वाले सेवकों को इस योग्य बनाएगा कि पवित्र आत्मा से निरन्तर परिपूंर्ण होने के जीवन में प्रवेश करें। निश्चय ही, यह वचन पवित्र शास्त्र से है।

पवित्र आत्मा निरन्तर हमें स्वयं से परिपूंर्ण करने का प्रयास करता है

अनेक वर्षो तक, मैने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए इस प्रकार याचना की थी मानों मै मानता था कि परमेश्वर मेरी प्रार्थना का उत्तर देने में अन्इच्छुक हो। इस प्रकार की अज्ञानता, किसी को भी पवित्र आत्मा से निरनतर परिपूर्ण होने से दूर रखेगी।

इफिसियों 5: 18 में पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने की पौलुस की आज्ञा का अभिप्राय एक निरन्तर परिपूंर्णता पाना है। एकमात्र इसी सच्चाई को हमें इस बात का कायल कर देना चाहिए कि परमेश्वर की यह इच्छा है कि हम निरन्तर पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होते रहें।

अन्य पद, यद्यपि, और भी बलपूर्वक हम पर यह सत्य प्रगट करता है। यूहन्ना 4:14 पर स्त्री से बोले गये प्रभु यीशु के कथन का विवरण देता है, जब प्रभु ने उसे बताया था कि जो जल वह देगा वह उसमे एक सोता बन जायेगा, जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा। जब कि पवित्र आत्मा हम में एक ऐसा सोता है जो उमड़ता रहता है, अतः हम जानते हैं कि जब हम मसीही बने थे उस क्षण से पवित्र आत्मा हमें स्वयं से भरने का प्रयास कर रहा है।

यह कैसा अद्भुत विचार है। और पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण मसीही होने की सम्भावना के बारे में यह कैसे हमारी समझ को बदल देता है। हमें परिपूंर्ण करने की उसकी इच्छा के बारे में जागरूक होने के द्वारा, हम यह अनुभव करते हैं कि पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने का बोझ हम पर नही पर नही है।

एक अन्य सच्चाई जो हमे बताती है कि हम पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण हो सकते हैं वह यह है कि हमें स्वंय को परिपूंर्ण करने की आज्ञा नही दी गयी है। इसके विपरीत हमें परिपूंर्ण होना है। हमें परिपूंर्णता को ग्रहण करना है। हमें निरन्तर उस पवित्र आत्मा की परिपूंर्णता को ग्रहण करना है जो हमें तब से परिपूंर्ण करने का प्रयास कर रहा है जिस क्षण हमने यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण किया था।

यहां एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है : '' यदि वह हमें परिपूंर्ण करने का इतना अधिक इच्छुक है और हम भी परिपूंर्ण के इतने अधिक आतुर हैं, तब हम पवित्र आत्मा की परिपूंर्णता को अनुभव क्यों नही कर रहे हैं ?''

इसका उत्तर बड़ा सरल है।

हमारा शरीर हमें पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने से रोकता है

गलतियों 5: 17 में पौलुस लिखता है, ''क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में लालसा रखता है।'' यदि हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का प्रयास कर रहे हैं और परिपूंर्ण नही हो रहे है, तो यहां बाधा शरीर है।

एक ऐसी बाल्टी में पानी भरने की असम्भवता की कल्पना करें जब इसमें पत्थर भरे हों। इसी प्रकार हमारे लिए पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना असम्भव है जब वहां शरीर की बाधा निरन्तर बनी है।

क्या शरीर की बाधा को दूर करने के लिए कुछ किया जा सकता है जिससे हम पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण हो सके ? जी हां ! परमेश्वर का धन्यवाद हो कि पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने में इस बाधा को शक्तिहीन किया जा सकता है। क्योंकि शरीर क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है इसलिए इसे शक्तिहीन किया जा सकता है और पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने की एक बाधा के रूप में हटाया जा

सकता है।

शरीर क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है

गलतियों 5: 24 में हम इस सुन्दर सच्चाई को पढ़ते हैं कि जब हम प्रभु को अपने हृदयों को सौंपते हैं तब हमारा शरीर क्रूस पर चढ़ाया गया था। ''जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने अपने शरीर को लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।''

यह कैसी अद्‌भुत जय है ! उस क्षण ही हमने अपने हृदय को प्रभु को सौपा था, हमारा शरीर अपनी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया गया था।

जब हम क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाने और पुनरूत्थान को समझते, मानते और चुनते हैं, तब हम क्रूस पर चढ़ाया जाना, दफनाना जाना और पुनरूत्थान अनुभव करते हैं। जब हम क्रूस पर चढ़ाये जाने का अनुभव करते हैं, तो अब शरीर नियंत्रण नही करता है। शरीर, हमारी यह मनोवृति है कि हम सब कुछ जानते हैं। अतः जब हमारा शरीर नियंत्रण नही कर पा रहा है तो हमारे जीवनों को नियंत्रित करने के लिए पवित्र आत्मा स्वतंत्र है।

यह माना जा सकता है कि अनेक विश्वासयोग्य विश्वासी प्रभु के सम्मुख घुटनों पर रहे हैं, कि पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने के लिए याचना करें।

अपनी इस याचना को बन्द करें ! अपने विश्वास को आरम्भ करें! अपनी इच्छा का अभ्यास करें ! जय का अनुभव करें !

परमेश्वर के सम्मुख अभी तनावमुक्त हों। अपने आप में अपने भरोसे और विशेष रूप से अपने इस विश्वास को कि आप बुद्धिमान है, त्यागने का एक विवेकशील चुनाव करें। अपनी उन सारी योजनाओं को त्याग दें जो आप अपने लिए अन्य लोगों के लिए तथा परमेश्वर के राज्य के लिए सब कुछ जानने की अपनी मनोवृति कारण आप रखते हैं। अब अपनी इच्छा के कार्य के प्रति अपने इस विश्वास को जोड़ें कि आपका शरीर क्रूस पर चढ़ाया जा

चुका है। अब परमेश्वर से केवल इतना कहें, ''प्रिय परमेश्वर, इसी समय मैं उस पवित्र आत्मा की परिपूर्णता को ग्रहण करता हूँ जो मुझे उस क्षण से भरने का प्रयास कर रहा है जब मैं आपका हुआ था।''

अब आप पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण हैं।

याद रखें कि इफि05: 18 मे पौलुस ने आज्ञा दी है, कि हमें पवित्रात्मा से निरन्तर परिपूंर्ण होते रहना है। कुछ लोग अपने ''आत्मा से भरने'' को इस प्रकार वर्णित करते हैं मानों वे अपने आत्मिक जीवनों में एक विशेष स्थान पर पहुँच गये थे जहां उन्हें उस प्रकार से वर्णित किया जा सकता था। परन्तु यह सत्य नही है।

जब पौलुस ने अपनी इस आज्ञा को लिखा था कि हमें निरन्तर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना है, तो वह जानता था कि एक बार मरना पर्याप्त नही था– और ऐसी इस प्रकार की कोई बात नही है कि विश्वासी अपने मसीही जीवनों में एक ऐसे स्थान पर पहुंच जाते है जहाँ उन्हे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया व्यक्ति बताया जा सके। हमें बार–बार परिपूंर्ण होना है।

हमारा शरीर बड़ी कठिनाई से मरता है। यह निरन्तर अपनी सामर्थ में लौटता रहेगा।

शरीर को हमें निरन्तर नकार कर और निरन्तर यह मान कर कि यह क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है, हमें उसे शक्तिहीन रखना है।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना जारी रखें। इसे ठीक उसी प्रकार से करें जैसा कि आप अभी कुछ क्षण पहिले परिपूंर्ण हुये थे।

एक प्रकार से, पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने की तुलना एक कार खरीदने के साथ की जा सकती है। जब हम एक कार खरीदते हैं, तब हमे चार पहिये, चार टायर, दो या अधिक सीटें और इसी तरंह और भी चीजें मिलती हैं।

जब हम पवित्र आत्मा की परिपूंर्णता को ग्रहण करते हैं, तो हम उन सारी बातों को पाते हैं जो पवित्र आत्मा हम में और हमारे

द्वारा करता है।

अब हम अपने घ्यान को उन अतिरिक्त आशिषों पर लगायेंगे जो तब हमें प्राप्त होती हैं, जब हम पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होते हैं।

अध्याय 10

पवित्र आत्मा क्या भिन्नता लाता है

अध्याय 9 में, मैंने एक कम्प्यूटर के उपयोग को सीखने में अपनी कठिनाईयों को बताया था। यद्यपि, अब मै अपने कम्प्यूटर मित्र की सलाह लिये बिना अनेक माह बिता चुका हूँ, क्योंकि अब मेरे पास इसे उपयोग करने का प्राथमिक ज्ञान है।

मेरे पास जो कम्प्यूटर है उसके बारे में थोड़ी जानकारी के साथ, अब मैं टाइप राइटर का उपयोग नही करता हूँ। यदि अपने भी ऐसा ही किया है, तो आप जानते हैं कि कुशलतापूर्वक टाइप करने की आपकी योग्यता में यह कितनी अधिक भिन्नता लाता है।

मैं अपने कालेज के दिनों के बारे सोचता हूँ जब मैं अपने पुराने टाइप राइटर पर परीक्षा पत्रों को तैयार किया करता था। तब इसमें एक वाक्य अथवा गद्यांश जोड़ने के लिए लगातार मिटाना, दोबारा टाइप करना पड़ता था और कागजों के सैकड़ों पन्नों को फेंकना और टाइप राइटर के रिबनों को बदलना पड़ता था। अब शब्दों, वाक्यों या गद्यांशो को सरलता और शीघ्रता से जोड़ा, बदला अथवा हटाया जा सकता है। जब मेरी अन्तिम प्रतिलिपी तैयार हो जाती है केवल तभी मैं उसे छापता हूँ। यह कितनी अद्‌भुत भिन्नता है!

इसी प्रकार से, ''यीशु के लिए हमारा सर्वोत्तम करने'' के हमारे पुराने जीवन, और यीशु के आत्मा की परिपूर्णता को ग्रहण करने के नये जीवन के मध्य, एक बहुत बड़ी भिन्नता है।

पवित्र शास्त्र, पवित्र आत्मा की अनेक सेवकाईयों को प्रगट करता है। यह अध्याय पवित्र आत्मा की इन सेवकाईयों में से अनेक

को वर्णित करता है। इससे पहिले कि हम आशीष के इस वाचाबद्ध देश को उत्तेजनापूर्वक देखना आरम्भ करें, हमें कुछ बातों की एक संक्षिप्त समझ की आवश्यकता है।

सर्वप्रथम, पिछला अध्याय हमें बताता है कि हम पवित्र आत्मा की परिपूंर्णता को कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इस अध्याय को पढ़ने से पहिले अथवा बाद में उस अध्याय का एक पुनावलोकन सम्भवतः हमारी सहायता करेगा।

दूसरा, मसीही जीवन एक प्रगतिशील जीवन है, और हमें यह नही सोचना चाहिए कि इस क्षण के आगे हम निरन्तर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहेंगे। एक अधिक निरन्तर परिपूर्णता की दिशा में हम प्रतिदिन वृद्धि कर सकते हैं।

तीसरा, जिन बदलावों की हम अपेक्षा कर सकते हैं, वे चार श्रेणियों में संगठित हैं। यह श्रेणियां हैं : व्यक्तिगत बदलाव, परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध में बदलाव, अन्य लोगो के साथ हमारे सम्बन्धों में बदलाव, और हमारी मसीही सेवा में बदलाव।

चौथा, यहां जो कुछ भी बताया गया है, वह पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने के एक स्वाभाविक परिणाम के रूप में आता है। जब हम एक कार खरीदते हैं तो जैसा हमें चार टायर मिलते हैं ठीक वैसे ही जब हम पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होते हैं तो हम इन आशीषों को ग्रहण करते हैं।

इन बातों को सम्भव करने का हमारी ओर से कोई भी प्रयास, प्रभावकारी नही होगा। यहां बतायी गयी किसी भी विशेषता को यदि हम स्वंय में नही पाते हैं, तो हमें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने की आवश्यकता है।

व्यक्तिगत बदलाव

यद्यपि यहां हम व्यक्तिगत बदलावों पर परिचर्चा कर रहें, परन्तु हमें यह समझना चाहिए कि हममें हुये कोई भी बदलाव,

परमेश्वर के हमारे सम्बन्ध में, अन्य लोगों के साथ हमारे सम्बन्धों में, और हमारी मसीही सेवा में भी बदलावों के प्रति, हमारी अगुवाई करेंगे। फिर भी यहां बताये गये बदलाव, अन्य बदलावों की अपेक्षा कुछ अधिक व्यक्तिगत हैं।

आनन्द– गलातियों 5:22

आत्मा का फल.....आनन्द है।'' आनन्द दुलर्भ चीजों में से एक है। हममें से अधिकतर लोगों के लिए यह उचित परिस्थतियों पर निर्भर करता है। जब हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं तब परिस्थतियों के बजाये भी हम आनन्दित रहते हैं। जब हम सोचते हैं कि आनन्द से भरा हुआ एक ह्रदय, हमारे लिए और उन दूसरों के लिए जो हमारे साथ हैं, क्या करता है, तब हम पवित्र आत्मा की परिपूर्णता को ग्रहण करने के लिए प्रेरित हैं।

शान्ति – गलातियों 5:22

''आत्मा का फल.....शान्ति है।'' इसका अभिप्राय है कि हम अपने भीतर शान्ति अनुभव करते हैं। इसका अभिप्राय यह भी है कि हम परमेश्वर के साथ और अन्य लोगो के साथ जब वे इसकी अनुमति देंगे, मेल रखते हैं। एक ऐसे समय में जो कठिनाइयों, दुख, निराशा, ग्लानि, घृणा, लड़ाई और युद्ध से भरा है, यह जानना उत्तेजनात्मक है, कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के द्वारा हम शान्ति की सन्तानें हो सकते हैं।

भलाई – गलातियों 5:22

''आत्मा का फल .....भलाई है।'' लगभग सारे अभिभावक अपने बच्चों को भला बनना सिखाते हैं। यद्यपि यीशु कहता है कि केवल परमेश्वर ही भला है। यदि तब, हमें, भला बनना है, तो हम केवल तभी वैसे होंगे जब भला परमेश्वर हममें है। भला परमेश्वर तब हममें है, जब हम पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण हैं।

संयम – गलातियों 5:23

पौलुस लिखता है, जब पवित्र आत्मा हमारे जीवनों को

नियंत्रित करता है, तब वह.....संयम को उत्पन्न करेगा। सम्भवतः यह चकित करने वाली सच्चाई हो सकती है कि पवित्र आत्मा, संयम को उत्पन्न करता है, क्योंकि हम कह रहे हैं कि शरीर आत्म–विश्वास है। शब्द आत्म–नियंत्रण जिन दो शब्दों से बना है उनका अभिप्राय ''सामर्थ में होना'' होता है। पवित्र आत्मा हमारे भीतर सामर्थ उत्पन्न करता है। सम्भवतः यहां यह विचार व्यक्त हुआ है कि यह व्यक्ति ''नियंत्रण से बाहर'' नहीं है, परन्तु परमेश्वर के नेतृत्व के प्रति अपनी स्वतंत्र इच्छा से प्रतिक्रिया करने के लिये स्वतंत्र है।

आत्मिक ज्ञान में वृद्धि – यूहन्ना 14:26; 16:13

पवित्रशास्त्र में अनेक बार पवित्र आत्मा को सत्य का आत्मा कहा गया है। यूहन्ना 16:13 में प्रभु यीशु कहता है, पवित्र आत्मा, सारे सत्य में हमारी अगुवाई करेगा। यूहन्ना 14:26 में, वह कहता है कि आत्मा हमें सारी बातें सिखायेगा। 1कुरिन्थियों 2:9–10 में पौलुस लिखता है कि पवित्र आत्मा हम पर उन बातों को प्रगट करेगा जो परमेश्वर ने उन लोगों के लिये तैयार कर रखी हैं जो उससे प्रेम करते हैं। जब पवित्र आत्मा हमारे जीवनों को भरता है, तो हमारे पास आत्मिक ज्योति का एक असीमित स्रोत है। और यह ज्योति हमें निरन्तर प्रकाशित करती है।

भविष्य की घटनाओं का ज्ञान – यूहन्ना 16:13

''.....और वह आने वाली बातें तुम्हें बतायेगा।'' पवित्र आत्मा की इस सेवकाई का एक उदाहरण तब प्रस्तुत होता है जब परमेश्वर यह प्रगट करता है कि किसी के उद्धार के लिये हमें अब और प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है। वह हमें एक आन्तरिक आश्वासन प्रदान करता है कि वह व्यक्ति उद्धार पाने जा रहा है। कुछ ऐसे समय भी हैं जब हमें भविष्य को एक चेतावनी के रूप में जानना है। कभी–कभी इसके मार्गदर्शन के लिये कि हमें क्या करना है, हमें भविष्य की किसी घटना के विषय में आश्वासन प्रदान

किया जाता है।

यहां एक चेतावनी देने की आवश्यकता है। भविष्य में होने वाली घटनाओं के यह प्रकाशन बहुधा नहीं होते हैं। यहां शायद शैतान यह चेष्टा कर सकता है कि गलत तरीके से हमारी यह सोचने के प्रति अगुवाई करे कि हम सम्भवतः भविष्य के बारे में सब कुछ जान सकते हैं। सच्चाई यह है कि हमे भविष्य के बारे में बहुत कम जानने की आवश्यकता है। फिर भी, जब हमें जानने की आवश्यकता होती है, तब पवित्र आत्मा हमें आवश्यक प्रकाशन प्रदान करता है।

आत्मिक सत्य को याद रखने की योग्यता – यूहन्ना 14:26

''परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा.....जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण करायेगा।'' हममे से अनेक अपने एक साक्षी देने के अनुभव पर तब आश्चर्यचकित होते हैं जब अचानक हमें पवित्रशास्त्र का एक ऐसा पद याद आ जाता है जिसे हमने वर्षों से नहीं सोचा था। उस विश्वासी के जीवन के सभी क्षेत्रों में जो पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण जीवन को निरन्तर व्यतीत करता है, पवित्र आत्मा इसी प्रकार से कार्य करता है।

शारीरिक शक्ति में एक वृद्धि – रोमियो 8:11

यह पद सिखाता है कि पवित्र आत्मा हमारे नश्वर शरीरों को ''जिलायेगा'' सम्भवतः इस गद्यांश का मुख्य सन्दर्भ हमारे शरीरों के पुनरूत्थान के प्रति है। यद्यपि, ऐसा प्रतीत होता है कि यह मानने मे भी बहुत से लाभ हैं कि वर्तमान समय में भी, पवित्र आत्मा हमारे नश्वर शरीरों को ''जिलायेगा''।

परमेश्वर इसे आंशिक रूप से हमें उन भावनाओं से स्वतंत्र करने के द्वारा करता है जो हमारी शक्ति को छीन लेते हैं, जैसे कि भय, चिन्ता, उदासी, क्रोध, द्वेष और घृणा। वह, निर्णय लेने से हमें मुक्त करके यह करता है। हमें याद रखना है कि जब हम पवित्र

आत्मा में होकर जीवन जीते हैं तब परमेश्वर हमारे निर्णय लेता है और हम उनके प्रति केवल प्रतिक्रिया करते हैं। इसके साथ ही ऐसे समय भी आते हैं जब परमेश्वर ऐसी बातों को करने के लिये हमारा मार्गदर्शन करता है जिसके लिये हमारे पास पर्याप्त शारीरिक शक्ति नहीं होती है। ऐसे समयों पर, उन बातों को करने के लिये जिन्हें करने के लिये हमारी अगुवाई हुयी है, पवित्र आत्मा हमें शारीरिक शक्ति और सामर्थ के एक संसाधन को प्रदान करेगा। हममे से अनेक लोग, शक्ति और सामर्थ के ऐसे संसाधन की गवाही दे सकते हैं।

प्रभावकारी प्रार्थना – इफिसियों 6:18

''हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और विनती करते रहो.....।'' जब हम पवित्र आत्मा की अगुवाई में प्रार्थना करते हैं तो हमारी प्रार्थनायें बदल जाती हैं। वहां व्यर्थ किया गया समय कम होगा, कुछ ही अनावश्यक प्रार्थनाऐं होंगी, प्रार्थना, आवश्यकताओं की हमारी एक बढ़ती हुयी समझ होगी, और इस विषय में सम्भवतः कुछ कम भावनायें होंगी और हमारे हृदय में एक शान्ति होगी कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर देने जा रहा है। इसका परिणाम यह होगा कि परमेश्वर के द्वारा हमारे कहीं अधिक निवेदनों के उत्तर दिये जायेंगे क्योंकि जब हम प्रार्थना करते हैं तब वह हमारी अगुवाई करता है।

निरन्तर धन्यवाद – इफिसियों 5:20

''पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होते जाओ.....और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो'' (इफिसियों 5:18–20a)।

सब बातों में धन्यवाद देने के द्वारा परमेश्वर की सन्तानों की बढ़ती हुयी संख्या, अपने जीवनों में बदलावों को अनुभव कर रही है। मेरी एक मित्र ने मुझे बताया था कि जब उसने अपनी कोहनी की टूटी हड्डी के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देना आरम्भ किया तो

उसे एक शारीरिक चंगाई मिलना आरम्भ हो गयी थी। कुछ लोगों को तब अपनी गहरी उदासी से मुक्ति मिली है जब उन्होंने अपनी सारी परिस्थितियों के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देना आरम्भ किया था। ऐसा धन्यवाद हमारे इस विश्वास को व्यक्त करता है कि परमेश्वर हमारी परिस्थितियों को नियंत्रित करता है। सब बातों के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देना, एक स्वाभाविक बात नहीं है। फिर भी जब हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते हैं, तो हम सब बातों के लिये निरन्तर परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं।

परमेश्वर की एक बढ़ती हुयी महिमा – 2कुरिन्थियों 3:18

2कुरिन्थियों 3:18 बताता है, ''परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश–अंश कर के बदलते जाते हैं।''

यह गद्यांश सन्दर्भानुसार विश्वासी की महिमा का विवरण दे रहा है। वाक्यांश ''तेजस्वी रूप में अशं–अंश करके'' उस प्रगतिशील महिमा के विचार को प्रस्तुत करता है जो विश्वासी पर आती है। जैसा कि यह गद्यांश स्पष्ट रूप से प्रगट करता है, यह बढ़ती हुयी महिमा, पवित्र आत्मा का कार्य है।

यहां यह जोड़ना होगा कि प्रभु यीशु के चेहरे को अधिक निहारना उस कष्ट का परिणाम होता है जो परमेश्वर हम पर भेजता है। पौलुस प्रेरित इस सच्चाई को 2कुरिन्थियों 4:16–17 में सिखाता है।

यीशु मसीह पर निरन्तर मनन – यूहन्ना 15:26; 16:14–15

जब हमारा प्रभु यीशु पवित्र आत्मा के आने के बारे में बताता है, तब वह यह घोषणा करता है, ''वह मेरे विषय में गवाही देगा''

और ''वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बतायेगा। जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है, इसलिये मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हे बतायेगा।'' जब हम पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होते हैं तब हम यीशु पर मनन करते हैं।

बहुतायत का जीवन – रोमियो 8:6

''आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।'' यहां ''जीवन'' शब्द का अभिप्राय ''बहुतायत के जीवन'' से है। गलातियों 6:8 में पौलुस बताता है कि जो आत्मा के लिये (बजाये आत्मा में होकर के) बोता है वह अनन्त जीवन की कटनी काटता है। पुनः रोमियो के गद्यांश के अनुसार ही यह विचार उस बहुतायत के जीवन का है जिसके बारे में प्रभु यीशु ने यूहन्ना 10:10 में कहा था।

परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में बदलाव

परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध एक प्रगतिशील सम्बन्ध हो सकता है। यहां कुछ उन क्षेत्रों को बताया गया है जिनमें यह सम्बन्ध तब बढ़ सकता है जब हम निरन्तर पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण हो रहे हैं।

प्रेम – गलातियों 5:22

''आत्मा का फल प्रेम है।'' हमारे प्रभु ने कहा है, कि सब आज्ञाओं में सबसे बड़ी आज्ञा यह है कि हमें अपने पूरे हृदयों, मनों, प्राणों और सामर्थ के साथ अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना है। वह यहां यह भी जोड़ता है कि हमे अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करना है। अतः पवित्र आत्मा से भरे हुये हृदय के प्रेम की पहिली दिशा परमेश्वर की ओर है। जब हम निरन्तर पवित्र आत्मा की परिपूंर्णता को ग्रहण करना जारी रखते हैं, तो इसके परिणामस्वरूप परमेश्वर की ओर हमारे बढ़ते हुये प्रेम का प्रवाह होता है।

नम्रता – गलातियों 5:22–23

''आत्मा का फल.....नम्रता है।'' हमारा प्रभु कहता है कि नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे। वह हमसे यह भी कहता है कि

हम उसका जुआ अपने पर उठा लें, क्योंकि वह नम्र (अथवा कोमल) है। यह कहावत उचित ही है कि ''नम्रता, कमजोरी नहीं है।''

नम्रता, दूसरों के लिये उपलब्ध होना है। नये नियम में जिस शब्द का अनुवाद नम्र हुआ है, उसे, एक पालतू घोड़े, अर्थात ऐसे घोड़े को जो अपने स्वामी के नियंत्रण में है, को बताने के लिये उपयोग किया जाता था। अतः नम्र होने का जो अभिप्राय है उसे बताने के लिये, ''उपलब्धता'' सर्वोत्तम व्याख्या है। जो लोग यह मानते हैं, कि परमेश्वर हमारी योग्यता को नहीं परन्तु उपलब्धता को खोज रहा है, वे उचित हैं। जब हम पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होते हैं, तब वह हमें उपलब्ध पाता है, क्योंकि तब हम ''नम्र'' हैं।

विश्वास – गलातियों 5:22

''आत्मा का फल.....विश्वास है।'' पवित्रशास्त्र बहुधा हमें प्रोत्साहित करते हैं कि परमेश्वर में एक बढ़ते हुये विश्वास की इच्छा करें। रोमियो 1:17 बताता है, ''धर्मी जन विश्वास द्वारा जीवित रहेगा।'' रोमियो 14:23 में कहा गया है, ''जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है।'' इब्रानियों 11:6 घोषणा करता है, ''परन्तु विश्वास के बिना उसे प्रसन्न करना असम्भव है।'' प्रभु यीशु यूहन्ना 14:12 में कहते हैं, ''मैं तुम से सच–सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन इनसे भी बड़े–बड़े काम करेगा क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ।'' निरन्तर पवित्र आत्मा की परिपूंर्णता पाने के द्वारा हम एक बढ़ता हुआ विश्वास पा सकते हैं।

विश्वासयोग्यता – गलातियों 5:22

कुछ आधुनिक अनुवादों में गलातियों 5:22 में ''विश्वास'' शब्द की जगह ''विश्वासयोग्यता'' शब्द का उपयोग किया गया है। इन दोनो अनुवादों की सम्भावना के कारण, पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने के परिणाम के दोनो लक्षणों को यहां सम्मिलित किया गया है। हमारे साथी मसीहियों में विश्वासयोग्य होने की बड़ी आवश्यकता

है। परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता यद्यपि एक और बड़ी आवश्यकता है। ऐसे व्यक्ति के लिये जिसने एक कठिन जीवन व्यतीत किया है, यह एक स्वागतपूर्ण आशीष है। विश्वासयोग्य होना, हमे उस दोष भावना और आत्म–घृणा से स्वतंत्र करता है जब हम परमेश्वर और अन्य लोगों के प्रति एक निराशा का कारण रहे हैं।

पवित्र आत्मा द्वारा निरन्तर मार्गदर्शन – रोमियो 8:14

रोमिया 8:14 कहता है, ''इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।'' समान्यतः जब हम पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण हैं, तो आत्मा के द्वारा हमारी अगुवाई भी की जाती है। जब हम निरन्तर पवित्र आत्मा द्वारा अगुवाई प्राप्त करते हैं, तब हम परमेश्वर की इच्छा के केन्द्र में चलते हैं।

उद्धार का प्रमाण – रोमियो 8:13–16

जो पद अभी बताया गया है, ''जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं,'' इसका आशय यह है कि जब हम आत्मा में चलते हैं तो यह इसका प्रमाण है कि हम परमेश्वर के हैं। यह प्रमाण हमारे अपने ह्रदयों में विश्वास के आश्वासन के साथ पहुंचता है और यह हमसे आगे हमारे आस–पास के लोगों के पास भी यह प्रमाणित करता है कि हम परमेश्वर के जन हैं। इसका यह आशय नहीं है कि केवल उन्हीं ने उद्धार प्राप्त किया है जो निरन्तर आत्मा में चलते हैं।

परमेश्वर की व्यवस्था की पूर्ति – रोमियो 8:1–4

रोमियों 8:1–4 यह स्पष्ट करता है कि हम परमेश्वर की व्यवस्था को, व्यवस्था का पालन करने के प्रयास से नहीं परन्तु पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा पूरा करते हैं। हमें दस आज्ञाओं को उनका पालन करने के प्रयास के लिये नहीं पढ़ना है। फिर भी उन्हें पढ़ने के द्वारा हम यह जान सकते हैं कि क्या हम पवित्र आत्मा से

परिपूंर्ण हो रहे हैं, क्योंकि व्यवस्था की आत्मा उनमें पूरी होती है जो आत्मा मे चलते हैं।

रोमियो 13:8 में पौलुस सिखाता है कि वे जो प्रेम करते हैं वे ही व्यवस्था की मांगो को पूरा करते हैं वह लिखता है, ''क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।'' हम यह पहिले देख चुके हैं कि आत्मा का फल प्रेम है। यीशु के साथ अपनी एकता के कारण, हम आत्मा में चलने के योग्य हैं और इस प्रकार प्रेम में होकर जीवन जीने के योग्य हैं। जब हम प्रेम में जीवन जीते हैं तब हम व्यवस्था का पालन करते हैं।

अन्य लोगों के साथ सम्बन्धों में बदलाव

परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध के बजाये अन्य लोगों के साथ उचित सम्बन्ध रखने की विषयवस्तु, बाइबिल में अधिक सामान्य है – यह अधिक महत्वपूंर्ण नही है, परन्तु इसे बाइबिल सामान्य रूप से अधिक पाया जाता है। मानवीय स्तर पर एक खराब सम्बन्ध से अधिक दुख किसी व्यक्ति ने नहीं उठाया है ? अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध में, उपलब्ध किसी भी सहायता का, हम स्वागत करते हैं। इसमें अन्य और कुछ नहीं परन्तु आत्मा से परिपूंर्ण होना, हमें वह जय प्रदान करेगा जिसकी हम इच्छा रखते हैं।

धीरज – गलातियों 5:22

''पवित्र आत्मा फल.....धीरज है।'' धीरज उस शब्द का अनुवाद है जिसमें दो यूनानी शब्दों का उपयोग हुआ है, ''क्रोध'' और ''दूर हटना''। इन दोनों को एक साथ संयुक्त करने पर हमें जो वाक्यांश मिलता है ''वह क्रोध से दूर हटना है।''

ऐसे वैवाहिक सम्बन्ध, परिवार, कलीसियाऐं और अन्य परिस्थितियां जहां टूटे हुये सम्बन्ध उत्पन्न हुये हैं उनसे बचा जा सकता था यदि वहां ''क्रोध से दूर हटना'' प्रयुक्त होता। आईये, यीशु मसीह के साथ अपनी एकता में जीवन जीयें और पवित्र आत्मा की परिपूर्णता को ग्रहण करें जिसके परिणामस्वरूप हम अन्य लोगों

के प्रति धीरज रखें।

दयालुता – गलातियों 5:22

''आत्मा का फल.....दयालुता है।'' जिस शब्द का अनुवाद दयालुता किया गया है उसमें कृपा करने का विचार समाहित है। कृपा कितना अद्‌भुत अन्तर उत्पन्न कर सकती है। ऐसे संसार में जहां आत्म–केन्द्रित कठोरता, क्रोध, घृणा व्यापत है वहीं दयालुता बहुधा टूटे हुए सम्बन्धों को जोड़ेगी। हममें दयालुता का होना अन्य लोगों की सराहना करने के लिये एक अतिरिक्त लाभ है – जो कोई कम महत्वपूर्ण सेवा नहीं है।

आधीनता – इफिसियों 5:18–21

''पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होते जाओ.....और मसीह के भय में एक दूसरे के आधीन रहो।'' जब हम एक दूसरे के आधीन होते हैं तब हम उनके लिये उपलब्ध होते हैं। किसी दूसरे व्यक्ति के आधीन होना उसे नियंत्रित करने के प्रयास के विरूद्ध है। हमारे इस पद के सम्बन्ध का

अध्ययन यह प्रगट करता है कि पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने का परिणाम आधीनता है। स्पष्ट रूप से आधीनता की एक आत्मा, सुदृढ़ मानवीय सम्बन्धों का एक आधार है।

विश्वासियों के मध्य एकता – इफिसियो 4:3

यह पद ''आत्मा की एकता'' के विषय में बताता है। जब पवित्र आत्मा मसीहियों के ह्रदय पर अधिकार करता है तो वह उन्हें एक साथ एकता के एक दृढ़ बन्धन में बांधता है। निश्चय ही जब परमेश्वर अपनी संतानों के टूटे हुए सम्बन्धों को देखता है तो वह दुखी होता है। निश्चय ही उसका ह्रदय उत्तेजना से भर जाता है, जब पवित्र आत्मा हमें एक साथ आत्मा की एकता में बांधता है। इन सबसे अधिक, विश्वासियों के मध्य एकता की आत्मा वह विषय है जिसके लिये यूहन्ना अध्याय 17 में हमारे प्रभु यीशु ने अपनी महान प्रार्थना की थी। यहां उस प्रभाव पर भी विचार करें जो उन बिना

उद्धार पाये हुए लोगों पर पड़ता है, जो हममें पवित्र आत्मा के निवास के द्वारा हमें एक साथ संगठित देखते हैं। आइये, परमेश्वर के लिये और अविश्वासी लोगों के लिये यीशु के साथ अपनी एकता में जीवन व्यतीत करें।

मसीही सेवा में बदलाव

परमेश्वर के सभी निष्ठावान सेवक अपनी फलदायकता से सन्तुष्ट नहीं हैं। वे फलधारण करने की क्षमता में वृद्धि के लिये परमेश्वर की ओर देख रहे हैं। जब हम निरंतर आत्मा से परिपूर्ण होते हैं तो हम इनमें वृद्धि को अनुभव करेंगे।

हम अन्य लोगों के प्रति जीवन का एक स्रोत बन जाते हैं – यूहन्ना 7:38

हमारा प्रभु वचन देता है, ''जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, उसके हृदय से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी''। इसके बाद का 39वां पद यह प्रगट करता है कि यहां पानी का संदर्भ पवित्र आत्मा से है। यहां प्रतिज्ञा यह है, कि जो लोग प्रभु यीशु पर निरंतर एक निर्भरता के जीवन को जीते हैं उनसे जीवनदायक जल का एक झरना नहीं बह निकलेगा – परन्तु एक नदी बह निकलेगी।

यहां प्रभु यीशु की यह प्रतिज्ञा है कि जीवन देने वाले जल की नदियां उन लोगों से बहेंगी जो निरंतर उस पर विश्वास रखते हैं – और हम यह देख चुके हैं कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का परिणाम विश्वास है। यह नदियां, उद्धार प्राप्त और बिना उद्धार प्राप्त दोनों लोगों के लिये बहेंगी। हम लोग भटके हुओं को प्रभु यीशु के पास लायेंगे और हम उद्धार प्राप्त लोगों की बहुतायत के जीवन की ओर अगुवाई करेंगे। इस प्रकार से फल धारण करना, हममें से उन अनेक लोगों के लिये एक बड़े बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है जिन्होंने भलाई और परमेश्वर के लिये अन्य लोगों के जीवनों को

प्रभावित करने के प्रति अत्याधिक संघर्ष किया है।

गवाही देने में एक बदलाव

पवित्र आत्मा से निरंतर परिपूंर्ण होने के जीवन खोजने और अनुभव करने के परिणामस्वरूप एक विश्वासी प्रभु यीशु के उद्धार देने वाले अनुग्रह की गवाही अन्य लोगों को देता है। इससे हमारे गवाही देने में एक बड़ा बदलाव आ जाता है – एक ऐसा बदलाव जिसके परिणामस्वरूप हम अधिक फल लाते हैं।

कुछ लोग अधिक गवाही देंगे – प्रेरितो के काम 1:8; यूहन्ना 15:26–27*a*

पवित्रशास्त्र के एक लोकप्रिय पद में हमारे प्रभु ने अपने प्रथम शिष्यों को यह वचन दिया था, कि जब पवित्र आत्मा उन पर आयेगा तो वे उसकी गवाही देंगे। एक इतना ही सामर्थी परन्तु अधिक लोकप्रिय पद हमारे प्रभु के एक अन्य कथन को बताता है,

> ''जब वह सहायक आयेगा जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्थात सत्य का आत्मा, जो पिता से निकलता है वह मेरी गवाही देगा, और तुम भी गवाह ठहरोगे।''

जब हम पवित्रशास्त्र से निंरतर परिपूंर्ण होते हैं तो हमारे होठों से निरंतर वे शब्द निकलते हैं जो हमारे प्रेम करने वाले उद्धारकर्ता के बारे में बताते हैं।

कुछ लोग कम गवाही देंगे – गलातियों 5:22–23

जबकि अधिकतर विश्वासी कोई भी गवाही देने में कठिनाई का अनुभव करते हैं तो वहीं ऐसे भी लोग हैं जो व्यक्तिगत प्रचार कार्य के लिये इतने अधिक समर्पित हैं कि वे उद्धार रहित लोगों को व्याकुल और अप्रसन्न कर देते हैं। वे चाहे पवित्र आत्मा से तैयार किये गये हों अथवा नहीं, परन्तु बिना किसी झिझक के वे अतिशीघ्र उन सब को यीशु के पास लाने का प्रयास करते हैं जिनसे वे मिलते हैं। जिनके साथ वे सुसमाचार की सहभागिता कर रहे हैं उनसे

मिलने वाली नकारात्मक प्रतिक्रियाओं के प्रति वे संवेदनशील नहीं होते हैं।

यद्यपि, वे मसीही जो पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने के द्वारा प्रेम और संयम से भरे हुए हैं, वे व्यक्तिगत प्रचार कार्य के अपने ऐसे कार्य के द्वारा जो दूसरों पर दोष लगाता हो, इस प्रकार का अनियंत्रित व्यवहार नहीं करेंगे। और अब क्योंकि वे जानते हैं कि अविश्वासियों के प्रति गवाही देने के लिये प्रभु उनकी अगुवाई करेगा, अतः वे केवल ईश्वरीय आदेश के अर्न्तगत ही आगे बढ़ेंगे। सभी विश्वासी एक नये तरीके से गवाही देंगे – गलातियों 3:1

यीशु के साथ अपनी एकता को जीने के द्वारा पवित्र आत्मा से परिपूंर्ण होने के परिणामस्वरूप हम गवाही देने का एक नया तरीका अपनाते हैं। गलातियो 3:1 में पौलुस प्रेरित अपने पाठकों को सूचित करता है कि उन्होंने क्रूस पर चढ़ाये गये यीशु को देखा था। यद्यपि पौलुस के गलातिया आने से अनेक वर्षों पहले यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने की घटना घटी थी और यह वहां से काफी दूर भी हुई थी, कि गलातियों की आंखों के सामने इसे देखा जा सकता था। यह कैसे सम्भव था ?

इसका उत्तर गलातियों की पत्री में क्रूस पर चढ़ाये जाने के अनेक संदर्भों में प्राप्त होता है। क्योंकि देह क्रूस पर चढ़ाई गयी है और पौलुस ने क्रूस पर चढ़ाये जाने को अनुभव कर रहा था अतः पौलुस में शरीर के कार्य उत्पन्न नहीं हुए थे।

इसके साथ ही, यीशु, पौलुस में निवास करता था क्योंकि वह क्रूस पर चढ़ाया गया था और इस क्रूसीकरण को अनुभव कर रहा था। इसलिये पौलुस में शरीर के कार्यों की अनुपस्थिति और उसमें यीशु के व्यक्ति की उपस्थिति, इस सच्चाई के दृश्य प्रमाण थे कि यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था। जब हम पवित्र आत्मा से निरंतर परिपूर्ण होते हैं तो इससे हमारे जीवनों में उत्पन्न अनेक बदलाव जिन्हें यहां बताया गया है महत्वपूर्ण तो हैं परन्तु निश्चित रूप से

पूरे नहीं हैं। यद्यपि यहां पर प्राप्त बदलावों पर यह विवरण दिया गया है जिससे हम मे क्षण प्रति क्षण पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने की इच्छा उत्पन्न हो। यीशु के साथ उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनः जी उठने में अपनी एकता को क्षण प्रति क्षण जीने के द्वारा हम पवित्र आत्मा से निरंतर परिपूंर्ण हो सकते हैं।

आइये, बिना किसी विलम्ब से यीशु के साथ अपनी एकता को अब जीना प्रारम्भ करें और पवित्र आत्मा से निरंतर परिपूंर्ण होने के आशीषित जीवन को अनुभव करें।

अध्याय 11

पाप से स्वतन्त्रता

जॉन ने फिलिप से कहा, '' सैमुएल को वह बातें बताओ जो भोजन करते समय तुमने मुझसे कहीं थीं''।

यीशु के साथ अपनी एकता को जॉन को अनेक वर्षों से जानता था और थोड़े समय के लिए उसने इसे अनुभव भी किया था। यद्यपि, फिलिप को यीशु के साथ अपनी एकता का कोई ज्ञान नही था। यहां तीसरा व्यक्ति सैमुएल एक ऐसा पुराना विश्वासी था जिसने अनेक वर्षों से यीशु के साथ अपनी एकता को समझा और अनुभव किया था। जॉन ने उपरोक्त कथन इसलिए कहा था जिससे कि इस परिपक्व विश्वासी को फिलिप को हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनः जी उठाने के बारे में बताने का एक अवसर प्राप्त हो।

फिलिप ने कहा, ''भोजन करते समय मैं इसे बता रहा था कि मैं किसी पर क्रोधित हूँ और इस क्रोध का समाधान नही कर पा रहा हूँ।'' इसके बाद उनके मध्य एक परिचर्चा हुई जिसमें इस परिपक्व विश्वासी ने, नये विश्वासी को यह दर्शाया कि वह कैसे, यीशु के साथ अपनी एकता के कारण इस क्रोध से स्वतन्त्र हो सकता था। इसके परिणाम स्वरूप वे दोनो युवा आनन्दित होकर वहां से गये थे।

यह अध्याय हमें अच्छा समाचार सिखाता है कि हमें पाप

के नियंत्रण के अर्न्तगत नही रहना है जिससे हममें ग्लानि और और सफलता की भावनायें उत्पन्न होती हैं।

''पाप'' और ''पापों'' से स्वतन्त्रता

जब मैने एक भले व्यक्ति से पूछा, कि वह कैसा अनुभव कर रहा था तो उसने बताया, '' मेरा अलसर (फोड़ा) मुझे कष्ट दे रहा है।''

मैंने पूछा, ''इससे आपको क्या अनुभव होता है।''

उसने उत्तर दिया, ''यह कष्ट पहुँचाता है।''

यह अति सम्भव है इस व्यक्ति का अलसर किसी तनाव के कारण उत्पन्न हुआ था। तनाव का एक लक्षण यह अल्सर था, और कष्ट अलसर का लक्षण था। आत्मिक रूप से हम इस अल्सर से पीड़ित व्यक्ति के समान है हमारे पास एक पापी स्वभाव है–जिसे नये नियम में ''पाप'' कहा गया है– यह हमारे ''पापों'' का कारण है। और ठीक वैसे ही जैसे इस व्यक्ति को अल्सर के कारण कष्ट हुआ था, हमें भी हमारे पापों के कारण कष्ट होता है।

हम इस विषय में सुनिश्चित हो सकते हैं कि इस अल्सर से पीड़ित व्यक्ति के दर्द का इलाज डाक्टर ने किया था, तो उसने उस तनाव का भी इलाज किया था जिसके कारण उसे यह कष्ट था। इसी प्रकार से, परमेश्वर ने हमें हमारे ''पाप'' (शरीर), हमारे ''पापों'' से जो कष्ट उत्पन्न करते हैं, स्वतन्त्रता का एक तरीका प्रदान किया है।

लोग पूछते हैं, ''क्या आप यह सिखा रहे हैं कि हम सिद्ध बन सकते हैं और कभी ''पाप'' नही कर सकते हैं ?''

यह बड़ी दृढ़तापूर्वक कहा जाना चाहिए, कि हम विश्वासी जब इस जीवन को छोड़ते हैं तभी हम पाप से पूर्णयता स्वतन्त्र होगे। फिर भी इस जीवन में हम ''पाप'' और ''पापों'' और उसके द्वारा कष्ट से एक बढ़ती हुई स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकते हैं।

क्योंकि परमेश्वर की अनेक सन्तानें ग्लानि का अनुभव

करती हैं और यह मानती हैं कि उनके पाप अन्य लोगों की अपेक्षा बड़े गम्भीर हैं तो उनके लिए यह एक प्रोत्साहन हो सकता है कि वे बाइबल के अनुसार उन पापों की कुछ सूचियों का पुनः अवलोकन करें जिन पापें को करने की हम सब में सम्भावना है।

> ''पर अब तुम भी इन सब कोः अर्थात् क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा, और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है'' (कुलुस्सियों 3ः 8–9)।
>
> ''शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन। मूर्त्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म। डाह, मलवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के ऐसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे'' (गलातियों 5ः 19– 21a)।

ये दोनों सूचियां उन गद्याशों में मिलती हैं जो इंगित करते हैं कि हम इनसे स्वतन्त्र हो सकते हैं। हमारे लिए यह मानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि जिन पापों ने हमें दास बना रखा है चाहे वे काई भी पाप क्यों न हों, उनसे यह स्वतन्त्रता सम्भव है।

यहां यह बताने की आवश्यकता है कि हमारे पुराने मनुष्यत्व के अनेक ऐसे लक्षण हैं जिन्हें हम सम्भवतः पाप कहना नही चाहते हैं, उनसे भी हम स्वतन्त्रता पा सकते हैं।

जैसे कि, चिन्ता से स्वतन्त्रता पाना सम्भव है। हमारा भविष्य कैसा होना चाहिए इस विषय में जो हम विचार रखते हैं, उसके कारण हम चिन्ता करते हैं। जब परस्थितियां बदल जाती है जो हमें यह सोचने पर विवश कर देती है कि हमारे विचार पूरे नही हो सकते हैं, तो इससे हम चिन्ता करने लगते हैं यद्यपि जब हम

अपनी इस मनोवृति से स्वतंत्र होते हैं कि हम सोचते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं, तब हम अपनी इस दृष्टिकोण से भी स्वतन्त्र हाते हैं कि जो हमारे विचार से होना चाहिए। अतः हम चिन्ता से स्वंतन्त्र होने के योग्य हैं।

हमारे जीवन की अन्य बातें जिन्हें सम्भवतः उन श्रेणी में रखना चाहेंगे जिन्हें हम पाप कहना नही चाहते हैं वे निम्नलिखित हैं : ढिठाई, अपने शरीर पर अत्याधिक ध्यान देना, आलोचना की एक आत्मा और निराशा।

यीशु मसीही के साथ अपनी एकता को अनुभव करने के द्वारा स्वंतन्त्रता

रोमियों 6: 2 में पौलुस लिखता है कि विश्वासियों को पाप नही करते रहना है क्योंकि वे ''पाप'' के प्रति मरे हुए हैं''। रोमियो 6: 6 में पौलुस बताता है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया है। जैसा कि हमने देखा है:

मसीही जीवन में हमारे लिए कुछ बातें सत्य हैं जिनका अनुभव हम तब तक नही करेंगे जब तक हम उन्हें अपने लिए सत्य नही मानतें हैं और उनका अनुभव करना नही चुनते हैं।

अतः हमारी आवश्यकता है कि उन बातों को मानने और चुनने के द्वारा जिन्हें हम ने पहले के अध्यायों में सीखा था, अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने ,दफनाने जाने और पुनरूत्थान को अनुभव करें।

कुछ लोगों का गलत ढंग से यह सोचना है कि जिस विजय की उन्हें आवश्यकता है वह पूरी तरीके से उनको मिल चुकी है क्योकि उन्होने अपने पापों की क्षमा प्राप्त कर ली है। प्रेरित यूहन्ना ने इसे 1 यूहन्ना 1:9 में बड़े सुन्दर ढंग से बताया है,

> ''यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।''

हमारे पापें से उत्पन्न कष्टों से तब हम अधिक स्वंतन्त्रता अनुभव करते हैं जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं और क्षमा ग्रहण करते हैं। यद्यपि पाप से स्वंतन्त्रता के बारे में हम केवल यही जानते हैं, तो हम पापी स्वभाव (शरीर) और उन पापों के जो अब हमें अपना दास बना लेते हैं, उनके बन्धन में निंरन्तर रहेंगे।

अंश–अंश करके स्वतन्त्रता

बहुधा जब एक व्यक्ति अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनः जी उठने को सर्वप्रथम अनुभव करता है, तब परमेश्वर उसे अनेक सप्ताहों तक लगभग निरंतर विजय प्रदान करता है। यद्यपि, यह हमें केवल उस प्रकार के जीवन को दर्शाने के लिए है जिसे हम यीशु के साथ अपनी एकता को जीने के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। यह परमेश्वर का सर्वसत्ता सम्पन्न कार्य है। जब प्रभु सत्ता का यह समय काल पूरा हो जाता है तो हम वृद्धि करने की अवधि से होकर गुजरते हैं जिसके परिणाम से हमें धीमे–धीमे स्वतन्त्रता मिलती है इसके बाद वास्तविक वृद्धि आरम्भ होती है।

रोमियों 6: 12 में पौलुस चेतावनी देता है, '' इसलिए पाप को अपने मरणहार शरीर में प्रभुता न करने दो''। रोमियों 7: 17 में पौलुस हमारे पापी स्वभाव का वर्णन इस प्रकार करता है जैसे कि मानो यह अन्य व्यक्ति हममें रह रहा है और हमें उन बातों को करने के लिये बाध्य कर रहा है जिससे हम घृणा करते हैं और वास्तव में जिन्हें करने की इच्छा नही रखते हैं।

रोमियो 6: 11– 23 के पूरे प्रसंग में हमारी इस आवश्यकता पर बल दिया गया है कि क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में यीशु के साथ अपनी एकता को निरन्तर अनुभव करें। इस गद्यांश की प्रतिज्ञायें हमें यह आश्वासन देती हैं कि जब यीशु के साथ हम अपनी एकता को अनुभव करना जारी रखते हैं तो थोड़ा–थोड़ा करके हम अपने पापी स्वभाव के नियंत्रण से स्वतन्त्र

होंगे– और, परिणामस्वरूप, हम उन पापों से स्वतन्त्र हो जायेंगे जो हमारे पापी स्वभाव से उत्पन्न होते हैं।

पापों से स्वंत्रन्त्रता का अनुभव करना एक प्याज को छीलने जैसा है। आप एक परत को हटाते हैं और उसके नीचे दूसरी परत होती है। जब हम उन बातों से स्वतन्त्रता पाने का अनुभव करते हैं जिन्होंने हममें दुख को उत्पन्न किया है– किसी किसी व्यक्ति के साथ अनेक को प्रगट करेगा जिनपर हमने पहले कभी ध्यान नही दिया है। हमारे आस–पास के लोग सम्भवतः उन्हें वर्षो से हममें देखते आये हैं। अब पवित्र आत्मा उन्हें हम पर प्रगट करेगा।

जब परमेश्वर इन छिपे हुये पापों को प्रगट करता है तो हमें तुरन्त ही उनसे स्वतन्त्रता पाना आरम्भ करना चाहिए परमेश्वर एक समय पर सम्भवता हमारे केवल दो या तीन ही पिछले पापों को प्रगट करेगा जिनसे हम अभी तक अनभिज्ञ थे। जब हम इन दो या तीन पापों से बढ़ती हुई स्वतन्त्रता ग्रहण करते हैं। तब वह हम पर अन्य पापों को प्रगट करेगा।

मूसा और यहोशू के द्वारा उन लोगों की सूचि में गेशूरिया थे, जिन्हें कनान से निकालना था। जबकि सूचिबद्ध की हुई अन्य–जातियों का विवरण इस्राएलियों की विजय के बाद दिया गया है परन्तु आगे गेशूरियों का वर्णन आगे कहीं नही हुआ है।

यीशु के साथ हमारी एकता के सम्बन्ध में किसी विशेष पाप के संदर्भ में हमें कुछ विशेष पाप से लगभग एक पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है। यद्यपि, हमें अपने बहुत से पापों से एक लम्बे समय तक संधर्ष करना है। अन्य के बजाये कुछ पाप हममें अधिक गहराई से जड़ पकड़े होते हैं। वे पाप समय के साथ–साथ बार–बार उभरते हैं। फिर भी हमें निराश नही होना चाहिए। आइये, हमारे क्रूस पर चढाये जाने, दफनाये जाने और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में पूंर्ण विश्वास से इन अधिक ढीठ पापों से स्वतन्त्रता पाने को मानना और चुनना जारी रखें।

आइये, हम किसी भी पाप के साथ सुविधाजनक स्थिति में न रहें। ठीक वैसे ही जैसे इस्राएलियों ने कनान के सभी निवासियों को नाश नही किया था जबकि उन्हें ऐसा करने की आज्ञा दी गयी थी, वैसे ही परमेश्वर के कुछ चुने हुए सेवकों ने इच्छापूर्वक अपने सभी ज्ञात पापों के साथ व्यवहार नही किया है।

परमेश्वर ने आज्ञाकारी इस्राएलियों से कहा था, कि जिन जातियों को उन्होने नाश नही किया था वे उनकी पसली में काँटो के समान होंगे (न्यायियों 2: 3)। इस्राएल का इतिहास इस भविष्यवाणी के सत्य होने को प्रमाणित करता है। ऐसा कोई भी पाप जिससे हम स्वतन्त्रता पाना नही चुनेंगे वह हमारे साथ इसी प्रकार से करेगा।

हमें इस बात पर ध्यान देना है कि उस बिन्दु तक पहुँचने जैसी कोई बात नही है जहां हम इस जीवन में दोबारा पाप नही करते हैं। फिर भी हम पाप से एक बढ़ती हुई स्वंतन्त्रता अनुभव कर सकते हैं, जो हमारे उस पराजित जीवन में एक बड़ा सुधार है जिसे हममें से कुछ लोगों ने अपना एकमात्र चुनाव मान लिया है।

आइये, अपने हृदयों में आनन्द और विश्वास के साथ यह माने, कि हम थोड़ा–थोड़ा करके उस पाप और उनके परिणामों से स्वंतन्त्र हो सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप हम उस तरीके से जीवन जी रहे हैं जैसे जीवन की हम इच्छा नही रखते हैं और जो उस जीवन से अत्याधिक तुच्छ है जैसा परमेश्वर का हमारे लिए अभिप्राय था। हम इस बारे में आश्वस्त हो सकते हैं कि पाप से हमारी स्वतन्त्रता को अनुभव करने में हम प्रगति करने के योग्य होंगे।

इसे सम्भव बनाने के लिए हमें क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में यीशु के साथ अपनी एकता को अनुभव करना जारी रखना है।

अध्याय 12

संसार से स्वतंत्रता

आज युवा अपने अभिभावकों से कुछ बातों को करने के प्रति अनुमति पाने का प्रयास करने के लिये यह दावा करते हैं, ''प्रत्येक व्यक्ति यह कर रहा है।''

पौलुस प्रेरित ने कहा था, ''और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो'' (रोमियो 12:2)। यह गद्यांश हमें यह दर्शाता है कि केवल युवा लोग ही ऐसे नहीं हैं जो वह करने की इच्छा रखते हैं जो अन्य लोग कर रहे हैं।

यह सदृश बनने की इच्छा हम सब में है – जबकि चाहे हम परमेश्वर की नया जन्म प्राप्त सन्तानें क्यों न हो। इसलिये पौलुस के कथन के प्रकाशन में, वे सभी विश्वासी जो सदृश बनने का प्रयास नहीं भी करते हों अन्ततः संसार के मापदण्डों के सदृश बन जायेंगे। पौलुस सदृश बनने की अपनी स्वयं की प्रवृति के अति जागरूक था और उसने इसे स्वीकारा था। वह लिखता है :

> ''पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमंड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं'' (गलातियों 6:14)।

सभी विश्वासियों को संसार के सदृश बनने की इच्छा के प्रति जागरूक होना चाहिये। हम सभी को उन क्षेत्रों को समझने

के लिये समझ और ध्यान देना चाहिये जिसमें हम पहिले से संसार के सदृश बन चुके हैं।

हम जितना अनुभव करते हैं उसे कहीं अधिक सांसारिक हो सकते हैं,

'जितना हम अनुभव करते हैं हम उससे
अधिक सांसारिक हो सकते हैं
''तुम उतने ही सांसारिक हो जितना तुम हो सकते हो।''

यह प्रभु के चकित करने वाले वचन, उस युवक के हृदय के प्रति थे जो अनेक महीनो से यीशु के साथ अपनी एकता को जी रहा था।

क्योंकि वह पौलुस की इस गवाही को जानता था कि संसार उसकी दृष्टि में और वह संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया था, अतः वह स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर के प्रति जीवित सोचता था, वह स्वयं को भी संसार के मरा हुआ और अपने प्रति, संसार को मरा हुआ मानता था। उसने ऐसा इसलिये किया था क्योंकि वह अपने जीवन में एक पूरी विजय चाहता था यद्यपि वह अपने एक सांसारिक व्यक्ति होने के बारे में जागरूक नहीं था। अतः जब परमेश्वर ने उस पर यह प्रगट किया कि वह सांसारिक है, तो वह अचम्भित था।

अपनी जिस सांसारिकता के लिये वह दोषी था उसमें कोई अनैतिक बात नहीं थी। यह कुछ ऐसा था जिसमें व्यवहारिक रूप से सारे मसीही संलग्न रहते हैं। परन्तु परमेश्वर ने इस युवक को यह बताया था कि उसका इस विशेष बात में संलग्न होना सांसारिकता थी।

परमेश्वर के अनेक बड़े समर्पित सेवक भी इसी युवक के समान हैं। वे कुछ क्षेत्रों में सांसारिक हैं परन्तु वे यह नहीं जानते हैं।

ऐसा संसार के वास्तविक स्वभाव

की गलत समझ के द्वारा है

हम में से अनेक लोग सोचते हैं कि संसार का अभिप्राय केवल ऐसे पश्चाताप रहित व्यक्तिविशेष हैं जिन्होंने हमारे प्रभु को नकारा है और जो परमेश्वर के विरूद्ध खुले रूप से पाप करते हैं। हमें संसार को इस रूप से सोचना चाहिये कि ये ऐसे लोग हैं जो शैतान ओर शरीर के नियंत्रण के अर्न्तगत जीवन जी रहे हैं। संसार के लोग पवित्र आत्मा में नहीं चल रहे हैं।

यह सम्भव है कि हम पर प्रभाव डालने वाले अनेक लोग अपने में सांसारिकता के लक्षण रखते हैं। शैतान शरीर और ''संसार'' ने उन्हें प्रभावित किया है कि वे जीवन जीने के ऐसे तरीकों को अपनायें जो पवित्र शास्त्र में दी गयी शैली के विरूद्ध हैं। कभी–कभी वे ये भी अनुभव नहीं करते हैं कि वे संसार के सिद्धान्तों के साथ सहमत हो रहे हैं।

हमें पवित्रशास्त्रों के अतिरिक्त भी जीवन पर दृष्टिपात करने के तरीके को अपनाना है, वे कहते हैं, जहां पवित्रशास्त्र से सहमत नहीं होते हैं, वहां वे संसार के सिद्धान्तों को जी रहें हैं।

एक धातक, बिना खोजे गये कैंसर के समान जो सांसारिक दर्शन हममें छिपे हुये हैं, वे हमारे आत्मिक जीवन और कुशलता को नाश कर सकते हैं।

ऐसा मसीही जीवन शैली के वास्तविक स्वभाव की गलत समझ के द्वारा होता है

सांसारिकता के गुप्त रूप से आधुनिक सुसमाचारीय मसीहत में प्रवेश करने का एक कारण मसीही जीवन शैली की एक गलत समझ है। हमने कुछ ऐसी शब्दावलियों को अपना लिया है जो नये नियम की शब्दावलियों के केवल कुछ ही समानता में हैं।

जब हम ऐसे विश्वासियों को वर्णित करना चाहते हैं जिनका मसीही जीवन अन्य लोगों के लिये एक अच्छा उदहारण है तब हम उन्हें बहुधा परमेश्वर के लिये ''समर्पित'' और ''निष्ठावान''

मसीही कहते हैं। यद्यपि इस मनोवृति में इन शब्दों को नये नियम में कभी भी उपयोग नहीं किया गया है। उन्हें ''सन्त'' कहना ज्यादा अच्छा होगा। क्योंकि इस शब्द का आधारभूत अर्थ ''उपलब्ध'' है।

हम यह सोचने के इतने आदी हो चुके हैं कि एक मसीही के लिये ''समपर्ण'' बहुत बड़ी बात है। अर्थात हम इस बात के सुनिश्चित हैं कि जो लोग परमेश्वर के लिये एक जोशीला उत्साह रखते हैं वे वास्तव में उसे प्रसन्न करते हैं। लेकिन ऐसा होना आवश्यक नहीं है। नये नियम में परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली एक जीवन शैली को वर्णित करने के लिये जिन महत्वपूर्ण शब्दों का उपयोग किया गया था, वे विश्वास, भरोसा, प्रतीत करना, सन्त और पवित्रीकरण हैं। नया नियम बार–बार हमें सिखाता है कि हमें क्षण प्रति क्षण सभी बातों में परमेश्वर पर एक पूर्ण निर्भरता की अवस्था में अपने जीवनों को व्यतीत करना चाहिये।

जब हम यह सोचते हैं कि मसीही जीवन के लिये ''समपर्ण'' सर्वोच्च मापदण्ड है, तब ''विश्वास'' के क्षेत्रों में रूकावटें आयेंगी। यहां हम खुद पर भरोसा करने की प्रवृति रखेंगे। यद्यपि पवित्रशास्त्र बताता है,

''धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा'' (रोमियो 1:17)। इब्रानियो 11:6 यह कहता है, ''कि विश्वास के बिना उसे प्रसन्न करना असम्भव है।''

आप सम्भवतः पूछ सकते हैं, ''क्या आप हमें सिखा रहे हैं, कि नया नियम यह बताता है कि एक व्यक्ति बिना समपर्ण के मसीही जीवन व्यतीत कर सकता है?'' यदि समपर्ण शब्द से आप का अभिप्राय यीशु के लिये अपना सर्वोत्तम प्रयास करना है तो इस प्रश्न का उत्तर ''हाँ'' है। परन्तु यदि समपर्ण शब्द से आप का अभिप्राय परमेश्वर के लिये उपलब्ध होना है तब उत्तर ''नहीं'' में है।

एक विश्वासी जो विश्वास की नये नियम की अवधारणा के अनुसार जीवन जीता है वह सब बातों के लिये प्रत्येक क्षण परमेश्वर

पर भरोसा करता है। इस प्रकार के विश्वास के साथ हम उस पर हमें यह दिखाने के लिये भरोसा कर रहें हैं कि आगे क्या करना है। यह एकमात्र वही व्यक्ति है जो परमेश्वर को उपलब्ध है कि इस प्रकार के विशेष विश्वास के अनुसार जीवन व्यतीत करे।

परमेश्वर में केवल इस प्रकार के विश्वास के साथ जीवन जीने के द्वारा ही आप अपने शरीरों को एक जीवित बलिदान के रूप में चढ़ा सकते हैं (रोमियो 12:1) अथवा, रोमियों 6:13 का आज्ञा पालन करते हुए, अपने शरीर के अंगों को उसके प्रति धार्मिकता के हथियारों के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। जब हम परमेश्वर पर हमें यह दिखाने के लिये भरोसा करते हैं कि आगे हमको क्या करना है और फिर उसकी अगुवाई के अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं, तब हम वास्तव में उसके प्रति उपलब्ध है।

जब हम समपर्ण वाले प्रस्ताव के समर्थन में विश्वास वाले प्रस्ताव को नकारते हैं तब हम बहुधा संसार के सिद्धान्तों को अपना लेते हैं। ऐसा इसलिये है क्योंकि हमारे जीवनों के कुछ ऐसे क्षेत्र होंगे जिनके लिये हम परमेश्वर के मार्गदर्शन को नहीं खोज रहे हैं। सम्भवतः इसका और अधिक प्रबल एक उदाहरण नहीं हो सकता है, जो धन को पाने और उपयोग करने के प्रति अनेक मसीहियों का तरीका है।

यीशु के साथ अपनी एकता को अनुभव करने की स्वतन्त्रता

संसार से स्वतन्त्रता पाने की हमारी आशा, पाप से स्वतन्त्रता पाने की हमारी आशा के समान है—यह यीशु के साथ अपनी एकता को अनुभव करने के द्वारा हमें प्राप्त होती है।

अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने को

अनुभव करने की स्वतन्त्रता

यीशु के साथ अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने कारण हम सम्भवता संसार पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। पौलुस की गवाही को याद करें :

> ''पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमंड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं'' (गलातियों 6:14)।

पौलुस के इस कथन में हम पुनः क्रूस के प्रति एक अधिक गहरे पक्ष को देखते हैं जितना हममें से अधिकतर लोगों ने अनुभव नहीं किया था अथवा इसका लाभ नहीं उठाया था। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि चुनने और विश्वास करने से, अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने को अनुभव करने के द्वारा हमें संसार से कैसे स्वतन्त्रता मिल सकती है।

चुनने और जानने के द्वारा हम सांसारिकता के जागरूक होते हैं

हम उस युवक के समान हो सकते हैं जिसने एक सांसारिक दर्शन स्वीकार कर लिया था और वह यह जानता भी नहीं था। हमने वर्षों से परमेश्वर से प्रेम किया है और उसके साथ चलें हैं। हममें एक सांसारिक व्यक्ति होने की सम्भवतः कोई भी इच्छा नहीं है फिर भी अन्जाने में हम संसार के कुछ दर्शनों को स्वीकार कर सकते हैं। यह भी सम्भव है कि हमारे मसीही आदर्शों ने सांसारिकता की एक जीवन शैली के प्रति हमारी अगुवाई की है।

आइये, अब हम यह मानना शुरू करें कि संसार हमारे प्रति क्रूस पर चढ़ाया गया था और हम संसार के प्रति क्रूस पर चढ़ाये गये थे। यदि हममें सांसारिकता के छिपे हुए लक्षण विद्यमान हैं तो परमेश्वर उन्हें प्रगट करने में विश्वासयोग्य होगा।

यह चुनने और मानने के द्वारा

कि हम सांसारिकता से स्वतन्त्र किये गये हैं

हमारी सांसारिकता के कुछ प्रगटीकरण सम्भवतः अत्याधिक कष्टदायक हो सकते हैं। हमें इस आवश्यकता के प्रति दोषी ठहराया जा सकता है कि हमें उन आदतों को छोड़ना है जो अनेक वर्षों से हम में विकसित हो गयी हैं। उन पर विजय पाना हमको असम्भव लग सकता है। परन्तु, ऐसा नहीं है।

ठीक वैसे ही जैसे हम स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर के प्रति जीवित समझ सकते हैं उसी प्रकार से हमें यह भी मानना है कि संसार हमारे प्रति क्रूस पर चढ़ाया गया है और हम संसार के प्रति क्रूस पर चढ़ाये गये हैं। जब हम ऐसा एक इस प्रकार के हृदय के साथ करते हैं जो संसार स्वतन्त्र होने का चुनाव करता है, तब परमेश्वर हमें धीमे–धीमे संसार से स्वतन्त्र करेगा।

जब पवित्र आत्मा सांसारिकता के लक्षणों को हमें हमारे जीवनों में दिखाता है तो हमें विशिष्टतापूर्वक और तुरन्त उनका समाधान करना चाहिये।

परमेश्वर हमें सांसारिकता के ऐसे लक्षणों को भी दर्शा सकता है जो मसीही आन्दोलन के एक अंग बन गये हैं। परिणामस्वरूप कुछ विषयों के सम्बन्ध में जिस दिशा में परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसे अपने घनिष्ठत मसीही मित्रों को बताने से हम घबरा सकते हैं, क्योंकि हमें डर है कि वे नहीं समझेंगे।

फिर भी हमें सांसारिकता के किसी भी ऐसे क्षेत्र का समाधान करना चाहिये जो परमेश्वर हमें दर्शा रहा है और हमें यह तुरन्त ही करना होगा जब पवित्र आत्मा उन्हें प्रगट करता है। इसमें विलम्ब करना सम्भवतः इसे हमारे लिये और कठिन बना सकता है, कि सांसारिकता के उन लक्षणों को दूर करें जो हमारी आत्मिक सामर्थ को समाप्त कर देते हैं। इसमें विलम्ब करना पवित्र आत्मा को शोकित भी करेगा और बुझाएगा भी, जैसा परमेश्वर से प्रेम करने

वाला कोई भी व्यक्ति नहीं करना चाहता है।

अपने पुनरूत्थान को अनुभव करने के द्वारा स्वतन्त्रता

नया नियम बड़े निश्चियपूर्वक हमें सिखाता है कि यीशु के साथ हमारे पुनरूत्थान के द्वारा हमें संसार से स्वतन्त्रता मिलती है।

यह याद रखें कि, हमारे पुनरूत्थान के तीन अभिप्राय हैं : (1) यीशु मसीह हममें बने रहने के लिये आता है। (2) हम मृतकों में से जिलाये गये हैं। (3) हम यीशु के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठे हुए हैं।

रोमियो 6:4 का शाब्दिक अनुवाद दर्शाता है कि हमारा प्रभु ''मृतकों में से जी उठा था।'' हमारा पुनरूत्थान ''मृतकों'' में से है। जब मसीही बनने पर हम क्रूस पर चढ़ाये गये, दफनाये गये थे और पुनः जी उठे थे तब हम बिना उद्धार प्राप्त लोगों के मध्य से उठाये गये थे। हम यीशु के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठाये गये थे।

जब हम यीशु के साथ अपने पुनरूत्थान पर विश्वास करते हैं और उसे चुनते हैं तब हम अपने पुनः जी उठने का अनुभव करते हैं। इससे भी अधिक हम अविश्वासियों की घनिष्ठ संगति के बजाये परमेश्वर की अधिक घनिष्ठ संगति में हम जीवन जीते हैं। इस अनुभव में होकर हम संसार से और अधिक स्वतन्त्रता पाना जारी रखते हैं।

हमें न केवल पाप और संसार पर विजय पानी है परन्तु हमें व्यवस्था से स्वतन्त्र होकर, अपने मसीही जीवनों को जीना चाहिये। आगे हम इस पर ध्यान देंगे कि इसका क्या अभिप्राय है।

अध्याय 13

व्यवस्था से स्वतन्त्रता

पौलुस प्रेरित लिखता है कि विश्वासी लोग कम से कम एक समय काल में व्यवस्था के अर्न्तगत जीवन व्यतीत करेंगे। इसके बाद वह समझाता है कि व्यवस्था के अर्न्तगत जीवन जीने के इस समय काल का उद्देश्य हमें अनुग्रह के जीवन से परिचित कराना है।

''और व्यवस्था बीच में आ गई, कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ'' (रोमियो 5:20)।

रोमियो 7:7–25 में पौलुस व्यवस्था के अर्न्तगत जीवन जीने में अपने अनुभव की और इसका परिणाम कैसे एक प्रकार की आत्मिक ''मृत्यु'' हुआ था जिसने अनुग्रह पाने के लिये परमेश्वर के पास आने में उसकी अगुवाई की थी, इसकी गवाही देता है।

रोमियो 7:1–6 में पौलुस अपनी गवाही को यह दर्शाने के द्वारा आरम्भ करता है कि हम यीशु के साथ अपनी एकता को अनुभव करने के द्वारा व्यवस्था से स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकते हैं।

व्यवस्था से सम्बन्धित इन गद्यांशों ने हम मसीहियों का ध्यान अधिक आकर्षित नहीं किया है। फिर भी यदि हमें बहुतायत का जीवन अनुभव करना है तो हमें व्यवस्था के साथ हमारे सम्मिलित होने और उससे स्वतन्त्रता दोनो को ही समझना आवश्यक है।

हमारे अनुभव किये जाने के अपेक्षा स्वतन्त्रता

अधिक महत्वपूंर्ण हो सकती है

व्यवस्था से हमारी स्वतन्त्रता उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है जैसा कुछ विश्वासी अनुभव करते हैं। क्योंकि हममें से अनेक जितना हम अनुभव करते हैं उसके बजाये व्यवस्था के अनुसार जीवन जीने के अधिक दोषी हैं।

''विश्वास के द्वारा अनुग्रह से तुम्हारा उद्धार हुआ है'' (इफिसियो 2:8)। विश्वासी सच्चाई पर अनन्त काल तक दृढ़ रहेंगे। हम यह जानते हैं कि किसी को भी, व्यवस्था का पालन करने के कारण, न तो उद्धार प्राप्त हुआ है और न ही कभी प्रदान किया जायेगा। फिर भी अनेक विश्वासी, इसे अनुभव किये बिना, मसीही जीवन को जीने के लिये अपनी इस पहुंच में अत्याधिक व्यवस्थावादी हैं।

रोमियो 8:3 में पौलुस लिखता है, ''क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के द्वारा दुर्बल होते हुए नहीं कर सकी।'' यहां ''व्यवस्था'' शब्द व्यवस्था के उस ''व्यवस्था प्रबन्ध'' का संदर्भ देता है जिसे परमेश्वर ने यहूदियों के साथ किया था जिसका वर्णन निर्गमन की पुस्तक में मिलता है।

ध्यान दें कि ''व्यवस्था प्रबन्ध'' शरीर के कारण दुर्बल था। यह हमें बताता है कि परमेश्वर की योजना में, ''व्यवस्था प्रबन्ध'' नियमों और पापपूर्ण स्वभाव के मध्य है। पापपूर्ण स्वभाव अपने में – अपनी इस मनोवृति कि हम सोचते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं – में भरोसा रखना है।

यह सुनिश्चित करने के लिये कि शरीर अपने में विश्वास रखता है, आइये, उस ऐतिहासिक घटना को देखें जब यह प्रबन्ध किया गया था। तीन अवसरों पर – निर्गमन 19:8; 24:3, 7 – इस्राएलियों ने कहा था, कि परमेश्वर जो चाहता है वे वह सब करेंगे। यह व्यवस्था प्रबन्ध का स्वभाव है और इस्राएलियों का इरादा

उन सभी नियमों को पालन करने का था जिनके लिये परमेश्वर ने आज्ञा दी थी – परन्तु वे इसका पालन करने में अनेक बार असफल हुए थे।

एक मसीही जो एक व्यवस्थावादी जीवन जी रहा है वह एक ऐसा व्यक्ति होगा जो प्रतिदिन प्रातः दस आज्ञाओं को इसलिये पढ़ता है कि पूरे दिन वह इनके अनुसार जीवन व्यतीत करे। हममें से अधिकतर लोग ऐसा नहीं करते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि यह असम्भव है।

जबकि, हममे से अनेक लोगों ने परमेश्वर से यह प्रतिज्ञा की है, कि उदाहरणस्वरूप, हम एक दिन में इतनी बार प्रार्थना करेंगे। जब हमने यह किया था, तो हमने स्वयं को उतना ही व्यवस्था के अर्न्तगत रखा था जितना कि हमने दस आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास किया था।

यह नियम ऐसे किसी भी मसीही से आ सकते हैं जिसने हमें परमेश्वर का वचन हमारे सारे जीवन भर सिखाया था – अथवा परमेश्वर के किसी ऐसे सेवक के द्वारा यह आये हैं जो मानता है, कि वह मसीही जीवन जीने में हमारी सहायता कर रहा था। यह नियम कहां से आये थे इसका कोई तात्पर्य नहीं है। यहां आशय यह है कि हम अपनी सामर्थ में उनका पालन का प्रयास कर रहे हैं – और यह हमारे पापपूंर्ण स्वभाव की गतिविधि है।

रोमियो 7:21 में पौलुस प्रगट करता है कि हम तब भी व्यवस्था के अनुसार जीने के दोषी हैं चाहे हम भलाई करने को चुनने से अधिक कुछ और नहीं भी कर रहे हों। इस जीवन जीने को जो बात व्यवस्था के अनुसार बताती है वह यह सोच है कि ''मैं करूंगा'' अथवा ''मैं नहीं करूंगा''। दुर्भाग्यवश, अनेक अच्छे विश्वासी व्यवस्थावाद के अर्न्तगत जी रहें हैं और वे इसे नहीं जानते हैं।

जब हम व्यवस्था के अर्न्तगत जीवन जीने का

प्रयास कर रहे है, तब हम शरीर के कामों के दोषी होंगे

जब हम अपनी सामर्थ में परमेश्वर की सेवा करते हैं, तब हम शरीर के कामों के दोषी होंगे। हम यह पहिले ही देख चुके हैं कि व्यवस्था का कोई भी प्रबन्ध, नियमों और शरीर के मध्य एक प्रबन्ध है। तब व्यवस्था के अनुसार जीवन जीने के परिणाम पर ध्यान दें :

> ''शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन। मूर्त्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म। डाह, मलवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के ऐसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे'' (गलातियों 5:19–21a)।

व्यवस्था से स्वतन्त्रता, क्योंकि हम शरीर से स्वतंत्रता है, अतः यह इन धातक पापों से भी स्वतंत्रता है। अब हम शरीर के कामों पर और अधिक परिचर्चा नहीं करेंगे, परन्तु व्यवस्थावादी जीवन जीने से उत्पन्न दो बातों का विवरण हमें देना होगा।

पहिली बात, जो अपने नियमों का पालन में अत्याधिक कठोर हैं वे ऐसे लोग भी हैं जो अन्य लोगों को अत्याधिक जांचने का स्वभाव रखते हैं। इसका कारण यह है कि जब शरीर (अथवा पापपूंर्ण स्वभाव), नियमों को स्थापित करता है, तो जब अन्य लोग इसके नियमों को नहीं मानते हैं, तो यह दोषी ठहरता है।

दूसरा, व्यवस्थावादियों की ओर से दृढ़ सम्पंर्ण के बावजूद, परमेश्वर के प्रति उपलब्धता असम्भव है। रोमियो 8:6–7 में पौलुस प्रेरित बताता है, ''शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है,.....(यह) परमेश्वर से बैर रखना है।'' जब हम यह सोच रखते हैं कि हम परमेश्वर के बजाये अधिक बुद्धिमान हैं, तब हम परमेश्वर के सुझावों

को नहीं मानेंगे कि हमें क्या करना चाहिये। हम स्वयं को जानबूझ कर परमेश्वर की इच्छा को अस्वीकार करते हुये भी पा सकते हैं।

क्योंकि व्यवस्था के अनुसार जीने का परिणाम सदैव आत्मिक मृत्यु होता है

पवित्रशास्त्र में अत्यन्त गम्भीर कथनों में रोमियो 7:9 में दी गयी पौलुस की वह गवाही है जहां वह अपने एक मसीही बनने के बाद व्यवस्थावाद में पुनः गिर जाने को बताता है। वह कहता है, ''मैं तो व्यवस्था बिना पहले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आयी, तो पाप जी उठा और मैं मर गया।''

व्यवस्था के अनुसार जीने का अभिप्राय पौलुस के लिये ''मृत्यु'' था।

कुछ लोग उसके इस कथन का सन्दर्भ, उसके मसीही बनने के पहिले का मानते हैं। यद्यपि इस गद्यांश का सन्दर्भ यह इंगित करता है कि यह एक मसीही गवाही है। एक मसीही होने के रूप में पौलुस की गवाही को समझने की कुंजी उसके जीवन के एक ऐसे समय–काल को समझना है जब वह ''व्यवस्था के बिना'' था। फिलिप्पियों 3:5 में उसका कथन कि वह ''इब्रानियों का इब्रानी'' था, यह प्रगट करता है कि अपने बचपन से वह व्यवस्था के अर्न्तगत था। अतः यह प्रगट है कि उसके मसीही बनने के पहले, उसके जीवन में कभी भी ऐसा समय नहीं था जब वह ''व्यवस्था के बिना'' था।

यह जानने का एक अन्य तरीका भी है कि पौलुस की यह गवाही उसके मसीही बनने के बाद की है – क्योंकि वह कहता है कि, ''पाप जी उठा'' अथवा जीवित हो गया। इसका यह आशय होगा कि पाप मर गया था परन्तु पुनः जी उठा था।

अधिकतर ऐसे लोग जो व्यस्क होने पर मसीही बने हैं, उनकी गवाही इस वर्णित गवाही के समान ही है। उनके प्रभु यीशु

यीशु मसीह के साथ हमारी एकता

को ग्रहण करने के बाद एक समय–काल तक, उनके जीवन नियमों के अनुसार जीने के किसी विचार के बिना, परमेश्वर के साथ आनन्दपूर्वक जीना था। परन्तु ऐसी स्वतंत्रता के अनेक महीनों के बाद, उनके कुछ अच्छे अभिप्राय रखने वाले मित्रों ने उन्हें सिखाया कि उन्हें प्रार्थना और बाइबिल अध्ययन के लिये नियमित रूप से समय व्यतीत करने के लिये, अपने आपको अनुशासित करना चाहिये। इस अनुशासित होने के प्रयास ने उन्हें व्यवस्था के अर्न्तगत रख दिया, क्योंकि इसने उन पर उनके जीवनों के बोझ को रखा था। अब उन्हें अवश्य ही एक विशिष्ट तरीके से काम करना था।

कैसे पौलुस एक विश्वासी बनने के बाद, व्यवस्था के अर्न्तगत जीवन जीने की ओर लौट सकता था ? व्यवस्था के द्वारा पाप के ''पुनः जीवित'' होने के कथन के ठीक पहले पौलुस लिखता है कि जब उसने लोभ नहीं करने की आज्ञा को याद किया था, तो लोभ उसमें भर गया था।

परन्तु इस जागरूकता का कारण क्या था? यहां हम केवल अनुमान लगा सकते हैं, परन्तु सम्भवतः यह कुछ इस प्रकार से हुआ था। एक दिन जब पौलुस बहुत थका हुआ था तो उसने यह याद करना आरम्भ किया कि अपने मसीही बनने के पहले के दिनों में वह कितना लोभी था। वह एक अति उत्तम फरीसी होने की गहरी चाह रखता था। फिर उसने सोचा, ''मुझे अत्यन्त प्रयास करना चाहिये कि मैं एक मसीही के रूप में उतना लोभी नहीं बनूं जितना कि मैं एक फरीसी के रूप में था।'' यहां व्यवस्था ने प्रवेश कर लिया था।

व्यवस्था के आने पर, मसीही विजय के लिये अब बोझ उस पर था। आत्मविश्वास पुनः वापस आ चुका था। पाप लौट आया था। मृत्यु निकट ही थी।

मृत्यु से, पौलुस का क्या अभिप्राय है? वह शारीरिक रूप से

नहीं मरा था। उसने अपना उद्धार नहीं खोया था। उसका अभिप्राय मन की एक भावनात्मक और आत्मिक दशा है जिसे ''मृत्यु'' शब्द से सर्वोत्तम रूप से बताया जा सकता है। यह मन की वह दशा है जिसे पौलुस रोमियो 7:15 में वर्णित करता है : ''परन्तु मैं जो करना चाहता हूँ वह मैं नहीं करता हूँ, परन्तु वही करता हूँ जिसे करने से मुझे घृणा है।'' क्या किसी ऐसे के समान नहीं जान पड़ता है जिसे आप जानते हैं? ऐसा अवश्य लगता है!

हमने भी उसी मृत्यु का अनुभव किया है जिसे पौलुस ने अनुभव किया था। अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उन्हें क्षमा करो जो हमारे विरूद्ध पाप करते हैं, अनेक प्रकार से सेवकाई करो, और खोये हुओं को गवाही देने का साहस रखो, शायद हम इन बातों को करने की एक गहरी लालसा रख सकते हैं।

फिर भी, चाहे हमारी इच्छा कितनी भी तीव्र क्यों नहीं हो अथवा चाहे हम कितनी बार प्रयास करें, हमें इनमें से किसी भी बात को प्रभावकारी ढंग से करने में स्वयं को अयोग्य पाते हैं। हम विश्वासयोग्यता से प्रयास करते हैं, परन्तु हमारे पास सफल होने की योग्यता नहीं है। हमारी असफलता, एक जीवित मृत्यु है।

हम शायद शरीर के अन्य कार्यों के साथ अपने क्रोध, भय, ईर्ष्या, घृणा और साहसहीनता से घृणा कर सकते हैं। फिर भी, हम इन बातों पर, जिन्हें हम बिल्कुल पसन्द नहीं करते है, विजय पाने की आत्मिक योग्यता कभी नहीं रख पाये हैं। पुनः हमारी असफलता को मृत्यु के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

जब भी व्यवस्था हमारे जीवनों में प्रवेश करती है – चाहे यह नियमों का पालन करने अथवा अच्छा करने को चुनने के द्वारा हो – पाप पुनः जीवित हो जाता है, और हम मर जाते हैं। अभी तक हमने इस मृत्यु को इतनी अधिक बार अनुभव किया है कि हम यह समझाने के योग्य हैं कि यह किस प्रकार से है। यह कुछ–कुछ इस

प्रकार से होता है :

हम एक नियम का पालन करना अथवा भलाई करना चुनते हैं। पाप जो यह मनोवृति है कि हम सोचते हैं कि हमें सब कुछ ज्ञात है – पुनः जीवित हो जाता है। हम अपने आत्मिक प्रयासों में असफल होते हैं। तब ग्लानि से भर जाते हैं। इसके बाद निराशा आती है। और तब हम स्वयं को अयोग्य अनुभव करते हैं। इस प्रकार के एक जीवन को ''मृत्यु'' के रूप में वर्णित किया जा सकता है। अतः व्यवस्था से स्वतंत्रता, ''मृत्यु'' से स्वतंत्रता है।

हम इस मृत्यु को अनुभव द्वारा जानते हैं, क्योंकि हमने यह जाने बिना कि क्या गलत था और हम बदलाव लाने तथा अपने जीवनों में विजय पाने के लिये सम्भवतः क्या कर सकते थे, हमने अनेक वर्ष इसके नियंत्रण के अर्न्तगत बिताये थे। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि इससे बाहर निकलने का एक तरीका है।

यीशु मसीह के साथ अपनी एकता अनुभव करने के द्वारा स्वतंत्रता

यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाये जाने में अपनी एकता के कारण, हम व्यवस्था के अर्न्तगत रहने से स्वतंत्र हो सकते हैं। व्यवस्था से हमारी स्वतंत्रता को बताने वाला मुख्य पद रोमियो 7:4 है :

> ''सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा ताकि हम परमेश्वर के लिये फल लाएं'' (रोमियो 7:4)।

यह, अवश्य ही, हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान का एक सन्दर्भ है जिसे पौलुस रोमियो 6:3–13 में विकसित करता है। क्योंकि व्यवस्था के अर्न्तगत सारा जीवन, शरीर के अर्न्तगत भी जीवन जीना है, अतः जब हम अपने शरीर के क्रूस

पर चढ़ाये जाने को अनुभव करते हैं, तो हम पूरी तरह से व्यवस्था के अर्न्तगत जीवन जीने से स्वतंत्र है।

यह स्वतंत्रता हमें इस योग्य बनाती है कि यीशु मसीह की दुल्हन के रूप में जीवन जीयें

रोमियो 7:3 में पौलुस हमें यह याद दिलाता है कि जब पति मर जाता है तब एक पत्नी उसकी व्यवस्था से स्वतंत्र हो जाती है। आगे वह पद 4 में सूचना देता है कि हम अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने के द्वारा व्यवस्था से स्वतंत्र हुये हैं जिससे कि हम किसी अन्य के साथ विवाह कर सकते हैं। निश्चय ही, जिससे हम विवाह कर सकते हैं वह प्रभु यीशु मसीह है।

यह कितना महिमामय विचार है। हममें से अधिकतर लोग वर्षो से यह सुनते आये हैं, कि कलीसिया यीशु मसीह की दुल्हन है। यहां पवित्रशास्त्र हमें सूचित करते हैं कि प्रत्येक मसीही अपने जीवन को मसीह की दुल्हन के रूप में अनुभव कर सकता है।

यद्यपि हम उच्च स्थानों में तब तक जीवन नहीं जीयेंगे जब तक हम अपने नियमों को त्यागते नहीं हैं और प्रभु के साथ अपने दुल्हे के रूप में सम्बन्धित होने नहीं चुनते हैं। जब हमने पहले से यह निर्णय ले लिया है कि हमारे अपने लक्ष्य क्या है और हम उन तक कैसे पहुंचेगें, तो हम कैसे अपने दुल्हे के प्रति आधीनता का एक जीवन जी सकते हैं ?

जब हम अपने प्रभु के प्रति उसकी दुल्हन के रूप में सम्बन्धित होते हैं, हम ''परमेश्वर के लिये फल लाते हैं'' (रोमियो 7:4)। याद रखें कि यह यीशु है जो ''मृतकों में से जी उठा है।'' उसकी दुल्हन के रूप में हम भी ''मृतकों में से जी उठे हैं।'' यह कितना अद्‌भुत विवाह है – और इसके फल कितने अद्‌भुत होंगे।

इस विवाह से नये जन्मे हुये शिशु परमेश्वर के परिवार में तब उत्पन्न होंगे, जब खोये हुये लोग प्रभु यीशु के लिये जीते जाते

हैं। इस विवाह से, उन लोगों के जीवनों को जो पहिले से परिवार में हैं, उन्नति आयेगी।

स्वतंत्रता – कुछ कठिन प्रश्न

व्यवस्था से स्वतंत्र होकर और मसीह की दुल्हन के रूप में जीवन जीना, शायद एक ऐसा नया विचार हो सकता है जो हमें परेशानी में डालता है। इस प्रकार की नयी सोच हमारे मन में कुछ प्रश्न उत्पन्न करती है। जैसे कि :

पवित्रशास्त्रों में दी गयी आज्ञाओं का क्या होता है?

मेरे कार्य के लिये नियमों का क्या होता है?

उन मसीही अगुवों के बारे में क्या होता है जो नियमों द्वारा जीवन जीते हैं?

चर्च की कार्य–तालिकाओं के बारे में क्या होता है?

यह कठिन प्रश्न है। ऐसे ही अन्य प्रश्न भी हैं जो हम तब पूछना चाहेंगे जब हम अनुग्रह के जीवन के अपने अनुभव और व्यवस्था के अर्न्तगत जीवन से हमारी स्वतंत्रता में वृद्धि करते हैं। इनके कुछ बड़े उचित उत्तर निम्नलिखित हैं।

पवित्रशास्त्रों में दी गयी आज्ञाओं का क्या होता है?

इस प्रश्न का एक उत्तर यह है कि, ''जब हम प्रभु यीशु को अपना दुल्हा मान कर प्रतिक्रिया करते हैं, तब हम वास्तविक रूप से पवित्र शास्त्रों की आज्ञाओं का पालन करेंगे।''

हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा की सेवकाईयों पर विचार करें : वह गवाह होने के लिये हमारी अगुवाई करता है। वह सारे सत्य में हमारा मार्गदर्शन करता है – जिसका तात्पर्य है कि अन्य बातों के साथ–साथ वह बाइबिल का अध्ययन करने के प्रति हमें प्रोत्साहित करता है। वह प्रार्थना में हमारी अगुवाई करता है। वह हमें प्रेम, विश्वास और फलदायकता से परिपूर्ण करता है, संक्षेप में, जब हम पवित्र आत्मा में जीवन जीते हैं तब हम बाइबिल की आज्ञाओं की अनुरूपता के साथ जीवन व्यतीत करेंगे।

क्या इसका आशय यह है कि हमें अब अपनी बाइबिल नहीं पढ़नी है? नहीं, ऐसा नहीं है। क्योंकि पवित्र आत्मा सारे सत्य में हमारा मार्गदर्शन करता है अतः वह बाइबिल पढ़ने और उसका अध्ययन करने में निरन्तर हमारी सहायता करेगा। संक्षेप में, जब हम पवित्र आत्मा में चलते हैं तो बाइबिल का हमारा ज्ञान विशेष रूप से वृद्धि करेगा। इससे वास्तव में तो, कुछ लोग अपने जीवनों में पहली बार पवित्रशास्त्र के छात्र बनते हैं।

पवित्र आत्मा हमें बाइबिल का अध्ययन करने में बनाये रखेगी इसका एक कारण यह है, कि बाइबिल का हमारा ज्ञान जितना बढ़ेगा उतना ही हमारे लिये यह जानना सरल होता है कि एक आज्ञा को पूरी करने की हमारी भावना क्या पवित्र आत्मा की ओर से है अथवा यह हमारे शरीर की एक इच्छा है।

इसके साथ ही जब पवित्र शास्त्रों में आज्ञा दी गयी किसी बात के आज्ञापालन के लिये पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करता है, तो वह इसे करने के लिये हमें सामर्थ भी प्रदान करता है। जब हम शरीर में होकर इन आज्ञाओं को पूरा करना चुनते हैं तब हम सफल नहीं होंगे।

उन नियमों के बारे में क्या होता है जिन्हें हमें अपनी नौकरियों में पालन करना है ?

पौलुस इफिसियों को लिखी अपनी पत्री में हमारे कार्य के सम्बन्ध में हमारे उत्तरदायित्वों को बताता है:

> ''हे दासो, जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन की सीधाई से डरते, और कांपते हुए, जैसे मसीह की, वैसे ही उन की भी आज्ञा मानो'' (इफिसियों 6:5)।

जब हमें अपने नियोक्ताओं (मालिकों) से एक आज्ञा मिलती है, तो वास्तव में हमें वह आज्ञा परमेश्वर से मिल रही है। हमें यह

समझना चाहिये कि हमारे नियोक्ता के नियम, हमारे लिये परमेश्वर का नेतृत्व है। यहां ऐसी असामान्य अपेक्षाऐं हैं कि जब हमें कुछ ऐसा करने की आज्ञा दी जाये जिससे परमेश्वर का अनादर होगा। ऐसे अवसरों पर हमें मार्गदर्शन के लिये केवल परमेश्वर की ओर देखना चाहिये, क्योंकि एकमात्र वही हमें यह बता सकता है कि हमें क्या करना है।

फिर भी, जबकि हमारी नौकरी के कुछ नियम होते हैं, परन्तु यहां थोड़ी स्वतंत्रता भी है। जैसे कि, हम अन्य कर्मचारियों के साथ बातचीत कर सकते हैं और अपने विशेष तरीके से अपनी नौकरी में दिये गये कार्य को पूरा कर सकते हैं। जहां हमें पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन को पाना है, वे इस स्वतंत्रता के यही क्षेत्र हैं।

हमारे ऐसे आत्मिक अगुवों के बारे में क्या होता है जो नियमों द्वारा जीवन व्यतीत करते हैं?

इस प्रश्न का एक उत्तर यह है कि हमारे अनेक आत्मिक अगुवों ने अभी भी व्यवस्था से अपनी स्वतंत्रता को नहीं खोजा है।

एक दूसरा उत्तर है कि किन्ही निश्चित समयों पर कुछ कामों को करने के लिये परमेश्वर हमारे अगुवों का मार्गदर्शन कर सकता है। वह उन्हें यह बता सकता है कि प्रतिदिन सुबह पांच बजे वह उनके लिये इसे सम्भव कर रहा है कि वे प्रार्थना और बाइबिल अध्ययन में समय व्यतीत करें। जब परमेश्वर इस प्रकार की अगुवाई करता है, तो बोझ उसी पर होता है ना कि हमारे अगुवों पर, जो उसके नेतृत्व के प्रति केवल प्रतिक्रिया कर रहे हैं। जब परमेश्वर का मार्गदर्शन किसी एक समय–सारणी के प्रति अगुवाई करता है, तब उस समय–सारणी के अनुसार जीवन जीना, व्यवस्थावाद के समान दिख तो सकता है, परन्तु वास्तव में यह व्यवस्थावाद नहीं है।

हमारी कलीसिया की समय–सारणी के बारे

में क्या होता है?

क्या किसी निश्चित समय पर एक कलीसिया की मण्डली में आना व्यवस्थावाद है? जब परमेश्वर कलीसिया की अगुवाई करता है तब वह एक देह के रूप में इसकी अगुवाई करता है। इस रूप में अवश्य ही ऐसी समय–सारणियां हो सकती हैं जिन्हें परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन के फलस्वरूप तैयार किया गया है। उस देह के सदस्य होने के नाते देह के लिये परमेश्वर के मार्गदर्शन का अनुसरण करने को हमें व्यवस्थावाद नहीं मानना चाहिये। यदि एक साथ संगति रखने के लिये कोई विशिष्ट समय नहीं होता तो कलीसिया के लिये कार्य करना असम्भव हो जायेगा।

जिन बातों को हम कर रहें है क्या वे अभी भी व्यवस्था के अधीन रहने जैसी हैं, यह जानने के लिये, आइये हम निरन्तर परमेश्वर से प्राप्त किसी भी प्रकाशन के लिये निरन्तर खुली सोच रखें।

आइये, हम अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान को और इसके एक परिणाम, जो व्यवस्था से स्वतंत्रता होगी, को अनुभव करना जारी रखें।

अध्याय 14

स्वर्गीय स्थानों में जीवन

'' मैं क्रिसमस के दिन आपको फोन करने के लिए क्षमा चाहता हूँ, परन्तु मुझे यह फोन करना और आपको यह बताना आवश्यक था कि आज सुबह जब मैं जागा तब मैं स्वर्ग में था''।

यह कहने वाला एक ऐसा व्यक्ति था जो यीशु मसीह के साथ अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने को समझता था और उसनं पिछले अनेक वर्षों से अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने को अनुभव किया था। अभी पहली बार उसे स्वर्गीय स्थानों में रहने का अनुभव प्राप्त हुआ था। इस अनुभव के कारण इस व्यक्ति का हृदय आनन्द और स्तुति से इतना अधिक परिपूर्ण था कि इसकी सहभागिता करना उसके लिए आवश्यक था। उसने किसी ऐसे व्यक्ति के साथ यह सहभागिता करना चुना था जो अपने अनुभव से जान सकता था कि वह क्या कह रहा था।

ऐसा प्रतीत होता है, कि अधिकतर लोगों ने स्वर्गीय स्थानों में जीवन का अनुभव प्राप्त नही किया है। सम्भवतः इसी कारण से अधिकतर लोगों ने इस अशीषमय विषय–वस्तु के बारे मे कुछ नही लिखा है। इस आशीषमय विषय–वस्तु पर उपलब्ध साहित्य की कमी को यद्यपि हमें स्वर्गीय स्थानों मे जीवन को समझने और अनुभव करने से वंचित नही रखना चाहिए।

इस विषय वस्तु के प्रति हमारी पहुंच इस प्रार्थना की आत्मा में होनी चाहिए कि परमेश्वर इस सच्चाई को हम पर प्रगट करेगा। यदि हमें सर्वोत्तम रूप से जीवन का आनन्द लेना है, तो हमें अवश्य ही इस प्रकार के जीवन का अनुभव करना चाहिए।

पवित्र शास्त्र में इस जीवन को बहुतायत से सिखाया गया था

स्वर्गीय स्थानों में जीवन सम्भावना को बहुतायत से सिखाया गया था।

पौलुस प्रेरित के द्वारा इसे सिखाया गया था

यद्यपि पौलस नये नियम का एकमात्र ऐसा लेखक नही है जिसने स्वर्गीय स्थानों में जीवन जीने के बारे में बताया था, परन्तु किसी अन्य लेखक के बजाये पौलुस ने इस विषय–वस्तु के बारे में अधिक लिखा है।

इफिसियों 2: 5–6 में, पौलस यह दर्शाता है कि यीशु मसीह के साथ हमारे पुनरूथान के तीन अभिप्राय हैं : हम जीवित किय गये हैं, हम मृतको में से जी उठे हैं और हम स्वर्गीय स्थानों में बैठाये गये हैं। प्रत्येक कथन में उसने भूतकाल का उपयोग किया था।

स्वर्गीय स्थानों में जीवन के सम्बन्ध में फिलिप्पियों 3: 8–14 एक सामर्थी गवाही है। यहां पौलस कहता है कि उसने केवल एक बात करने के लिए अपने जीवन को केन्द्रित कर लिया है, और वह उसका अपने पुनरूत्थान को अनुभव करना है, और पुनरूत्थान प्राप्त जीवन जीने का सर्वोच्च अनुभव स्वर्गीय स्थानों में जीवन है।

कुलुस्सियों 3: 1–4 में पौलस स्वर्ग में अपने बैठाये जाने के विषय में अपना एक सबसे सामर्थी वक्तव्य देता है।

> ''सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं

परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है'' (कुलस्सियों 3: 1–3)।

इब्रानियों के लेखक के द्वारा इसे सिखाया गया था

इब्रानियों की पुस्तक का लेखक, स्वर्गीय स्थानों में रहने के विचार की घोषणा करता है। इस सम्बन्ध में उसका प्रस्ताव भिन्न है, परन्तु यहां विचार स्पष्ट है। वह लिखता है:

''सो हे भाइयो, जब कि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है। जो उस ने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिये अभिषेक किया है, और इसलिये कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक को दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं'' (इब्रानियों 10: 19–22)।

यहां स्वर्गीय स्थानों में जीवन के सम्बन्ध में इब्रानियों के लेखक द्वारा उपयोग किये शब्द यद्यपि पौलुस के शब्दों से भिन्न है, परन्तु उसी विचार को बड़े स्पष्ट रूप से सिखाया गया था।

यीशु के द्वारा इसे सिखाया गया था

यीशु सत्यापित करता है,'' और कोई स्वर्ग पर नही चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है'' (यूहन्ना 3: 13)। यीशु ने बार–बार यह प्रमाणित किया था कि वह केवल वही बातें करता था, जो उसने देखी और सुनी थी। यीशु ने इस पृथ्वी पर अपने विद्यमान होने के मध्य स्वर्गीय स्थानों में, रहने को अनुभव किया था।

फिर अपने स्वर्गारोहण के ठीक पहले उसने कहा था,

''जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ''(यूहन्ना 20: 21)। अन्य बातों के साथ ही इसका यह भी मतलब है कि हम इस प्रकार के जीवन का अनुभव करना है।

एक ही समय में दो संसारों में जीवन

विश्वासियों के लिए इस पृथ्वी पर हुये भी स्वर्गीय स्थानों में होने का मतलब एक ही समय मे दो संसारों में विद्यमान होना है।

इब्रानियों 10:24 हमें अति पवित्र स्थान में चलने के प्रोत्साहन के तुरन्त बाद बताता है, ''और प्रेम, और भले कामों में उकसाने ने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें।'' हम एक ही समय पर, दो संसारों में रहने के द्वारा इस आज्ञा का पालन करते हैं।

अपने स्वयं के जीवन के बारे में हमारे प्रभु के कथनों का यह स्पष्ट अभिप्राय है कि वह एक ही समय में दो संसारों में रहा था। इन गद्यांशो का एक अध्ययन हमें और अधिक समय प्रदान करता है और एक ऐसे विश्वासी के लिए जो स्वर्गीय स्थानों में जीवन को समझना और अनुभव करना चाहता हो, एक सहायता और प्रोत्साहन देता है।

स्वर्गीय स्थानों मे जीवन की आशीषें बहुतायत से हैं। इन्हे इस अध्याय के दो विभागों में बांटा गया है। सर्वप्रथम, व्यक्तिगत आशीष पर परिचर्चा की गयी है। इसके बाद दूसरे विभाग में, अन्य लोगों को उनके द्वारा आशीषे देने का विवरण दिया गया है जो स्वर्गीय स्थानों में जीवन को अनुभव करते हैं।

व्यक्तिगत आशीष का जीवन

यह सुस्पष्ट है कि स्वर्गीय स्थानों में रहने के जिन अनेक परिणामो को यहां बताया गया है, उन्हें अन्य श्रेणियों में भी रखा जा सकता है।

आराधना का एक जीवन

अध्ययनों से यह पता चला है कि विश्वासियों के मध्य, व्यक्तिगत आराधना को प्राथमिकता नही दी जाती है। यह बात उन

आत्मिक अगुवो में भी दिखायी देती है जो मसीही सेवा के लिए बड़ा उत्साह रखते हैं। उन लोगों के लिए जो आराधना के बजाये सेवा को अधिक वरीयता देते हैं, चार ऐसे गद्यांश है जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

पहला गद्यांश लूका 10: 41–42 है जहां हमारा प्रभु यीशु मार्था को उसके मरियम के प्रति इस व्यवहार के लिए डांटता है कि वह प्रभु के पास रहने की इच्छा रखती थी। इसके बाद वह इसमे यह जोड़ता है, ''एक बात आवश्यक है। '' हमारे प्रभु की उपस्थिति में रहना ही वह ''एकमात्र'' बात है, जिसकी हमें आवश्यकता है। क्या इसका अभिप्राय है कि हम आलसी हो जायेंगे ? नही, इसका यह मतलब नही ! इसका मतलब है कि सेवा को अवश्य ही आराधना के परिणामस्वरूप करना है।

पौलस का दूसरे वक्तव्य हमें फिलिप्पियों 3: 1–8 में मिलते हैं जहां उसकी सर्वोच्च इच्छा यीशु मसीह को जानना है और इस अनुभव में रूकावट डालने वाली किसी भी बात को, वह व्यर्थ अथवा कूड़े के समान समझता है।

इसका तीसरा सन्दर्भ यूहन्ना 17: 3 है, जहां हमारा प्रभु प्रार्थना करता है :

''और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।''

यहां जिस शब्द का अनुवाद ''जानना'' हुआ है, वह शब्द व्यवहारिक ज्ञान के लिए है। पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर को अनुभव द्वारा जानना, बहुतायत के जीवन को पाना है।

इस सम्बन्ध में चौथा गद्यांश इब्रानियों 12: 2 कहता है, कि यीशु जो विश्वास का कर्ता और उसे सिद्ध करने वाला है, पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करने के द्वारा हम कठिनाईयों का सामना करने की योग्यता प्राप्त करते हैं। यहां एक प्रोत्साहन दिया गया है, कि

हम अपने ध्यान को प्रभु यीशु पर लगायें।

प्रभु की निरन्तर आराधना करने का तरीका स्वर्गीय स्थानों में रहने में यीशु के साथ अपनी एकता को अनुभव करना है। इस स्थिति से अराधना अपने सर्वोच्च स्तर की ओर बढ़ती है।

नया नियम यह नही बताता है कि आराधना और सेवा में क्या अधिक महत्वपूर्ण है। यह सिखाता है कि हम एक ही समय पर दोनों संसारो में रह सकते हैं।

विश्वास का एक जीवन

इफिसियों के अध्याय 2 मे स्वर्गीय स्थान पर बैठने की परिचर्चा का अन्त इस प्रकार से होता है :

> ''और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए''
>
> (इफिसियों 2: 6– 7)।

अगला पद कहता है कि हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह प्राप्त करते हैं।''विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है'' (पद 8)।

यदि अनुग्रह विश्वास के द्वारा आता है और स्वर्गीय स्थानों मे जीवन एक अनुग्रह का जीवन है, तो स्वर्गीय स्थानों में जीवन अनुभव का परिणाम एक बढ़ता हुआ विश्वास होता है।

हमारे प्रभु का अभिप्राय है कि विश्वासी का जीवन, एक निरन्तर विश्वास का जीवन होना चाहिए। जो लोग विश्वास के द्वारा जीवन जीते हैं उनके प्रति अत्यन्त महान प्रतिज्ञायें की गयी हैं। रोमियो 1:17 बताता है, ''कि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।'' जब हम विश्वास के द्वारा जीवन जीते हैं तब हमसे जीवन के जल की नदियां बहने लगती हैं और हम उससे भी बड़े

आश्चर्यकर्म करते हैं जो यीशु, ने किये थे, इसका सन्दर्भ हमें यूहन्ना 7:38 और यूहन्ना 14:12 में मिलता है। यदि हम इच्छा करेंगे, तब विश्वास का जीवन और इसकी अविश्वसनीय आशीषों हम स्वर्गीय स्थानों में जीवन के निरन्तर अनुभव को खोज रहे होंगे।

यीशु मसीह के साथ जान पहिचान का एक जीवन

कुलुस्सियों 3: 1–4 के ''स्वर्गीय स्थानों में ''सन्दर्भ वाले जिस गद्यांश को हमने पहले बताया था वहां पौलुस यीशु मसीह के प्रकाशन को इस प्रकार लिखता है, '' जब मसीह जो जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किये जाओगे।''

यह भविष्यवाणी वाला एक गद्यांश नही है। इस शब्द–''प्रगट होगा'' का अच्छा अनुवाद ''प्रगट होता है,'' हो सकता है। यहां पौलुस का आशय यह समझाना है, कि उन सबके लिए जो यीशु के साथ अपनी एकता के द्वारा स्वर्गीय स्थानों में जीवन का अनुभव कर रहे हैं यीशु मसीह का यह प्रगटीकरण इस वर्तमान समय में एक अनुभव जैसा है।

फिलिप्पियों 3: 10 में, पौलुस लिखता है कि उसके जीवन की एक सर्वोच्च इच्छा यीशु मसीह को जानना है। उसका अभिप्राय यहां उसे अनुभव द्वारा जानना है। वह आगे यह कहना जारी रखता है, ''और उसके पुनरूत्थान की सामर्थ को'' अर्थात उसकी लालसा थी कि वह उसके सिहांसन पर उसके साथ बैठे होने की अपनी स्थिति को अनुभव करे।

हमारे प्रभु यीशु ने शमौन पतरस को बताया था कि वह परमेश्वर का एक आशीषित व्यक्ति था क्योंकि पिता ने उस पर यह प्रगट किया था, कि यीशु ही मसीह था। हमें स्वंय भी उतना ही निश्चय होना चाहिए कि हम यीशु के साथ उसके सिहांसन पर बैठाये जाने और यीशु के हम पर '' प्रगट होने '' जीवन को जीने

के द्वारा आशीषित होंगे। हम उस जीवन की आशीष की केवल कल्पना कर सकते हैं जिसमें हम प्रभु यीशु का एक निरन्तर प्रगटीकरण प्राप्त करेंगे।

ईश्वरीय मार्गदर्शन का जीवन

इसके लिए पुनः हम कुलुस्सियों 1: 3–4 के महत्वपूर्ण गद्यांश से इस विषय में सीखते हैं। यीशु मसीह का यह प्रकाशन उसके विषय में हमारी अवधारणा और भक्ति तो केवल अधिक बड़ा करने के लिए नहीं है। विश्वासियों के प्रति यीशु मसीह का प्रगटीकरण इसलिए भी हुआ है कि हम यह जान सकें कि वह वर्तमान में क्या कर रहा है और वह हममें और हमारे द्वारा क्या करना चाहता है।

कुलुस्सियों के इस गद्यांश में पौलुस, यीशु मसीह का संदर्भ ''हमारे जीवन'' के रूप में देता है। यहां तुरन्त हमारे ध्यान में आता है जहां उसने कहा था, ''मैं जीवन हूँ।'' इसके साथ ही गलातियों 2:20 में पौलुस यह गवाही देता हैः ''मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।''

प्रेरितो के काम की पुस्तक का पहला पद यह बताता है कि यह पूरी पुस्तक यीशु के कार्यों का विवरण देती है। अतः प्रेरितो के काम में मसीहियों के जो कार्य वार्णित किये गये हैं, वे उनमें और उनके द्वारा यीशु मसीह के कार्य थे। जब हम इस पुस्तक को पढ़ते हैं तो हम यह देखते हैं कि उन पर अपनी इच्छा को प्रगट करके यीशु ने इन कार्यों को विश्वासियों के द्वारा किया था।

यीशु मसीह सदैव अपनी कलीसिया का निर्माण करता है। वह ऐसा विश्वासियों के द्वारा करता है। अतः, उसे हमें यह दिखाने के द्वारा कि वह कहां जा रहा है और क्या कर रहा है; अवश्य ही हमारा मार्गदर्शन करना चाहिए। इसलिए, हमें उन बातों को जानना चाहिए जो वह हममें और हमारे द्वारा करने की इच्छा रखता है। तब

हम वैसे ही जैसे वह हमारे द्वारा आगे बढ़ता है, आगे बढ़ने के द्वारा प्रतिक्रिया करते हैं।

कुलुस्सियों का यह गद्यांश सुझाव देता है कि जब हम स्वर्गीय स्थानों में जीवन का अनुभव करते हैं तब हम सर्वोत्तम रूप से हमारे प्रभु की इच्छाओं और उन बातों को जानते हैं जो वह हमारे द्वारा करना चाहता है।

हमारे लिए यह प्रतिज्ञायें शक्तिशाली प्रेरणा हैं कि प्रत्येक पल इस जीवन को पाने का प्रयास करें। इसके परिणामस्वरूप न केवल हम बहुतायत से आशीष पायेगे परन्तु अपने आप–पास के लोगों के लिए भी आशीष का कारण होंगे।

अन्य लोगों के प्रति आशीष का एक जीवन मसीही सेवा का एक जीवन

2 कुरि0 2: 17 में पौलुस बताता है,'' मसीह में हम परमेश्वर के सम्मुख मन की सच्चाई से बोलते हैं।'' परमेश्वर के वचन के अपने सिखाने और प्रचार करने में पौलुस को प्रत्यक्ष रूप से प्रकाशन प्राप्त हुआ था और वह सदैव परमेश्वर की उपस्थिति में था।यह कितनी अद्‌भुत सेवकाई है ! यह हमें भी तब प्राप्त ही सकती है जब हम स्वर्गीय स्थानों में मिले जीवन के अनुभव के अनुसार सेवकाई करते हैं।

हमारा प्रभु यीशु अनेक बार यह कहता है कि उसने केवल वही किया था जो उसने पिता को करते देखा था अथवा पिता को कहते सुना था, यूहन्ना 5: 17 में उसके इस कथन पर विचार करें, ''मेरा पिता अब तक कार्य करता है और मैं भी काम करता हूँ।'' स्वर्ग में पिता के साथ उसकी निरंन्तर संगति यीशु की सेवकाई का स्त्रोत थी।

इब्रानियों 10:19– 25 भी, सेवा के लिए ऐसी ही योजना प्रस्तुत करता था। वर्षों तक मुझे इस बात ने भम्रित किया था कि इब्रानियों का लेखक अति पवित्र स्थान में रहने के हमारे विशेष

अधिकार को इतनी सुन्दरतापूर्वक बताता है और फिर अचानक ही वह सेवा के बारे में बात करने लगता है। परन्तु अब मैं देख सकता हूँ कि यही वह तरीका है जिससे हम अत्यन्त प्रभावकारी ढंग से अन्य लोगों की सेवा कर सकते है।

मध्यस्थता की प्रार्थना का एक जीवन

दूसरो की सेवा करने का एक अन्य लक्षण मध्यस्थता की प्रार्थना है। यद्यपि स्वर्गीय स्थानों में प्रभु मसीह के साथ सिहांसन पर बैठे होने की हमारी स्थिति से मध्यस्थता के द्वारा अन्य लोगों की सेवा करने से मध्यस्थता का विचार और अधिक वृद्धि करता है।

1 यूहन्ना 5: 14– 15 में यह वचन दिया गया है कि जब हम परमेश्वर की इच्छा अनुसार प्रार्थना करते हैं तो हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर प्राप्त होंगे।

चाहे हम परमेश्वर से निवेदन करें अथवा न भी करें तौभी वह कुछ बातों को पूरा करता है। हम इसके लिए आश्वस्त हो सकते हैं कि कल सूर्य निकलेगा। दूसरी ओर कुछ ऐसी बातें भी हैं पूरे संसार में प्रार्थना किये जाने पर भी नही बदलेगी।

क्या एक अच्छी और जोशीली प्रार्थना सभा, यीशु को क्रूस पर मरने से रोक सकती थी। निश्चय ही नही। ऐसी प्रार्थना, परमेश्वर के इच्छा के विरूद्ध होगी क्योंकि अनन्त–काल से परमेश्वर की यह योजना थी कि यीशु को क्रूस पर मरना है।

यद्यपि यह भी सत्य है कि परमेश्वर हमको और अन्य लोगों को अनगिनत आशीषें इसलिये देता है कि हम प्रार्थना करते हैं।

प्रार्थना द्वारा अन्य लोगों को जब आशीषें प्राप्त हों इसमें हमारा भाग सर्वप्रथम परमेश्वर की इच्छाओं जानना है, और फिर उससे निवेदन करना है कि वह इच्छाओं को पूरा करे।

अन्य लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छाओं को जानने का सर्वोत्तम तरीका, स्वर्गीय में जीवन की अवस्था में

उसके साथ संगति रखने के द्वारा है।

अन्य लोगों के लिए बोझ का एक जीवन

मसीही जीवन में फलदायक होने के लिए हमें दूसरों के लिए केवल एक बोझ को नही रखता है– यहां विश्वास अनिवार्य बात है। यद्यपि, सेवा में एक नई कुशलता उन्हें प्राप्त होती है जो अन्य लोगों के लिए एक अर्थात चिन्ता के साथ परिश्रम करते हैं।

पौलुस जिन बोझों को रखता था उनके विषय में एक महत्वपूर्ण कथन हमें फिलीप्पियों 3: 10 में मिलता है। पौलुस के द्वारा व्यक्त की गयी इच्छा यह है, '' मै उसको और उसके जी उठने की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं।''

यह उसकी प्रगट इच्छा थी कि अपने हृदय में पृथ्वी पर विद्यमान लोगों के लिए प्रभु यीशु के दुख उठाने को प्रयोगिक रूप से जाने। पौलुस यह जानता था, कि स्वर्गीय स्थानों में यीशु के साथ एक संगति के द्वारा यीशु के दुख उसके अपने हृदय में भी भर जायेंगे। हमारे प्रभु के हृदय को क्या बातें कष्ट देती हैं ?

हमारे प्रभु यीशु को केवल एक ही बार पिता के दाहिने हाथ पर खड़ा हुआ प्रगट किया गया है, जो स्तिफनुस की मृत्यु का समय था। स्तिफनुस के पत्थरवाह किये जाने के समय हमारे प्रभु का खड़ा हुआ होना अपने दुख उठाते सेवक के लिये प्रभु यीशु की ओर से एक अत्यन्त गहरी रूचि और चिन्ता को इंगित करता है। यह प्रगट करता है कि हमारे प्रभु को तब कष्ट पहुँचता है जब विश्वासी उसके लिए दुख उठाते हैं।

इफिसियों 4: 30 हमें पवित्र आत्मा के शोकित होने के विषय में बताता है। यहां यह विवरण विश्वासियों को कुछ पापों से विमुख होने के लिए प्रोत्साहित के संदर्भ में दिया गया है। विश्वासी में अवज्ञाकरिता

पवित्र आत्मा को शोकित करेगी। यदि एक विश्वासी के जीवन में पाप पवित्र आत्मा को शोकित करता है तो यह पिता और पुत्र को भी शोकित करता है।

पौलुस रोमियों 9: 2 में अविश्वासी यहुदियों के कारण अपने ह्रदय में उत्पन्न हुए एक बड़े भारीपन और निरंन्तर दुख के बारे में बताता है। यहां हमारी प्रवृति पौलुस की प्रशंसा करने की है, परन्तु यह निश्चित है कि यह दुख मूल्यतया परमेश्वर के ह्रदय में उत्पन्न हुआ था।

बाइबल तीन प्रकार के लोगों के विषय में बताती है : प्राकृतिक मनुष्य, सांसारिक मनुष्य, और आत्मिक मनुष्य। सताया गया विश्वासी, आत्मिक मनुष्य है। अविश्वासी, एक प्राकृतिक मनुष्य है। उपरोक्त गंद्याशों में हम यह देख चुके हैं कि हमारा प्रभु यहां बतायी गयी इन तीनों श्रेणियों में पाये जाने लोगो के लिए एक बोझ रखता है।

इस प्रकार यीशु मसीह का दुख, इस पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों के लिए है। वह दुख हमारे ह्रदयों में भी उण्डेला जायें इसके लिए हमें उसके '' दुखों में सहभागी '' होने को जानता है। पौलुस स्वर्गीय स्थानों में जीवन को अनुभव करने के द्वारा इस दुख में सहभागी हुआ था।

यदि पौलुस स्वर्गीय स्थानों में बने रहने के द्वारा अन्य लोगों के लिए एक बोझ का अनुभव कर सकता है तो हम भी क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में यीशु के साथ अपनी एकता को जीने के द्वारा इन्ही परिस्थतियो की अपेक्षा कर सकते हैं।

यहां यह दोहराना जरूरी है कि मसीही सेवा में फलदायक होने के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता विश्वास है। यहां हम यह नही सोचें इस सेवकाई में प्रभु के लिए उपयोगी होने के प्रति एक

दुख रखने वाले हृदय के लिए हमें प्रतिक्षा करनी करनी चाहिए। स्वर्गीय स्थानों में जीवन को जब हम दिन प्रतिदिन अनुभव करते हैं तो कुछ अवधि के बाद दुख रखने वाला हृदय उत्पन्न होगा।

शैतान पर अधिकार का एक जीवन

शैतान हमारा अत्यन्त क्रूर शत्रु है। उसका प्राथमिक उद्देश्य हमें अनैतिक बनाना नहीं है, उसका उद्देश्य हमारे जीवनों के लिये ईश्वरीय योजना से हमें दूर करना है। जब तक हम विश्वासी, प्रभु के साथ अपने जीवन में एक वास्तविक उद्देश्य नहीं रखते हैं तब तक शैतान प्रसन्न रहता है चाहे हम अनैतिक बने या न बने। क्या आदम और हव्वा के लिये एक पेड़ से फल खाने में कोई अनैतिक बात है अथवा प्रभु यीशु के प्रलोभन में पत्थरों को रोटी में बदलने में क्या कोई अनैतिकता है।

शैतान धोखा देने की अत्याधिक योग्यता रखता है। बहुधा वह अप्रत्यक्ष रूप से आक्रमण करता है क्योंकि वह दूसरों के द्वारा कार्य करता है – जैसा कि हव्वा, अय्यूब की पत्नी, और शिमौन पतरस के सम्बन्ध में था। अपने प्रत्यक्ष आक्रमण में वह अपने घातक विचारों को धीमी आवाज में प्रगट करता है जैसा कि उसने हमारे प्रभु के प्रति उन प्रलोभित करने वाले वचनों को बोला था। जैसा कि हम इफिसियो 6:13 में देखते हैं वह परमेश्वर की संतानों पर विशेष आक्रमणों की युक्तियां करता है और उन्हें प्रयोग करता है। जैसा कि उसने अय्यूब के साथ किया था। वह हमारी खण्डित भावनाओं का उपयोग करता है। जैसा कि प्रभु यीशु के द्वारा यूहन्ना 8:44 में प्रगट किया गया था वह यह योग्यता रखता है कि हमें घातक असत्य बातों को मानने पर बाध्य करे – विशेष रूप से परमेश्वर के लिये असत्य बातों को। वह अर्धसत्य बताने में विशेषज्ञ है।

अब जबकि हम इस सच्चाईयों को जानते हैं तब हम इस बात के अधिक योग्य हैं कि अपने विरूद्ध शैतान की योजनाओं और

गतिविधियों को समझ सकें। यद्यपि हमें उसकी, उसके अभिप्रायों की और तकनीकों की और अधिक समझ प्राप्त करनी है।

और यह हमारे पास है !

इब्रानियों 2:14 बताता है कि यीशु एक मनुष्य बना था, ''ताकि मृत्यु के द्वारा उसको जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी अर्थात शैतान को नाश करे।'' 2कुरिन्थियों 10:4 के अनुसार हम मसीहियों के पास ऐसे हथियार हैं जो परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। अनेक लोगों ने इस तथ्य में विश्राम पाया है कि शत्रु के विरूद्ध मल्य युद्ध करने के लिये परमेश्वर के सारे हथियार हमारे लिये उपलब्ध हैं जिन्हें इफिसियों 6:8–10 में बताया गया है।

परन्तु हमारे पास इससे भी अधिक है!

अपनी प्रार्थना में पौलुस प्रेरित यह निवेदन करता है कि उसके पाठकों की दृष्टि ज्योतिमर्य हो जिससे कि वे अन्य बातों के साथ वे शैतान पर अपने अधिकार को जान सके। स्वर्गीय स्थानों में हम स्थिति में हैं कि शैतान पर अधिकार रखें। निम्नलिखित वचनों को पढ़ते हुए आनन्दित हों जो पौलुस प्रेरित की सामर्थी प्रार्थना के निष्कर्ष के रूप में है :

> ''और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन कैसा है। और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार। जो उस ने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर। सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आने

वाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया। और सब कुछ उसके पांवों तले कर दियाः और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया''

(इफिसियों 1:18 –22)।

जब तक मैंने यीशु के साथ मैंने अपनी एकता को नहीं देखा था इससे पहले मैं कदाचित ही शैतान के बारे में सोचता था। अब मैं प्रतिदिन उसके विषय में सोचता हूँ, मैं जानता हूँ कि वह एक ऐसा पूर्णतया पराजित शत्रु है जो मेरे पांव के नीचे है, और जिसके साथ मैं एक अधिकार के साथ व्यवहार कर सकता हूँ।

इसी प्रकार से हम सब जब स्वर्गीय स्थानों में जीवन को मांगते हैं और उसे अनुभव करना चुनते हैं, तब हम लोग इसी प्रकार से कर सकते हैं।

यीशु के साथ हमारी एकता को जीने के द्वारा अनुभव किया गया एक जीवन

सारे विश्वासी उस क्षण से जब उन्होंने यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया है, स्वर्गीय स्थानों में यीशु के साथ सिंहासन पर बैठाये गये हैं। लेकिन हम स्वर्गीय स्थानों में जीवन को केवल तभी अनुभव करेंगे जब हम यह मानते हैं कि हम स्वर्गीय स्थानों पर बैठे हुए हैं और उन शर्तों पर जीवन को अनुभव करना चुनते हैं। हमें अवश्य ही यह याद रखना चाहियेः

''हमारे मसीही जीवन में जो बातें सत्य हैं उन्हें हम तब तक अनुभव नहीं करेंगे जब तक कि हम यह नहीं मानते हैं कि वे हमारे लिये सत्य है और उन्हें अनुभव करना नहीं चुनते हैं।''

बहुत से विश्वासी, यीशु के साथ स्वर्गीय स्थानों में अपने बैठाये जाने के बारे में नहीं जानते हैं और इसलिये वे एक इस प्रकार के जीवन को चुन नहीं पाते हैं जब उस पर प्रतीत नहीं करते हैं। इसके साथ, हमें यह अवश्य ही समझना चाहिये कि स्वर्गीय स्थानों पर बैठने के पहले हम अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने को अनुभव

करेंगे।

जब यह जीवन हमारे लिये व्यवहारिक बन जाता है, तब आत्मिक आशीषें एक कभी न खत्म होने वाले स्रोत से हमारे जीवन में बहेंगी।

जब हम स्वर्गीय स्थानों में प्रभु के साथ अपने होने के जीवन को अनुभव करते हैं तो तब हममें अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं। जब तक यह हमारे जीवन का एक दैनिक साहसिक अभियान नहीं बन जाता है, आइये, तब तक एक ऐसे जीवन के सम्भावनाओं से अलग न हों। स्वर्गीय स्थानों में जीवन कुछ ऐसा नहीं है जो हमे सदूर भविष्य में मिलेगा। यह हमारा है – अभी, इसी समय।

जायें और इसे प्राप्त करें !

अध्याय –15

परमेश्वर के आश्चर्यकर्म करने वाले सेवक

हम चुनाव और विश्वास के द्वारा यीशु के साथ अपनी एकता को जीते हैं। क्योंकि यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को अनुभव करना हमें स्वंय में अपने विश्वास से स्वतंत्र करता है, जिसका परिणाम परमेश्वर में बढ़ता हुआ विश्वास है, जो मसीही जीवन का एक निश्चित आधार है।

अतः, उन सारे बदलावों को दर्शाने के लिये जिनकी हम तब आपेक्षा करते हैं जब यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को अनुभव करते हैं, हमें उस प्रत्येक बात को एक स्थान देना है जो भी विश्वास से सम्भव होती है।

यहां यह करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है। यद्यपि, यहां उन लोगों के प्रति जो प्रभु यीशु पर निर्भरता का जीवन जीते हैं उनके लिये हमारे प्रभु की एक प्रतिज्ञा इतनी महान और महत्वपूंर्ण है, कि इसे एक ऐसी पुस्तक में अवश्य ही वर्णित करना चाहिये जो विश्वास के द्वारा अनुग्रह पर जीवन जीने के विषय में हो। इस कारण से इस महिमामय प्रतिज्ञा की परिचर्चा के लिये इस पूरे अध्याय को लिखा गया है।

हम अपने प्रभु से अधिक बड़े

आश्चर्यकर्म करने लगते हैं

यह यीशु की उस प्रतिज्ञा से सम्बन्धित है कि जो उस पर पूर्ण निर्भरता के जीवन को जीता है वह उससे भी बड़े–बड़े आश्चर्यकर्म करेगा।

उसकी प्रतिज्ञा है :

> ''मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, बरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं'' (यूहन्ना 14:12)।

यहां उपयोग वाक्यांश ''विश्वास रखता है'' का यूनानी रूप निरंतर किये गये व्यवहार का सुझाव देता है। वे लोग यीशु पर पूरी तरंह से निर्भरता की एक अवस्था में जीवन जीते हैं वे इसी प्रकार के आश्चर्यक्रम करेंगे जो प्रभु यीशु ने किये थे। परन्तु वे उससे उच्च स्तर के आश्चर्यक्रम भी करेंगे।

क्या इतनी महान प्रतिज्ञा की उपेक्षा हमने इसलिये की है क्योंकि हम सोचते हैं कि यह सत्य नहीं है? किसी कारण से हममें से अधिकतर ने इसकी उपेक्षा की है। परन्तु हमें अवश्य ही इस पर विश्वास करना चाहिये।हमें अवश्य ही इसे अनुभव करना चाहिये जिससे कि जीवन की उस परिपूर्णता को प्राप्त करें जिसकी परमेश्वर ने हमारे लिये योजना बनायी है।

यीशु ने कहा था कि हम और बड़े–बड़े आश्चर्यक्रर्म कर सकते हैं क्योंकि वह पिता के पास जा रहा है। यीशु प्रगट करता है कि पिता के पास उसका जाना पवित्र आत्मा के आने का अवसर होगा। वह कहता है:

> ''तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा,

तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा'' (यूहन्ना 16:7)।

पवित्र आत्मा पुराने नियम के समय–कालों में और इस पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई के समय काल के मध्य, अपनी सेवकाई रखता था। यद्यपि, पिन्तेकुस्त के दिन के बाद से पवित्र आत्मा एक नई सेवकाई में सम्मिलित हुआ है। अब वह सारे विश्वासियों में वास करता है।

यह विश्वासियों के जीवनों में पवित्र आत्मा की उपस्थिति है जो इन अधिक बड़े कामों को सम्भव बनाती है। यीशु मसीह के आश्चर्यकर्म, शारीरिक विभिन्नताऐं रखते थे, जबकि हमारे आश्चर्यकर्म अधिकतर आत्मिक होंगे और यही उन्हें ''अधिक बड़ा'' बनाता है।

हम परमेश्वर के वचनों द्वारा आश्चर्यकर्म करते हैं

पीछे दिये गये एक पद में हमारे प्रभु ने वह प्रतिज्ञा की थी जिसके विषय में हमें यहां विचार कर रहे हैं। और यीशु ने अपने विषय में कहा था :

> ''क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है'' (यूहन्ना 14:10)।

अपने इस वक्तव्य द्वारा हमारा प्रभु यह बताता है कि ठीक वैसे ही, जैसे उसके कार्य, पिता के द्वारा और वचनों के द्वारा पूरे किये गये थे उसी प्रकार, हमारे कार्य भी सम्पन्न होंगे। ठीक वैसे ही जैसे पिता ने यीशु में और उसके द्वारा तब कार्य किये थे जब वह इस पृथ्वी पर था, उसी प्रकार से वह आज विश्वासियों द्वारा कार्य करेगा।

यद्यपि, हमारे आश्चर्यकर्मो को करने के विषय में एक महत्वपूर्ण बात को समझना है। उन्हें पूरा करने के लिये जिन वचनों का उपयोग किया गया था वे सदैव समान होंगे। वे क्रूस पर चढ़ाये

जाने, दफनाये जाने, और पुनः जी उठने के वचन होंगे।

हमारे द्वारा पिता जिन आश्चर्यकर्मो को करेगा वे हमारे द्वारा यीशु की मृत्यू, दफनाये जाने और पुनरूत्थान के वचनों को बोलने द्वारा किये जायेंगे। यद्यपि, पिता हमारे द्वारा जो अनेक आश्चर्यक्रम करेगा, वे विश्वासी की मृत्यु, दफनाये जाने और पुनः जी उठाने को बोले जाने के द्वारा भी पूरे होंगे।

हम उस प्रकार के आश्चर्यकर्मो को करते हैं जिन्हें हमारे प्रभु यीशु द्वारा किया गया था

''ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, ''यीशु ने यह बात उस विश्वासी के लिये कही थी जो उस पर पूरी तरह से निर्भर होकर जीवन जीता है। एक अन्य गद्यांश में, वह, हमें अपनी तरंह के कामों की, एक आंशिक सूचि प्रदान करता है। जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दो शिष्यों ने यीशु से पूछा था कि क्या वह मसीहा था, तब उसने इस प्रकार से प्रतिक्रिया की थी :

> '' कि जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो : कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है'' (मत्ती 11:4–5)।

चार सुसमाचारों का कोई भी पाठक यह जानता है, कि यह, यीशु के आश्चर्यकर्मों की एक पूरी सूचि नहीं हैं, परन्तु यह वह सूचि है, जो उसने यूहन्ना के शिष्यों को दी थी। यद्यपि हमारे प्रभु के सारे आश्चर्यकर्मों पर यहां परिचर्चा करना अत्यन्त लाभदायक हो सकता था, परन्तु यहां परिचर्चा केवल उन्ही आश्चर्यकर्मों की सूचि तक सीमित रहेगी जिसे प्रभु यीशु ने स्वयं बताया था।

मुर्दे जिलाये जाते हैं

बाइबिल में तीन अत्यधिक प्रसिद्ध कहानियां वे हैं जब यीशु ने लाजर, याईर की बेटी और नाईन की विधवा के पुत्र को मृतकों में से जिन्दा किया था। इनमें से प्रत्येक आश्चर्यकर्म हमें यह दर्शाते हैं कि जो लोगो यीशु मसीह में निरन्तर विश्वास के एक जीवन को जीते हैं, वे भी मुर्दों को जिलायेंगे।

यूहन्ना 5:25 में यीशु एक पुनः जीवित होने के बारे में बताता है जो स्पष्ट रूप से आत्मिक है। वह कहता है :

''मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और
अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे,
और जो सुनेंगे वे जीएंगे'' (यूहन्ना 5:25)।

वे लोग जो यीशु के पास उद्धार के अनुभव के लिये विश्वास करते हैं वे एक आत्मिक पुनरूत्थान का अनुभव करते हैं – इस पुनरूथान का पवित्रशास्त्रों में बहुधा वर्णन हुआ है।

अनेक लोग बहुधा यह प्रश्न पूछते हैं, ''हम सुसमाचार प्रचार में क्यों इतने कमजोर हैं?'' इस कठिन प्रश्न का एक उत्तर, सुसमाचार प्रचार के प्रति हमारे प्रस्ताव में मिलता है।

आरम्भ के अध्यायों में यह दर्शाया गया था हम व्यवस्था का पालन, व्यवस्था को पूरा करने के प्रयास से नहीं परन्तु पवित्र आत्मा में जीवन जीने के द्वारा करते हैं। इसी प्रकार यह भी सत्य है कि हम तब सुसमाचार प्रचार में अधिक प्रभावकारी होंगे यदि हम अपने पहले उत्तरदायित्व के रूप में प्रभु के साथ एक संगति पर अधिक बल देंगे – बजाये कि स्वंय सुसमाचार प्रचार पर।

पौलस प्रेरित ने यह घोषित किया था कि ऐसी कोई भी बात कूड़ा करकट थी जो उसे यीशु मसीह के साथ व्यवहारिक रूप से जान पहिचान रखने से वंचित करती थी। उसने कहा था कि उसने प्रत्येक बात को त्याग दिया है जिससे कि वह उस व्यक्तिगत संगति को प्राप्त कर सके।

क्या इस प्रकार का कथन सुसमाचार प्रचार को नकारना है? नही!

क्या पौलुस यह कह रहा है कि यीशु मसीह को जानना, सुसमाचार प्रचार के बजाये अधिक प्राथमिक बात है? जी हाँ ! अपने अपने अच्छे अधिकार के कारण पौलुस इस प्रकार का दावा कर रहा था। हमारे प्रभु ने मारथा को बताया था कि वह जीवन एक बात पर आधारित था – जो बात मरियम कर रही थी, जबकि मारथा भोजन तैयार करने में अत्याधिक व्यस्त थी। मरियम क्या रही थी? ''मरियम यीशु के चरणों के पास बैठी हुयी थी, और उसे सुन रही था'' (लूका 10:39)।

प्रभु यीशु के साथ धनिष्ट सम्बन्ध में होना एक निरन्तर आराधना की दशा में होना है – परन्तु इसका यह अभिप्राय नही है कि हम कभी भी बाहर वहां नही होंगे जहां लोग हैं। और अधिक विश्वासी सुसमाचार प्रचार में सम्मिलित होंगे, यदि मृत्यु, दफनाये जाने और पनुरूत्थान में यीशु के साथ उनकी एकता को अनुभव करने के लिये, पहले उनकी अगुवाई की जाये।

वे एक ही समय में दो संसारों में रहेंगे। जब वे यीशु के साथ एक घनिष्ट सम्बन्ध में अपने जीवनों को जीते हैं तो उसी समय वे इस पृथ्वी पर लोगों के साथ सम्मिलित होकर अपने जीवन जीते हैं – जिनमें उद्धार नही पाये हुये लोग भी सम्मिलित हैं। एक व्यक्ति के लिये बिना उद्धार प्राप्त लोगों के साथ बातचीत करना, जबकि उसी समय वह प्रभु यीशु के साथ भी वार्तालाप करता है, उसकी गवाही को अत्यन्त सामर्थी बना देता है।

उस स्वर्गदूत की अभिव्यक्ति, जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म के सन्देश को लेकर जकर्याह के पास आया था, उन सब लोगों की अभिव्यक्ति हो सकती है जो यीशु के साथ अपनी एकता में जीवन जीते हैं। जकर्याह को उसने निम्नलिखित सन्देश दिया था :

''स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया, कि मैं जिब्राईल हूं, जो परमेश्वर के साम्हने खड़ा रहता हूं; और मैं तुझ से बातें करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूं'' (लूका 1:19)।

जो मृत्यु, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में यीशु के साथ अपनी एकता को जीते हैं वे पिता की ओर से –और पिता के साथ –भेजे जाते हैं, कि खोये हुओं को यीशु की मृत्यु, दफनाये जाने और पुनरूत्थान के बारे में बतायें। और वे उस पर अपनी निर्भरता की दशा में यह करते हैं।

हममें से अनेक के लिये मरे हुये को जीवित करने की आश्चर्यकर्म करने वाली गतिविधी तब तक नही हो पायेगी जब तक हम यीशु के साथ अपनी एकता को नही जी रहे हैं जिसका अभिप्राय है कि हम अपने प्रभु पर पूरी तरह से निर्भर होकर जीवन जीयेंगे।

आत्मिक रूप से मरे हुये को जिलाने में जब हम परमेश्वर के उपकरण हैं, तब आश्चर्यकर्म कुछ ही पल में हो जाता है जैसे कि प्रभु यीशु के द्वारा आश्चर्यकर्म किये गये थे। यद्यपि, अब हम जिन आश्चर्यकर्मो के बारे में देखने जा रहे हैं वे कुछ ही पल के समय में नहीं होते हैं।

अन्धे दृष्टि पाते हैं और बहरे सुनते हैं

मृतकों में से जीवित किये गये लाजर के बारे में विचार करें जो भूमि पर अपने कफन में लिपटा पड़ा था। उसे जीवित करने के बाद यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था, ''उसके कफन को खोल दो, और उसे जाने दो'' (यूहन्ना 11:44)।

इस दृश्य की कल्पना करें। लाजर जीवित हो गया था, परन्तु वह अपने कफन के कारण न तो देख सकता था और न ही सुन सकता था। अनेक विश्वासी लाजर के समान ही अपने कफन

के कपड़ो में हैं। जैसे कि लाजर के पास शारीरिक जीवन था, वैसे ही उनके पास आत्मिक जीवन है, परन्तु वे उसी प्रकार से आत्मिक रूप से देखने और सुनने के अयोग्य हैं जैसे कि लाजर शारीरिक रूप से देखने और सुनने के अयोग्य था।

आत्मिक दृष्टि पाने और आत्मिक रूप से सुनने के योग्य होने के प्रति हम आवश्यक और उचित दृष्टिकोण प्राप्त करें, इसके लिये यीशु ने निम्नलिखित वचन कहे थे :

> '' मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है'' (यूहन्ना 5:19)।
>
> ''मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूं'' (यूहन्ना 5:30)।

यीशु यह कथन बताते हैं कि उस की सारी गतिविधियां उसके देखने और सुनने के परिणामस्वरूप थीं। निश्चय ही, वह पिता के साथ अपनी संगति के सन्दर्भ में यह कहता है। यह सन्दर्भ उसके आत्मिक रूप से देखने और सुनने के प्रति हैं जब उसने एक ही समय पर दो संसारों में अपना जीवन जीया था।

यीशु के इन कथनों के प्रकाश में जो उसने अपने देखने और सुनने के विषय में कहे थे, हम यह समझते हैं कि किस तरीके से हम इन ''आश्चर्यकर्मो को करेंगे'' जहां हम विश्वासियों के लिये परमेश्वर की संगति में रहने को सम्भव बनाते हैं।

हम यह कैसे करते हैं? हम कैसे विश्वासियों को स्वतंत्र करते हैं जिससे कि वे देख और सुन सकें? यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को अनुभव करने के द्वारा हमें पहले स्वंय प्रभु को

देखना और सुनना आवश्यक है। तब परमेश्वर हमें अन्य विश्वासियों को स्वंतत्र करने के लिये उपयोग कर सकता है। वह ऐसा वचनों के द्वारा करेगा।

ठीक वैसे ही जैसे हम मृतकों को यीशु के क्रूसीकरण, दफनाये जाने और पुनरूत्थान को बताने के द्वारा उन्हें जीवित करते हैं, वैसे ही हम अन्धे और बहरे विश्वासियों को यह बताने के द्वारा स्वतंत्र करते हैं, कि उन्होने स्वंय को पहिले ही क्रूस पर चढ़ाया है, दफनाया है और पुनरूत्थान प्राप्त किया है।

वे सभी लोग जिन्हें हम बताते हैं, सुनने के लिये तैयार नहीं हैं। परन्तु कुछ को सुनने और विश्वास करने के लिये पवित्र आत्मा के द्वारा तैयार किया गया है। उन्हें इन सत्यों पर आधारित जीवत को चुनने के लिये भी तैयार किया गया है।

जब यह तैयार किये गये लोग, क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनः जी उठाने के जीवन पर विश्वास करते और उसे चुनते हैं जिसके बारे में हमने उन्हें बताया है, तब हम अन्धों और बहरों को चंगाई देने के लिये परमेश्वर के उपकरण बन जाते हैं।

उन लोगों को जो देखने और सुनने की आत्मिक योग्यता रखते हैं, उन्हें परमेश्वर शान्ति और आराम और मार्गदर्शन के वचनों को देने के योग्य है। परमेश्वर इस योग्य है कि उनके लिये अपने वचन को प्रकाशित करें। परमेश्वर उन्हें उनके अपने जीवनों में और अन्य लोगों के जीवनों में उन आवश्यकताओं को देखने के योग्य बनाता है जिन्हें उन्होने पहले नही देखा है। और परमेश्वर उन्हें अपना एक अधिक बड़ा दर्शन प्रदान करता है।

मेरी प्रार्थना है कि आत्मिक रूप से अन्धे और बहरे लोगों को चंगाई देने की सेवकाई के प्रति हमारी बुलाहट की उत्तेजना हमें इस ओर अग्रसर करे कि अपने साथी विश्वासियों के साथ उनके

अपने क्रूसीकरण, दफनाये जाने और पुनरूत्थान के सन्देश की आनन्दपूर्वक सहभागिता कर सकें।

लंगड़े चलते हैं

आइये, पुनः लाजर के बारे में विचार करें। हमारे प्रभु के लाजर को जिलाने के बाद परन्तु इससे पहले कि शिष्यों ने उसे उसके कफन के कपड़ो से मुक्त किया था, वह चल फिर नही सकता था। यद्यपि लाजर पूरी तरह से जीवित था – परन्तु वह अपने दफनाये जाने की तैयारियों के कारण ''लंगड़ा'' था।

रोमियों 7:15 में पौलुस का यह कथन, ''जो मैं करना चाहता हूँ वह नही करता परन्तु वह करने लगता हूँ जिसे करने से मुझे घृणा है, ''सम्भवतः आत्मिक अंपगता का अत्यन्त स्पष्ट कथन है। पौलुस ने इस आत्मिक दशा को ''मृत्यु'' कहा था क्योंकि यह उसके लिये असहनीय थी।

ऐसी अन्य और कौन–कौन सी बातें थी जिन्हें पौलुस करना तो चाहता था परन्तु वह कर नही सकता था? इसका हम केवल अनुमान ही कर सकते हैं परन्तु हम कुछ ऐसी बातों को जानते हैं जिन्हें हम करना चाहेंगे। हम अविश्वासी लोगों तक सुसमाचार पहुंचाने के प्रति प्रयाप्त रूप से साहसी बनना चाहेंगे। हम परेशानी उत्पन्न करने वाले लोगों के प्रति

धैर्यवान होना चाहेंगे। हम अपने शत्रुओं से प्रेम करना चाहेंगे। हम चाहेंगे कि प्रभु के द्वारा हमारे मित्र आशीष पायें और उपयोग किये जाये। हम उन लोगों को क्षमा करना चाहेंगे जिन्होने हमारे विरूद्ध अपराध किये हैं। हम अपने बोझों के साथ परमेश्वर पर भरोसा करना चाहेंगे। हम एक प्रभावकारी प्रार्थना का जीवन रखना चाहेंगे। हम अपनी सारी परिस्थितियों को परमेश्वर के हाथों में सौंपना चाहेंगे। हम अपनी सारी सीमित्ताओं के बावजूद भी जीवन में आगे बढ़ना चाहेंगे।

हम इन बातों को करना चाहते हैं, परन्तु उन्हें करने के

अयोग्य हैं। हम आत्मिक रूप से विकलांग हैं, और बहुत से ऐसे अन्य लोगों से घिरे हुये हैं जो स्वंय को मसीही तो कहते हैं परन्तु इन्ही समस्याओं को रखते हैं।

वे कौन सी बातें हैं जिनसे पौलुस घृणा करता था परन्तु वह उन्हे बातों को करने से बच नही पाता था ? हम शायद उन बातों को नही जानते हैं जो पौलुस की सोच में थीं, परन्तु हम अपने स्वंय के जीवन में ऐसी बातों को जानते हैं जो इस श्रेणी में आती हैं। हम इन बातो को रोकने में स्वंय को असहाय पाते हैं जैसे कि हमारा क्रोध, हमारा अधैर्य, हमारी ईर्ष्या, हमारी कडुवाहट, हमारी प्रतिस्पर्घात्मक आत्मा, सबसे आगे होने की हमारी इच्छा और बदला लेने की हमारी भावना।

पौलुस की यह स्वीकारोक्ति थी कि इस आत्मिक विकलांगता से उसे चंगाई तब मिली थी जब उसने यीशु में मृत्यु, दफनाये जाने और पुनः जी उठने की अपनी एकता को अनुभव किया था। हमारे साथ भी इसी प्रकार से है। और अन्य सारे विश्वासियों के साथ भी ऐसा ही होगा।

अध्याय–1 में, एक ऐसे युवक की कहानी बतायी गयी थी जिसने अपने भयों से चंगाई का अनुभव करना आरम्भ किया था। वह तब तक विकलांग था जब तक चंगाई की प्रक्रिया आरम्भ नही हुयी थी। यह व्यक्ति एक ऐसे मनुष्य का सामान्य उदाहरण है जो लंगड़ा है। किसी ने उसे बताया था कि वह पहले ही क्रूस पर चढ़ाया गया, दफनाया गया और मृतको में से जी उठा था, और उसने इस अदभुत सत्य की ज्योति में अपना जीवन जीना चुना था।

आइये, हम अपनी चंगाई को अनुभव करें, और तब आत्मिक रूप से लंगड़े लोगों से, यीशु मसीह के साथ उनकी एकता की सहभागिता करने के द्वारा उन्हें चंगाई देने की सेवकाई को आरम्भ करें।

कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं

''यह मैं हूँ!''

जिस युवक ने यह कहा था उसने अपनी प्रसन्नता को अपनी आवाज में उत्तेजना, अपनी देहमुद्रा और आँखो में एक चमक के साथ इसे दर्शाया था।

उसने पहले से हमारे प्रभु के साथ अपनी एकता को जीना आरम्भ कर दिया था। वह एक ऐसे पास्टर से मिलना चाहता था जो उससे अधिक लम्बी अवधि से अनुग्रह के इस जीवन का अनुभव रखता था। उनके वार्तालाप के मध्य, पास्टर ने इस युवक को बताया कि वह आश्चर्यकर्म करने वाला एक सेवक बन सकेगा और अन्य बातों के साथ ही वह कोढ़ियों को शुद्ध करेगा।

पास्टर ने उससे कहा, ''जैसा कि तुम जानते हो, पवित्रशास्त्र में एक कोढ़ी को जिन नियमों को पालन करना था, उनमें से एक उसका एकाकी जीवन था''। इस पर युवक ने सिर हिला कर सहमति जतायी और उसने बताया कि वह पवित्रशास्त्र के इस गद्यांश से परिचित था। इसके बाद पास्टर ने उसके साथ ऐसी अनेक बातों की सहभागिता की जिनके कारण हम समाज में सामान्य रूप से कार्य नही कर पाते है। इसे ''आत्मिक कोढ़ की बामारी'' कहा जा सकता है।

पास्टर ने आगे कहना जारी रखा, ''हमें कोढ़ी बनाने वाली बातों में एक बात हमारे भय हैं, और इसके बाद जब उन्होने यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को अनुभव करना आरम्भ किया तब वे अपने भयों से मुक्त किये गये – और इस स्वतंत्रता में उन्हें आत्मिक कोढ़ से चंगाई मिल गयी है।

इस बिन्दु पर युवक ने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया और बताया कि, ''यह बात मेरे साथ सत्य है!'' उसने कहा कि आज की सुबह वह एक ऐसे स्थान पर गया था जहां वह पहले भी बहुधा जा चुका था। उसने बताया, ''मैने यह देखा कि जब से मैं

वहां जा रहा था तब से पहली बार मैं वहां उन लोगों से स्वतंत्रतापूर्वक बातचीत कर पाया जिनसे पहले बात करने में डरता था।''

वह युवक उस पासबान के पास से इस बारे में पूर्णतया विश्वस्त होकर गया कि विश्वासियों के साथ यह सहभागिता करने के द्वारा कि वे यीशु के साथ मृत्यु दफनाये जाने और पुनः जी उठने में एकता रखते थे, वह भी एक आश्चर्यकर्म करने वाला व्यक्ति बन सकेगा।

हमारे आस–पास के अन्य लोगों के साथ काम करने से हमें सामान्यतः हमारा संकोच ही नही रोकता है। इसमें कड़वाहट, घृणा, अन्य लोगों से कम महत्वपूर्ण होने की भावनायें और ईर्ष्या भी उतनी ही बड़ी रूकावट बनाते हैं।

इसके साथ ही हम आत्मिक कोढ़ी तब भी बनते हैं जब हमारे जीवनों में ऐसे लक्षण पाये जातें हैं जिनके कारण अन्य लोग हमारे साथ संगति नही रखना चाहते हैं। यह बातें जैसे कि क्रोध के आवेश, घृणा, और एक आलोचनात्मक आत्मा भी, बहुधा अन्य लोगों को हमसे बचने के प्रति बाध्य करती हैं।

लाजर को उसके कफन के कपड़ों से मुक्त करने में भी आत्म्कि रूप से कोढ़ियों की चंगाई चित्रित की गयी है। वह जीवित तो था परन्तु जब तक शिष्यों ने उसे स्वतंत्र नही किया तब तक वह अन्य लोगों के साथ संगति का अनुभव करने के अयोग्य था। हमें भी अपने आस–पास मौजूद आत्मिक कोढ़ियों के लिये यही करना चाहिये।

निष्कर्ष के रूप में, हमें यह याद रखना है कि यह परमेश्वर है जो हमारे लिये आश्चर्यकर्म करता है। फिर यह समझ रखना कि परमेश्वर ने हमें आश्चर्यकर्म के अपने उपकरणों के रूप में चुना है, हमें परमेश्वर का अत्यन्त अभारी होने और अपनी एक स्वस्थ आत्म–छवि की भावनाओं से परिपूण करेगा।

आप कोई विशेष व्यक्ति हैं!

अपने नगर की गलियों में घूमते हुये वे आश्चर्यकर्म करने के प्रति जो यीशु ने किये थे बल्की उससे भी बड़े आश्चर्यकर्म करने के लिये आप परमेश्वर के द्वारा दिये गये अवसर हैं।

इस अध्याय के साथ ही हम उसे विभाग को समाप्त कर रहे हैं जिसने उन परिवर्तनों को बताया है जिनकी अपेक्षा हम तब कर सकते हैं जब हम यीशु के साथ अपनी एकता को जीना आरम्भ करते हैं। आगे भाग–5, अनुग्रह के उत्तेजनात्मक जीवन से सम्बन्धित कुछ व्यवहारिक विषयों पर परिचर्चा करता है।

भाग – 5

ध्यान देने के लिये कुछ व्यवहारिक बातें

अब तक की गयी अधिकतर परिचर्चायें मुख्यतः ''धर्म सैद्धान्तिक'' रहीं हैं। यद्यपि, अनुग्रह के जीवन के बारे में हमें उन बातों को भी जानना चाहिये, जो ''धर्म सैद्धान्तिक'' होने के बजाये अधिक ''व्यवहारिक'' हैं। इन पर ''व्यवहारिक बातें'' विषय–वस्तु के अर्न्तगत विचार–विमर्श किया गया है।

जिन लोगों को अनुग्रह के जीवन को जीना जारी रखना है उन्हें अवश्य ही दुख उठाने को समझने की आवश्यकता है। इस भाग का आरम्भ इसी विषय–वस्तु पर एक परिचर्चा के साथ आरम्भ होता है। यीशु के साथ एकता को जीने के आरम्भिक दिनों में इस नयी जीवन शैली के बारे में अनेक प्रश्न पूछे गये हैं। इनमें से अनेक के उत्तर ''इस बात के लिये क्या करें?'' शीषर्क वाले अध्याय में दिये गये हैं।

वे सभी लोग जो अनुग्रह के जीवन को जीते हैं वे गलतियां करने के खतरे को भी उठाते हैं। ''चेतावनियां'' शीर्षक वाला अध्याय कुछ ऐसी ही सम्भावित गलतियों को बताता है। अन्त में, ''आज्ञापालन वाली आज्ञाकारिता'' शीषर्क का अन्तिम अध्याय, अनुग्रह के जीवन में परिपक्व होने पर व्यवहारिक विचारों को प्रस्तुत करता है।

अध्याय – 16

दुख उठाने को समझना

किसी ने इस प्रकार कहा है, ''जीवन, शत्रु के आक्रमणों की एक श्रृखंला है।''

इस व्यक्ति का यह कहना सही है – और हम मसीही भी इसे अनुभव करेंगे। हम जितने अधिक परिपक्व होते जाते हैं, उतना ही हम हमारे दुख उठाने के लिये, परमेश्वर के उद्देश्यों को अनुभव करते हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि मसीहत कुछ आमोद–प्रमोद जैसी है। वहीं कुछ लोगों ने मसीहत को आर्थिक समृद्धि और सिद्ध स्वास्थ्य के प्रति एक सुनिश्चित तरीका बना दिया है। क्या हममें से कुछ लोगों ने यह भुला दिया है कि हम एक ऐसे अगुवे के अनुयाई हैं जिसके पास उसके पार्थिव जीवन में ''सिर धरने की भी जगह नहीं थी'' (मत्ती 8:20)। और अपनी यातना भरी मृत्यु में उसे ''अपराधियों के संग गिना गया था'' (मरकुस 15:28)?

यदि हम मसीहत से दुख उठाने को हटा देंगे, तो हम क्रूस को हटा देते हैं। जब हम क्रूस को मसीहत से हटाते हैं तब हम सम्पूंर्ण मसीही आन्दोलन को ही नष्ट कर देते हैं।

यीशु के साथ हमारी एकता को जीने के प्रति दुख उठाना इतना अधिक संलग्न है कि एक ऐसा मसीही जो इसे नहीं समझता है वह अनुग्रह के जीवन को जीने के योग्य नहीं होगा। इसलिये, विश्वासियों के जीवनों में दुख के स्थान के बारे में, बाइबिल के

अनुसार शिक्षाओं की कुछ समझ अवश्य ही हमारे पास होनी चाहिये।

यीशु के साथ एकता को जीने के प्रति दुख उठाना अनिवार्य है

यीशु के साथ हमारी एकता को जीने के हमारे अनुभव के प्रति दुख उठाना, अनेक तरीकों से सम्बन्धित होता है।

दुख उठाना बहुधा हमें अनुग्रह के सन्देश को ग्रहण करने के लिये तैयार करता है

''पिछले दो सप्ताहों से परमेश्वर मुझे इस सन्देश के लिये तैयार कर रहा है।'' इस युवक ने उस व्यक्ति से इन शब्दों को अत्याधिक बल दे कर कहा था जिसने एक कलीसिया की आराधना सभा में यीशु मसीह के साथ हमारी एकता के सन्देश को कुछ देर पहले ही प्रस्तुत किया था। इस युवक ने जो एक बाइबिल कॉलेज मे एक शिक्षक था – आगे अपनी उस गहरी निराशा को बताना जारी रखा था जिसे उसने पिछले दो सप्ताहों की अवधि में अनुभव किया था।

यह कोई असामान्य घटना नही है।

जब परमेश्वर हमें अनुग्रह के जीवन की सहभागिता करने में उपयोग करना आरम्भ करता है तब हम यह पाते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति इसे सुनने के लिये तैयार नहीं है। लगभग प्रत्येक बार, यह एक ऐसा ''आहत'' व्यक्ति होगा, जो जीवन को बदलने वाले इस सन्देश को सुनने के लिये तैयार मिलता है।

हमारे ही समान उन्होंने भी यह खोजा है कि, ''यीशु के लिये हमारे सर्वोत्तम प्रयास'' कारगर नहीं होते हैं। हमारे ही समान, वे भी, निराशा की एक दशा में हैं और अपनी असफलता और भ्रम के लिये पुनः परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने को तैयार हैं। हमारे समान, वे भी, जानते हैं कि मसीही जीवन में कुछ ऐसा और

भी है जिसे उन्हें अवश्य ही पाना है।

यहां यह दोहराना आवश्यक है कि किसी ऐसे व्यक्ति के हाथों में जिसने अभी अपने प्रयास की विफलता को नहीं जाना है यह पुस्तक मात्र किसी अन्य पुस्तक के ही समान होगी। यद्यपि एक ऐसे व्यक्ति के लिये जिसे अपने प्रयास की विफलता का ज्ञान है, इस पुस्तक को पढ़ना, एक नये दिन और एक नये जीवन का आरम्भ हो सकता है। परमेश्वर द्वारा भेजे गये दुख से टूटना, अनुग्रह द्वारा जीवन जीने के लिये आवश्यक अत्यन्त महत्वपूर्ण बातों में से एक हो सकती है।

दुख उठाना हमें अनुग्रह के जीवन का अनुभव करने के योग्य बनाता है

मैं अनेक माह से अनुग्रह के जीवन का अनुभव कर रहा था जब मेरा बाइबिल अध्ययन मुझे पुनः 2कुरिन्थियों 12:1–10 के ''देह में कांटे'' वाले सन्दर्भ पर लेकर आया था। मैं इस गद्यांश से सुपरिचित था परन्तु इससे पहले मैंने अपने उस नये जीवन के साथ, जिसे परमेश्वर ने मुझे दिया था इसके सम्बन्ध को नहीं देखा था।

जब मैंने यह पुनः पढ़ा कि ''देह में कांटा'' चुभना पौलुस के लिये आवश्यक था जिससे कि वह अनुग्रह के द्वारा जीवन को जी सके, तब मैं इतना अधिक आश्चर्यचकित हुआ कि पौलुस से इस बारे में पूछने लगा। मैंने कहा, पौलुस, तुम तो वह व्यक्ति हो जिसने हमें सिखाया था कि हम पाप के प्रति मरे हुये और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं। और अब तुम मुझे बता रहे हो कि अनुग्रह द्वारा जीवन जीने के लिये मुझे अवश्य ही दुख उठाना चाहिये।''

स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ समझने और परमेश्वर के प्रति जीवित होने को चुनने के द्वारा जो जयवन्त जीवन मैं अनुभव कर रहा था, केवल वही मुझे अपने लिये आवश्यक जान पड़ता था। फिर भी मैं पौलुस के साथ तर्क नहीं कर सकता था। यदि विश्वास

के जीवन में बने रहने के लिये पौलुस को परिस्थितियों की आवश्यकता थी, तो वैसे ही हमारे साथ भी है।

समय के साथ–साथ, मैंने पौलुस के एक अन्य कथन को जाना जो विश्वास के लिये दुख उठाने से सम्बन्धित है। जब आप पौलुस के इस कथन को पढ़ते हैं, तो यह ध्यान रखें कि हमारे पाप की समस्या, हमारा स्वयं में विश्वास रखना है – हमारी यह मनोवृति, कि हम यह सोचते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं। वह गद्यांश इस प्रकार से है :

> ''हे भाइयों, हम नहीं चाहते कि तुम हमारे उस क्लेश से अनजान रहो, जो आसिया में हम पर पड़ा, कि ऐसे भारी बोझ से दब गए थे, जो हमारी सामर्थ से बाहर था, यहां तक कि हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। बरन हम ने अपने मन में समझ लिया था, कि हम पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है कि हम अपना भरोसा न रखें, बरन परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है'' (2कुरिन्थियों 1:8–9)।

यह कथन इतना अधिक स्पष्ट है, कि यहां किसी अन्य व्याख्या की आवश्यकता नहीं है। यह पौलुस की इस सम्बन्ध में एक अन्य गवाही है कि उसे स्वयं पर अपनी निर्भरता पर विजय पाने के लिये दुख भी उठाना था जिससे कि वह परमेश्वर में विश्वास रख सके।

यीशु मसीह जो हमारे द्वारा जीवन जीता है उससे हमारी पीढ़ी के द्वारा घृणा की गयी है

यदि हमें अपने इस नये आचरण को आगे जारी रखना है तो इसका एक तीसरा कारण कि हमें दुख उठाने को समझना है वह है जैसा कि हमारे प्रभु यीशु ने कलवरी पर अपनी क्रूर मृत्यु के ठीक कुछ घन्टों पहले ही अपने शिष्यों को समझाया था। शिष्य अपने

जीवन भर जिन कष्टों को पापी लोगों के द्वारा भोगने जा रहे थे उसके प्रति वे धैर्य रखें इस लिये यीशु ने उन्हें तैयार करते हुऐ कहा था, '

'यदि संसार तुम से बैर रखता है तो तुम जानते हो कि उसने मुझसे भी बैर रखा था'' (यूहन्ना 15:18)।

यदि यीशु मसीह पुनः देह धारण करके इस संसार में आये तो इक्कीसवीं शताब्दी के लोग भी उसके प्रति वैसी ही प्रतिक्रिया करेंगे जैसा कि पहली शताब्दी के लोगों ने की थी। इस तथ्य के बजाये कि वह एक भिन्न परिवेश में होगा, परन्तु उसका जीवन पहले जैसा ही होगा क्योंकि लोगों के हृदय परिवर्तित नहीं हुए हैं।

यीशु मसीह हमारी इक्कीसवीं शताब्दी की संस्कृति में भी रहता है। वह उन लोगों में और उनके द्वारा यह जीवन जीता है जो उसके साथ अपनी एकता को समझते और जीतें हैं। पौलुस ने यह इसलिये नहीं कहा था, ''कि अब मैं जीवित नहीं रहा लेकिन मसीह मुझ में जीवित है'' क्योंकि वह एक श्रेष्ट सन्त था। उसने यह इसलिये कहा था, क्योंकि परमेश्वर ने उस पर यीशु मसीह के साथ उसकी एकता को प्रगट किया था और वह उस एकता को जी रहा था। जब हम इस एकता को जीते हैं तब हम कह सकते हैं, ''कि अब मैं जीवित न रहा लेकिन मसीह मुझमें जीवित हैं।''

जब संसार हममें विद्यमान यीशु का साक्षात्कार करता है तो वह हमारे प्रति नहीं लेकिन उसके प्रति प्रतिक्रिया करता है। और उसके प्रतिक्रिया बहुधा एक घृणा युक्त प्रतिक्रिया है। इसलिये हम संसार की घृणा के पात्र बन जाते हैं।

संसार हमसे उस सीमा तक घृणा करता है जो इतनी अधिक है कि संसार भी उसे नहीं समझ पाता है। हमारे प्रभु यीशु ने अपने पार्थिव जीवन में इस घृणा का अनुभव किया था और वही घृणा अब हमारी ओर निर्देशित है। जिसकी प्रेरणा को स्रोत शैतान है।

हमें यह अवश्य जानना है कि हम स्वयं शैतान और उसके

राज्य को हानि नहीं पहुंचा सकते हैं परन्तु यीशु ऐसा कर सकता है। जब शैतान यह जानता है कि यीशु हमारे द्वारा अपना जीवन जी रहा है तो वह और अधिक तीव्रता और दक्षतापूर्वक हमें रोकने का प्रयास करता है।

अपने आक्रमण में वह प्रत्येक उपलब्ध हथियार का उपयोग करता है। क्योंकि वह न केवल एक झूठा है परन्तु एक हत्यारा भी है, अतः ''मृत्यु'' सदैव उसका एक उद्देश्य है। वह हमारी मसीही गवाही और यीशु के लिये हमारे प्रभाव को नाश करना चाहता है।

विश्वासियों पर शैतान के आक्रमण को एक पास्टर के निम्नलिखित अनुभव द्वारा भली प्रकार से समझा जा सकता है, जो कुछ वर्षों से यीशु के साथ अपनी एकता को जी रहा था।

एक डीकन ने अपने पास्टर से कहा, ''हमारे चर्च में अनेक अनुचित बातें हो रही हैं और ऐसा लगता है कि यह सब आप की गलती है।'' यद्यपि, क्योंकि वह इस परिस्थिति की सच्चाईयों को वास्तव में जानता था अतः डीकन ने आगे कहा, ''परन्तु हममें से जो लोग वास्तविक रूप से इसे समझते हैं, वे जानते हैं कि इसमें आप की गलती नहीं है।'' संयोग से, पास्टर पर्याप्त लम्बी अवधि से अनुग्रह के द्वारा जीवन जी रहा था जिससे कि वह समझता था कि परमेश्वर उसमें अनुग्रह के जीवन को बढ़ाने के प्रति, इन कठिन समय–कालों का उपयोग कर रहा था।

एक शान्ति प्रिय व्यक्ति के लिये, बढ़ते हुऐ झूठे आरोपों, बातों, और घृणा और क्रोध भरी दृष्टि, और बिना किसी कारण के अस्वीकृति, का दोषी ठहराया जाना कठिन है।

यद्यपि, जब हम यह समझते हैं कि हमारे भीतर रहने वाले यीशु मसीह से यह घृणा की जा रही है तब हम इस कष्ट और अस्वीकृति को समझ पाते हैं और उसे सहन भी करते हैं। इसके

साथ ही क्योंकि यह यीशु के लिये है, अतः हम उसके साथ मनुष्यों द्वारा तिरिस्कृत होने और नकारे जाने में आनन्दित होते हैं।

परमेश्वर की प्रभुसत्ता के प्रकाश में दुख उठाना

अपने शरीर में एक कांटे के सम्बन्ध में 2कुरि. 12:7–10 में पौलुस की गवाही – अन्य गद्यांशों में भी – हमें यह सच्चाई बताती है कि परमेश्वर की इच्छा में होने के अतिरिक्त और कोई भी दुख हम तक पहुंचने के योग्य नहीं है।

कुछ मसीही समूहों में परमेश्वर की प्रभुसत्ता विषय–वस्तु पर बहुत कुछ परिचर्चा की गयी है। इस सम्बन्ध में अनेक असहमतियां भी उठी हैं, जैसे कि, उद्धार के प्रति हमारे चुनाव के धर्मसिद्धान्त पर। फिर भी कुछ कारणवश व्यक्तिविशेष मसीही जीवनों में परमेश्वर की प्रभुसत्ता के धर्म सिद्धान्त पर बहुत कम ध्यान दिया गया है।

यहां हमें यह चेतावनी मिलनी आवश्यक है कि हमारे आन्तरिक और बाहरी जीवनों के मध्य एक भिन्नता है। अपने हृदयों में हम सम्भवतः परमेश्वर की इच्छा के बाहर जीवन जीना चुन सकते हैं। यद्यपि हमारी बाहरी परिस्थितियां पूर्ण रूप से परमेश्वर के नियंत्रण के अर्न्तगत हैं।

जब हम परमेश्वर की प्रभुसत्ता को बताते हैं तो हमारा अभिप्राय यह होता है कि सभी बातों पर उसका पूर्ण नियंत्रण है। यदि हमारे लिये उसकी इच्छा नहीं है तो कुछ भी, हम तक नहीं पहुंच सकता है। यदि हमारी सारी परिस्थितियों में परमेश्वर प्रभु सत्ता सम्पन्न नहीं है तो पौलुस प्रेरित 1थिस्स. 5:18 में हमें क्यों सब बातों के लिये धन्यवाद करने को कहता है ? और क्यों पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करेगा कि हम सब बातों के लिये सदैव धन्यवाद देते रहें (इफिसियों 5:20)?

हम हर बात के लिये धन्यवादित हो सकते हैं इसका कारण

यह है कि, ''सभी बातें'' परमेश्वर की और से हैं, और हमारी आशीष के उद्देश्य के लिये हैं।

पहले यह बताया गया था कि जब यीशु मसीह हमारे द्वारा जीवन जीता है तो हमसे अत्याधिक घृणा की जायेगी। यहां यह मानना कठिन है कि शैतान और दुष्ट लोगों के हाथों हम कष्ट उठायें, यह हमारे लिये परमेश्वर की इच्छा हो सकती है। क्या बाइबिल यह सिखाती है? हां, यह सत्य है। पिन्तेकुस्त के दिन घटने वाली सारी अलौकिक घटनाओं को समझाने में, शमौन पतरस ने यह घोषणा की थी :

''उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुमने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला'' (प्रेरितो के काम 2:23)।

दुष्ट लोगों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था; पापी लोगों के द्वारा उसकी हत्या की गयी थी। हत्या, पाप है। यद्यपि क्रूस पर हमारा प्रभु यीशु पिता परमेश्वर की इच्छा के केन्द्र में था। अनन्त काल से, पिता ने हमारे प्रभु के क्रूस पर चढ़ाये जाने की योजना बनायी थी। हम ऐसे विचारों को समझने के योग्य नहीं है। केवल विश्वास के द्वारा हम उन्हें स्वीकार करते हैं।

जब हम यीशु के साथ अपनी एकता को अनुभव करना आरम्भ करते हैं तब हमारे कष्ट बढ़ सकते हैं, क्योंकि जब हम इस जीवन को चुनते हैं तब परमेश्वर जानता है कि हमने उस पर पूरी तरंह निर्भर रहने के एक जीवन की इच्छा की है।

हमें यह नहीं सोचना चाहिये कि हमारे कष्ट उठाने में परमेश्वर आनन्दित होता है। हमारी इस मनोवृति कि हम सोचते हैं हम सब कुछ जानते हैं, से हमें स्वतंत्र करने के लिये परमेश्वर कष्ट का उपयोग करता है जिससे कि हम उसमें विश्वास के द्वारा अपना जीवन जी सकें।

यहां यह सुझाव नहीं दिया जा रहा है कि सारे कष्ट केवल

इस उद्देश्य के लिये हैं कि स्वयं में हमारे विश्वास को हटाया जाये। सारे पाप कष्ट लाते हैं। रोमियो 8:17 के अनुसार हमारा कष्ट उठाना परमेश्वर का एक तरीका है कि हममें अनन्त महिमा प्रदान करे। फिर भी अन्य कारणों के अपेक्षा कष्ट उठाना हमें परमेश्वर में विश्वास रखने के लिये बाध्य करता है।

हमें सारे कष्टों का सामना इस मान्यता के साथ करना चाहिये कि यह सम्भवतः थोड़े समय के लिये ही हो सकते हैं, और फिर परमेश्वर इन्हें हमसे दूर करना चुन सकता है। पौलुस ने अपने शरीर में कांटे को हटाये जाने के लिये प्रार्थना की थी। हमें अपने प्रत्येक बोझ को परमेश्वर के पास लाना चाहिये जिससे कि उस विषय में उसकी इच्छा को जाने। यद्यपि यह उसकी इच्छा है, कि वह बोझ को हटाये या न हटाये।

यह समझ रखना कि हमारी परिस्थितियां पूर्णतया हमारे सर्वप्रेमी, सर्व बुद्धिमान, सर्वज्ञानी और सर्वसामर्थी परमेश्वर के अर्न्तगत हैं, हमारी सहायता करेगी कि जीवन में अनेक कष्टदायक अनुभवों को सहन करें।

एक महिला ने आनन्दपूर्वक अपने पास्टर को बताया कि, ''मैं अपने भाईयों और बहिनों की उनके दुख के समयों में सहायता करती रही हूँ। फिर अपने आवाज और चेहरे पर विजय को दर्शाते हुये उसने आगे कहा, ''इससे पहले कि आप हमारे पास्टर बने, यह दूसरी तरीके से रहा था। मेरे भाई व बहिन अब मेरे प्रति सेवकाई कर रहे थे।''

अपने भाईयों और बहिनों के साथ उसने, पिछले रविवार को ही अपने पिता को दफनाया था। उन्होंने अपनी माँ को भी केवल एक वर्ष पहले ही दफनाया था। यह परिवार असामान्य रूप एक दूसरे की घनिष्ठता में था।

वह और उसका पास्टर, दोनो जानते थे कि पास्टर की

सेवकाई के बारे में उसकी टिप्पणी एक बात में केन्द्रित थी – उसने हमारी दैनिक परिस्थितियों में परमेश्वर की प्रभुसत्ता को सिखाया था।

आईये 1थिस्सलुनिकियों 5:18 में वर्णित पौलुस के वचनों का पालन करें, कि हमें सब बातों में धन्यवाद करना है। अनेक लोगों ने जब यह किया तो उनकी परिस्थितियां बदल गयी, और धन्यवाद देने के द्वारा अन्य लोगों ने अपने कष्टदायक परिस्थितियों में शान्ति प्राप्त की है।

इसे व्यवहार में लायें।

अध्याय – 17

इस विषय में क्या करें ?

हम तब क्या करते हैं जब हम यह जानते हैं कि हम किसी ऐसे रोमांचकारी स्थान की यात्रा पर जायेंगे जहां हम पहले कभी नहीं गये हैं?

हममें से अधिकतर लोग उस स्थान के बारे में कुछ जानना आरम्भ करते हैं जहां हम जा रहे हैं। हम नक्शों को ढूंढते हैं, हम चित्र जमा करते हैं और किसी ऐसे व्यक्ति से प्रश्न करते हैं जो पहले वहां जा चुका है।

हम बहुधा जीवन में किसी भी नयी बात के लिये इसी इच्छा के साथ प्रतिक्रिया करते हैं, कि उसके बारे में और अधिक जानें। अनुग्रह के जीवन में हमारी यात्रा के साथ भी यही सत्य है।

आशापूर्वक, अनुग्रह के जीवन के विषय में अनेक प्रश्नों के उत्तर पहले दिये जा चुके हैं। यद्यपि यह भी अति सम्भव है कि कुछ प्रश्नों का उत्तर पहले नहीं दिया गया है, अतः इस अध्याय का उद्देश्य यीशु के साथ हमारी एकता के बारे में अन्य प्रश्नों का उत्तर देना है।

हमने उन प्रश्नों को चुना है जिन्हें अन्य विश्वासियों ने अनुग्रह द्वारा जीवन जीने के अपने आरम्भ के सप्ताहों और महीनों में पूछा है, और विशेष रूप से यहां वे प्रश्न दिये गये हैं जिनका

उत्तर जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

क्या आप यह सिखा रहें हैं कि हम फिर कभी पाप नहीं करेंगे

कुछ ऐसे लोग जिन्होंने अनुग्रह के जीवन को नहीं जाना है, उन लोगों पर जो इस पर विश्वास करते हैं और जिन्होंने इसका अनुभव किया है, यह दोषारोपण करते हैं कि वे भविष्य में पाप से पूंर्ण स्वतन्त्रता सिखा रहे हैं।

पौलुस प्रेरित के साथ वे लोग जो यीशु के साथ एकता के संदेश को सिखाते हैं, वे यह सिखाते हैं कि विश्वासियों को स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ जानना है और यह समझना है कि उनका पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है। यद्यपि ऐसी समझ का यह अभिप्राय होता है कि हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना है कि हमें पाप नहीं करना है, परन्तु यह न तो इस बात का दावा है और न ही प्रतिज्ञा है कि हमसे आगे पाप नहीं होंगे।

यीशु के साथ एकता के संदेश के शिक्षक, पाप की दासता से एक छुटकारे की सम्भावना का दावा करते हैं। उदाहरण के लिये, वे सिखाते हैं, कि यीशु के साथ एकता को जीने के द्वारा एक विश्वासी कहता है कि वह क्रोध का एक दास बनने से स्वतंत्र होने की अपनी योग्यता में बढ़ने के योग्य हो सकता है।

यह कैसे सुसमाचार प्रचार में सम्मिलित होने को प्रभावित करेगा

''परमेश्वर के आश्चर्यकर्म करने वाले सेवक'' शीषर्क अध्याय में, हमारे प्रभु के इस कथन को बताया गया है कि जब हम उस पर पूंर्ण निर्भरता में जीवन जीते हैं, तब हम मृतकों को जीवित करेंगे। इसका आशय है कि हम बिना उद्धार प्राप्त लोगो की यीशु के पास आने के लिये अगुवाई करेंगे। हम केवल तभी परमेश्वर पर पूंर्ण निर्भरता में जीवन जीयेंगे जब हम यीशु के साथ अपनी एकता

को जीते हैं।

यीशु मसीह के साथ हमारी एकता को जीना हमें सुसमाचार प्रचार में और अधिक फलदायक बनाने में प्रभावकारी है।

सम्भवतः सुसमाचार प्रचार में सम्मिलित होने के हमारे तरीके में एक बदलाव आयेगा। अध्याय – 1 में जॉन की सुसमाचार प्रचार में फलदायक होने की गवाही को बताया गया था । वह साक्षी देता है, '' यीशु के साथ अपनी एकता को समझने से पहले मैं जिससे भी मिलता था उसके साथ यीशु मसीह की सहभागिता करने लगता था, परन्तु मैंने कभी भी किसी व्यक्ति को यीशु के लिये जीता नही था। अब मैं परमेश्वर को यह अनुमति दे रहा हूँ, कि वह मेरे गवाही देने में मार्गदर्शन करे और मुझे सामर्थ प्रदान करे, अब यद्यपि मैं सुसमाचार को कम सहभागिता कर रहा हूँ फिर भी भटके हुये लोगों की अगुवाई कर पाता हूँ कि वे यीशु के पास आयें।''

इससे भी अधिक हममें से कुछ लोगों ने जिन्होंने यीशु के साथ अपनी एकता को अनुभव किया है, हम मृत्यु, दफनाये जाने और पुनरूत्थान के संदेश को उद्धार प्राप्त लोगों तक ले जाने के उतने ही इच्छुक हैं जितने की हम इसे बिना उद्धार प्राप्त लोगों तक ले जाने के लिये इच्छुक हैं। एक द्वितीय जीवन परिवर्तन करने वाली सेवकाई को रखने की इस महान इच्छा के फलस्वरूप सम्भवतः हम बिना उद्धार प्राप्त लोगों के प्रति कम गवाही दे सकते हैं क्योंकि अब हम अपनी द्वितीय जीवन परिवर्तन करने वाली सेवकाई में समय व्यतीत कर रहे हैं। परन्तु इसके परिणाम स्वरूप हम सुसमाचार प्रचार में कम कुशल नहीं होंगे।

इसके साथ ही परमेश्वर इसमें समय लेगा कि हमारे द्वारा निर्देशित एक जीवन से, हमें, उसके द्वारा निर्देशित जीवन की ओर बदले। परिणामस्वरूप, हममें से अधिकतर लोगों को परमेश्वर के साथ पहले जितना समय व्यतीत करते थे और उसके साथ अधिक

समय व्यतीत करना होगा। पुनः इसका परिणाम कुछ अवधि के लिये सुसमाचार की कम सहभागिता करना हो सकता है। इसके साथ ही यह हमें अधिक प्रभावशाली गवाहियां बनायेगा।

हमें यह याद रखना चाहिये कि बाइबिल के अनुसार पौलुस ने अपने मसीही बनने के लगभग पन्द्रह वर्षों बाद सुसमाचार प्रचार के बड़े अभियानों को किया था। यदि परमेश्वर को पौलुस को परिवर्तित करने में इतना अधिक समय लग गया था तो हमें यह नहीं सोचना चाहिये कि हम अति शीघ्र एक ऐसे परिपक्व मसीही और साक्षी बन जायेंगे जैसा परमेश्वर हमें बनाना चाहता है।

ठीक वैसे ही जैसे कुछ लोग कम गवाही दे देते हुए अपनी गवाही में अधिक प्रभावकारी हो सकते हैं वैसे ही अन्य लोग अधिक गवाही देने के द्वारा प्रभावकारी बनेंगे। हम सम्भवतः पहली बार गवाही देना आरम्भ कर सकते हैं। खोये हुओं की गवाही देना कुछ ऐसा ही सकता है जिसे करने की हमें सदैव तीव्र इच्छा रही हो परन्तु हमारी आत्मिक अयोग्यता ने इसे असम्भव किया है। यीशु के साथ अपनी एकता को जीने के द्वारा हम इस अयोग्यता से स्वतन्त्र हो जाते हैं। यीशु के साथ अपनी एकता की जीने में हमें निरंतर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना है। ऐसा कोई भी मसीही जो परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण है, वह निरंतर प्रभु यीशु की साक्षी देगा।

यहां महत्वपूर्ण बात यीशु मसीह के साथ अपनी एकता के प्रकाश में परमेश्वर के साथ चलना है। वह बदलाव लायेगा। जब भी और जैसे भी उसकी इच्छा होती है वह हमें उपयोग करेगा। परन्तु हम एक बात के लिये सुनिश्चित हो सकते हैं। जब हम यीशु मसीह के साथ अपनी एकता में जीने के द्वारा परमेश्वर पर पूरी तरह से निर्भर रहते हैं तब हम मृतकों को जीवित करेंगे।

मैंने पहले क्यों नहीं सुना है?

जब एक व्यक्ति का जीवन अत्यधिक बदल जाता है –तो कई बार कुछ ही मिनटों के समय में – वह यह जानना चाहता है कि यह भेद अभी तक उन्हें क्यों नहीं बताया गया था। सामान्य रूप से यह पहला प्रश्न है, जो वे पूछते हैं।

जब परमेश्वर ने इस संदेश की सहभागिता के लिये मुझे उपयोग करना आरम्भ किया था तो इसके तुरन्त बाद ही मेरा इस प्रश्न से सामना हुआ था। कुछ विचार करने पर मैंने उत्तर दिया था, '' मैं नहीं जानता हूँ।'' तब से यह प्रश्न अनेक बार मुझसे पूछा गया है और अभी भी मेरा यही उत्तर है, '' मैं नहीं जानता हूँ।'' सम्भवतः परमेश्वर ही इसे भली प्रकार समझता है कि यह क्यों इतना जाना–माना संदेश नहीं है।

फिर भी यह सम्भव है कि अनेक लोगों ने पहने इस संदेश को सुना है। यह भी सम्भव है कि अनेक लोगों ने अनुग्रह के जीवन को सिखाने वाली पुस्तकों को पढ़ा है। फिर भी अपनी प्रभुसता में परमेश्वर ने उस समय उन्हें तैयार नहीं किया था कि इसे समझ सकें।

अनुग्रह के जीवन को मुझे सिखाने के लिये परमेश्वर ने जिन पुस्तकों का उपयोग किया था वे पुस्तके मेरे पुस्तकालय में एक से सात वर्षों तक रखी हुई थीं – और मैं उन्हें पढ़ चुका था लेकिन परमेश्वर ने अपना प्रकाशन मुझे तब दिया, जब मैंने जीने के बजाये तब मरना अधिक चाहा था यदि परमेश्वर मुझे नहीं बदल सकता है।

क्या प्रत्येक इसे नहीं सिखाता है?

जबकि कुछ लोग सोचते हैं कि अनुग्रह के द्वारा जीने के संदेश को उन्होंने पहले कभी नहीं सुना है वहीं अन्य लोग यह साक्षी देते हैं कि यह कुछ नया नहीं है। वे सोचते हैं कि उन्होंने सदैव इसे समझा है। उनका प्रश्न है कि, ''क्या प्रत्येक यही नहीं

सिखाता है ?''

दुर्भाग्यवश इस प्रश्न का उत्तर '' नहीं'' है।

कुछ लोग सोचते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें विश्वास द्वारा जीवन जीना है, अतः वे अनुग्रह के जीवन को समझते और अनुभव करते हैं।

अन्य लोग जिन्होंने वर्षों से यह जाना है कि यीशु मसीह उनमें था, यह निष्कर्ष निकालते हैं कि वे यीशु के साथ एकता के जीवन को पूर्ण तथा समझते और अनुभव करते हैं।

फिर भी अन्य लोग यह मानते हैं कि यीशु के साथ अपनी एकता को जीना, यीशु मसीह के प्रति ''पूर्णतया समर्पित '' होने से अधिक कुछ और नहीं है।

अनुग्रह के जीवन की यह अस्पष्ट और गलत अवधारणायें रखना बड़े दुख की बात है। हम बहुतायत के जीवन का अनुभव केवल तभी करते हैं जब हम क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में यीशु के साथ अपनी एकता को समझते हैं और जीते हैं। कोई भी यदि यह नहीं सिखा रहा है तो वह नये नियम में बताये गये जीवन को नहीं सिखा रहा है।

यदि यह कार्य नही करता है तब क्या?

जैसा कि इस पुस्तक में बार–बार यह बताया गया है कि हम क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान में यीशु के साथ अपनी एकता को तब तक अनुभव नहीं करेंगे जब तक हम यह नहीं मानते हैं कि हम क्रूस पर चढ़ाये गये हैं, दफनाये गये हैं, और पुनः जी उठे हैं। यहां विश्वास एक महत्वपूंर्ण बात है। यीशु के साथ अपनी एकता को अनुभव करने के लिये हमें यहां एक दूसरी महत्वपूंर्ण बात अवश्य जोड़नी है।

यहां इच्छा को कार्य रूप देना भी अवश्य होना चाहिये। हमें अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, अपने दफनाये जाने और अपने

पुनरूत्थान को अनुभव करना, अवश्य ही चुनना है।

विश्वास और चुनाव दोनों के लिये आवश्यकता पर भाग तीन के 'प्राथमिक प्रस्ताव' अध्याय में विस्तारपूर्वक परिचर्चा की गयी है जिसका संदर्भ रोमियो 6: 11–13 है। कोई भी जो सच्चाई से इन तीन पदों की पांच आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीता है वह अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान को अनुभव करेगा।

हम कैसे यीशु पर प्रत्येक समय अपनी सोच को बनाये रखते हैं?

यीशु के साथ एकता का जीवन, क्षण प्रति क्षण हमारे भीतर निवास करने वाली पवित्र आत्मा की अगुवाई के प्रति, प्रतिक्रिया करने की चुनौती देता है। इस प्रकार का एक जीवन परमेश्वर के साथ एक निरंतर संगति की मांग करता है। क्या ऐसा हो सकता है ?

परमेश्वर अपने प्रभुसत्ता कार्य के द्वारा उन लोगों को जो यीशु के साथ अपनी एकता को जी रहे हैं बहुधा अपने साथ एक निरंतर जारी विवेकशील सहभागिता रखने की अनुमति देता है। परमेश्वर यह अनुमति इसलिये देता है जिस प्रकार का जीवन आप पा सकते हैं उसे प्रगट करें। इसके बाद हम पुनः उसी प्रकार के जीवन में लौट आते हैं, जो हमारे पास पहले था – वह समय, जब आत्मिक वृद्धि आरम्भ होती है।

रोमियो 5:12 – 8:39 में अनुग्रह द्वारा जीवन जीने पर महत्वपूर्ण गद्यांशों में पौलुस ''आत्मा की व्यवस्था'' को बताता है। यह कहने के द्वारा कि पवित्र आत्मा एक व्यवस्था के द्वारा कार्य करता है, पौलुस का यह अभिप्राय है, कि वह सक्रीयता की अपनी विधि और उद्देश्य से कभी अलग नहीं जाता है। पौलुस लिखता है: '' क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है'' (रोमियो 8: 2)।

यहां पौलुस का अभिप्राय है, कि यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाये जाने दफनाये जाने, और पुनरूत्थान में हमारी एकता को अनुभव करने के प्रति हमारी अगुवाई करने के द्वारा हमें बहुतायत का जीवन देने के प्रति अपने अभिप्राय और कार्यों से पवित्र आत्मा कभी अलग नहीं हेाता है।

इसका अभिप्राय है, कि परमेश्वर पर और यीशु के साथ अपनी एकता की सच्चाई पर अपनी सोच को स्थिर करने का उत्तरदायित्व हमारा नहीं है। यह पवित्र आत्मा का उत्तरदायित्व है। हमारा कार्य तब प्रतिक्रिया करना है जब पवित्र आत्मा यीशु के साथ हमारी एकता और क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने, और पुनः जी उठने को मानने और चुनने की हमारी आवश्यकता को पवित्र आत्मा विश्वासनीय ढंग से हमें याद दिलाता है।

रोमियो 6:16 के अनुसार तब हम यीशु के साथ अपनी एकता को जीने के प्रति दास बन सकते हैं जब हम एक बार में एक कदम उठाकर रोमियो 6:11–13 की आज्ञाओं का, पालन करते हैं। इस तरीके से हम प्रभु यीशु पर और हमारे जीवनों के लिये उसकी क्षण प्रति अगुवाई पर और अधिक अपने मनों को लगा सकते हैं।

यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि हम पिछली लम्बी अवधि पर ध्यान देने के योग्य होते हैं और यह अनुभव करते हैं कि हम इन अवधियों में निरंतर परमेश्वर के साथ संगति में बढ़ रहे हैं।

हम यह कैसे जान सकते हैं कि यह निर्देशन परमेश्वर की ओर से है अथवा हमारे शरीर की ओर से है?

यीशु के साथ अपनी एकता की जीना सीखना, एक ऐसे शिशु के समान हो सकता है जो अभी चलना सीखा रहा है। यहां बहुत सी अनिश्चित्ता है। पवित्र आत्मा जैसे अगुवाई करता है, हम वैसे चलना चाहते हैं परन्तु हम यह स्वयं भली प्रकार से जानते हैं कि यह जानने के प्रति हम एक बात को परमेश्वर की इच्छा के रूप

में ले सकते हैं क्योंकि हम इसे इस रूप में चाहते हैं। तो हम कैसे निश्चित रूप से जान सकते हैं कि परमेश्वर अगुवाई कर रहा है?

यहां सच्चाई यह है कि हम सदैव यह नहीं जाने सकते हैं। हमें प्रायः निश्चितत्ता पूर्वक यह जाने बिना आगे बढ़ना चाहिये कि हम परमेश्वर की इच्छा में हैं या नहीं हैं। और जिस प्रकार एक शिशु अपना चलना सीखने की प्रक्रिया में अनेक बार गिरता है वैसे ही हम अनेक बार परमेश्वर की इच्छा का गलत अर्थ निकालेंगे। फिर भी सारे समय हम यह सीख रहे हैं कि उसकी इच्छा की व्याख्या कैसे करें।

यद्यपि, अपने स्वंय के निर्णयों के अनुसार कार्य करने के बजाये परमेश्वर के प्रति प्रतिक्रिया करने के जीवन के हमारे आरम्भिक दिनों में भी कुछ ऐसे तरीके हैं, जिनसे हम यह जान सकते हैं कि यह बात परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है या नहीं है। एक बात क्या परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है। इसका अत्यन्त सुनिश्चित आश्वासन यह समझना है, कि वह बात परमेश्वर के वचनों समरूपता में होनी चाहिये। परमेश्वर सदैव हमारी अगुवाई उन्हीं बातों को करने के लिये करता है जो उसकी वचन की अनुरूपता में हैं। अत : जितना अधिक हम परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में बसने देते हैं उतना ही यह जानना सरल हो जाता है कि कोई बात परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है अथवा नहीं।

यद्यपि यहां पर परमेश्वर हमें कुछ ऐसा करने के लिये कह सकता है जिसे करने की हम गहरी इच्छा रखते हैं; वहीं वह, हमें कुछ ऐसा करने के लिये कह सकता है जिसे करने की हमारी इच्छा नहीं है। अतः यह जानने के लिये कि कुछ बातों को करने के लिये परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है, का एक अन्य तरीका उस बात के विषय में शान्ति अनुभव करना अथवा उसके उचित होने की भावना को होना है। यदि एक बात को करने के लिये हम कुछ समय तक उसके उचित होने की भावना को निरंतर अनुभव करते

हैं तो हम यह मान सकते हैं कि चाहे इसे करने की हमारी इच्छा हो अथवा न हो, तौभी यह परमेश्वर की इच्छा है।

इसका एक सर्वोत्तम उदाहरण योना है। उसे नीनवे जाने के विचार से भी घृणा थी। उसने नीनवे के विरूद्ध दिशा में भागने का प्रयास किया था। फिर भी उसके लिये परमेश्वर की यह इच्छा थी कि वह नीनवे जाये और–वहां प्रचार करें। इसी प्रकार मूसा भी मिस्त्र लौट कर इस्त्राएलियों को दासता से छुड़ाना नहीं चाहता था, परन्तु वह ऐसा करे यह परमेश्वर की इच्छा थी।

तब एक इच्छा बहुधा परमेश्वर की आत्मा से नहीं परन्तु शरीर से होती है जब हम यह सोचते हैं कि इसे करने से अन्य लोगों की दृष्टि में भले प्रतीत होंगे। गलतियों को करने से भयभीत न हो। वह शिशु जो गिरने का इच्छुक नहीं है कभी भी चलना नहीं सीखा पायेगा। वह विश्वासी जो गलतियां करने का इच्छुक नहीं है कभी भी आत्मा में चलना नहीं सीखेगा। आत्मा में चलना सीखने के लिये एक अच्छा तरीका वह करना है जिसे आप मानते हैं कि यह परमेश्वर की इच्छा है चाहे आप इस विषय में पूरी तरह से सुनिश्चित नहीं भी हैं। जैसे–जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हम सीखते जायेंगे।

परमेश्वर तब विचलित नहीं होता है जब हम उसकी इच्छा का गलत अर्थ निकालते हैं । वह एक प्रेमी स्वर्गीय पिता है जो चाहता है कि हम चलना सीखें। वह तब विचलित होता है जब हम कभी चलने का प्रयास ही नहीं करते हैं।

हम इस संदेश की सहभागिता कैसे कर सकते हैं?

जब हमने वर्षों तक आत्मिक असफलता के साथ संघर्ष किया है और उस पर जय प्राप्त की है तब हम इसे सबको बताना चाहते हैं। हम गहरी इच्छा रखते हैं कि अन्ततः जो विजय हमें प्राप्त हुई है उसे परमेश्वर की अन्य संताने भी प्राप्त करें। वे यह कैसे कर

सकते हैं?

हम यीशु के साथ अपनी एकता के संदेश की सहभागिता, अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने, और पुनः जी उठने को जीने के द्वारा करते हैं। इसका अर्थ है कि सर्वप्रथम जैसे कि अविश्वासियों ने हममें एक भिन्नता को अनुभव किया है वैसे ही उद्धार प्राप्त लोग भी यह देखेंगे कि हम भिन्न हैं। वे हमारे इस नये प्राप्त हुए प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज और विश्वास को देखेंगे।

दूसरी बात, परमेश्वर के साथ चलने के इस नये तरीके के बारे में जो हमने अत्यन्त महत्वपूर्ण बातें सीखीं हैं उनमें से एक, क्षण प्रति क्षण पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन पाना है। जैसा कि पवित्र आत्मा हमारा निर्देशन करता है हम अन्य लोगों के साथ सहभागिता करेंगे ।

हम इस संदेश की सहभागिता, हमारी व्यक्तिगत गवाही के उपयोग द्वारा करते हैं। हमारे मसीही मित्र जानना चाहेंगे कि हम क्यों भिन्न हैं। हम उन्हें मसीही जीवन के प्रति अपनी नयी समझ और अपने नये तरीके के बारे में बताते हैं।

हम इस संदेश की सहभागिता पवित्र शास्त्रों को सिखाने के द्वारा करते हैं। इसके लिये हमें तैयार करने में परमेश्वर हमारी अगुवाई करेगा जिससे कि हम अन्य लोगों को यह बताने के योग्य होगें कि वे कैसे अनुग्रह के जीवन में प्रवेश कर सकते हैं। यह प्रक्रिया धीमी हो सकती है परन्तु जब हम पवित्र आत्मा की अगुवाई का अनुसरण करते हैं तो समय अनुसार हम इसके लिये तैयार होंगे कि जीवन को बदलने वाले इस संदेश को अन्य लोगों तक पहुंचाये।

परमेश्वर ने पहले से कुछ लोगों को तैयार किया है कि वे हमें सुनें। सामान्यतः हमें सुनने के लिये जो व्यक्ति सबसे अधिक तैयार है, वह व्यक्ति है, जो परमेश्वर से अत्यन्त प्रेम करता है, जिसने यीशु के साथ एकता के संदेश को पहले कभी नहीं सुना है,

उसे अपने मसीही प्रयासों में बहुत कम सफलता मिली है, जो अपने को बिल्कुल असफल पाता है और कठिन परस्थितियों में है।

जिस प्रकार बिना उद्धार प्राप्त लोगों तक सुसमाचार के संदेश को ले जाने पर प्रत्येक व्यक्ति प्रतिक्रिया नहीं करेगा वैसे ही कुछ लोग तब अप्रसन्न होंगे जब वे यह सोचते हैं कि हम सुझाव दे रहे हैं कि उन लोगों ने अभी तक यह नहीं खोजा है कि कैसे मसीही जीवन को जीयें। अवश्य ही, हमें यह सदैव याद रखना चाहिये कि लोगों के लिये यह स्वीकार करना कठिन होता है कि वे गलत हैं। वे सम्भवतः अपने अहंकार की वास्तविक समस्या रख सकते है। कुछ लोग हमें सुनेगे, पर कुछ ऐसा नहीं करेंगे । अन्य लोग इसके लिये सुनिश्चित होंगे कि हम झूठी शिक्षा दे रहें हैं।

जैसा कि हम बिना उद्धार प्राप्त लोगों से नकारात्मक प्रतिक्रियायें प्राप्त करते हैं ठीक वैसे ही हम उद्धार प्राप्त लोगों से नकारात्मक प्राप्त करेंगे। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम उद्धार प्राप्त लोगों से सकारात्मक प्रतिक्रियायें भी प्राप्त करेंगे। जिस प्रकार हमारा विशेष

अधिकार रहा है कि यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता जानने के लिये कुछ लोगों की हमने अगुवाई की है वैसे ही यह हमारा विशेष अधिकार होगा कि हम अनेक लोगों की अगुवाई बहुतायत के जीवन के प्रति करें।

मुझमें इतने धीमे–धीमे क्यों परिवर्तन होता है?

'' मैं प्रयाप्त तेजी के साथ परिवर्तित नहीं हो रहा हूँ। क्या अनुचित है ?'' यह कुछ ऐसे लोगों का निष्कपट रूप से कहना है जिन्होने यीशु के साथ अपनी एकता को चुना है।

हमारे परमेश्वर की प्रभु सत्ता में, वह प्रायः तब महान आनन्द के कुछ सप्ताह अथवा माह भी प्रदान करता है जब हम सर्वप्रथम अपने प्रभु यीशु के साथ अपनी एकता को जीते हैं।

सामान्यतः इसके बाद वह हमें हमारे पहले जैसे जीवन में लौटने की अनुमति देता है। यहां से वृद्धि आरम्भ होती है।

कृप्या यह निश्चित कर लें कि आप वृद्धि की अनुमति को समझते हैं। यदि नया नियम कुछ सिखाता है कि हमारा मसीही जीवन एक वृद्धि का जीवन है वहीं हमारे प्रभु यीशु ने बीज बोने वाले के दृष्टान्त में यह इंगित किया था, कि अचानक हुई वृद्धि का अभिप्राय यह होता है कि जड़े भूमि में गहराई तक नहीं गयी हैं। आइये, अचानक वृद्धि के बजाये हमारे प्रभु की इस योजना में मन लगायें कि वृद्धि निरंतर होनी चाहिये।

हम सब के पास अनेक ऐसे प्रश्न हैं इन का समाधान यहां नहीं किया गया है । जब हम प्रभु के साथ अपने इस नये जीवन को जारी रखते हैं तो वह अपने समय और तरीके से उत्तर देता है।

अध्याय – 18

महत्वपूर्ण चेतावनियां

''आप इस सड़क पर एक मील और आगे जायें और फिर बायीं ओर मुड़ें इससे आप अपनी इच्छित जगह पर पहुंच जायेंगे। यद्यपि आगे मोड़ पर सावधान रहें। यह एक खतरनाक स्थान है। वहां पहले अनेक बुरी दुर्घटनाऐं हो चुकी हैं।''

हममें से अनेक ने यात्रा सम्बन्धी इस प्रकार के दिशा निर्देश प्राप्त किये हैं जिसमें चेतावनियां भी सम्मिलित थीं। कुछ बार तो यह चेतावनियां अनावश्यक प्रतीत हुयी थीं जबकि कई बार इनके कारण हम दुर्घटनाओं से बच पाये थे।

यह अध्याय, अनुग्रह के जीवन को जीने में मार्गदर्शन करने का प्रयास करता है। इस प्रकार के एक कार्य में कुछ चेतावनियां को भी होना चाहिये। विजय के इस मुख्य मार्ग पर चलते हुये अनेक लोगों ने बहुत से ''खतरनाक स्थानों'' का सामना किया है। इनमें से कुछ चेतावनियां सम्भवतः आपके लिये अनावश्यक होंगी वहीं अन्य चेतावनियां आवश्यक हैं।

यह नहीं सोचें कि आपके साथ जो हुआ है उससे सुनने के लिये प्रत्येक व्यक्ति तैयार है

पिछला अध्याय यह सुझाव देता है, कि परमेश्वर में हमें नवीन रूप से मिले आनन्द को सुनने के लिये हमारे कुछ मसीही भाई–बहन तैयार नहीं है।

कुछ लोग हमें इसलिये नहीं सुनेंगे क्योंकि उन्होंने पहले

कभी इस सन्देश को नहीं सुना है। वे पिछले अनेक वर्षों से बाइबिल के ऐसे शिक्षकों से सीखते रहे हैं जिन्होंने कभी भी यीशु के साथ एकता के बारे में नहीं बताया था। ऐसे लोग यह नहीं मान सकते हैं कि मसीही जीवन जीने का एक अन्य तरीका भी हैं जिसे अनेक शिक्षकों ने उन्हें नहीं बताया है।

कुछ लोग अनुग्रह द्वारा जीवन जीने के सन्देश को इसलिये अस्वीकार कर देंगे क्योंकि वे मानते हैं कि यह सुसमाचार प्रचार के काम में रूकावट डालेगा। वे सर्वप्रथम स्वयं को सुसमाचार प्रचार के लिये समर्पित करते हैं और यह नहीं मान सकते हैं कि कुछ और बात इससे अधिक महत्वपूर्ण है। यद्यपि पौलुस का कहना था कि उसके जीवन की एक गहरी इच्छा यीशु मसीह को जानना है। यीशु मसीह के साथ उसके व्यक्तिगत सम्बन्ध के कारण पौलुस के सुसमाचार प्रचार में वृद्धि हुयी थी। हम भी उस जैसा अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

कुछ लोग इसलिये इस सन्देश को अस्वीकार कर देंगे क्योंकि वे इसे आपसे पहिले नहीं खोज पाये थे। परमेश्वर के वचन के इस सरल सत्य को ग्रहण करने में उनका अहंकार बाधा बन जायेगा।

कुछ मसीही इसे इसलिये अस्वीकार करेंगे क्योंकि परमेश्वर के लिये पूर्णतया उपलब्ध होने में उनकी कोई भी रूचि नहीं है। मसीही जीवन के प्रति उनका विचार केवल अपनी सुविधानुसार ही परमेश्वर के लिये उपलब्ध होना है।

कुछ मसीही अनुग्रह के सन्देश को इसलिये अस्वीकार करेंगे क्योंकि उन्हें यह लगता है कि वे अभी परमेश्वर के काम में सफल हैं। वे किसी भिन्न तरीके की कोई आवश्यकता नहीं देख पाते हैं।

कुछ मसीही इसलिये अनुग्रह के सन्देश को अस्वीकार

करेंगे क्योंकि वे इसे एक झूठी शिक्षा मानते हैं वे हमें ऐसे अन्य लोगों के समान देखेंगे जो अन्य क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से पवित्रशास्त्रों की गलत व्याख्या कर रहे हैं।

कुछ लोग इसलिये अनुग्रह के सन्देश को अस्वीकार करेंगे क्योंकि यह मसीही जीवन से संघर्ष को हटा देता है। हमारा शरीर कुछ करने की लालसा रखता है। यह परमेश्वर पर पूंर्ण निर्भरता के जीवन की कोई इच्छा नहीं रखता है। फिर भी हम जहां कहीं जाते हैं, हमें कुछ ऐसे लोग मिलते हैं जो इस जीवन परिवर्तनकारी सन्देश को सुनने के लिये तैयार हैं।

जैसे कि कुछ लोगों ने तब उद्धार प्राप्त किया था जब उन्होंने पहली बार यीशु की मृत्यु, दफनाये जाने और पुनः जी उठने के सन्देश को सुना था, वैसे ही कुछ लोग तब पहली बार अनुग्रह के जीवन में प्रवेश करेंगे जब वे अपने स्वयं के क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनरूत्थान को सुनते हैं। कुछ लोग सन्देश को ग्रहण करेंगे और फिर कई बार वर्षो बाद वे इसके अनुभव में प्रवेश करेंगे।

आनन्द और विश्वास के साथ अपने इस नये मिले जीवन परिवर्तनकारी सन्देश को लेकर आगे बढ़ें। कुछ लोग प्रतिक्रिया करेंगे ओर जयवन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। परन्तु कभी–कभी नकारे जाने के लिये तैयार रहें।

सम्भावित आलस्य के विरूद्ध सर्तक रहें

परमेश्वर सदैव सक्रिये रहता है। वह इस पृथ्वी पर सामर्थपूर्वक कार्यरत है। जब वह एक व्यक्ति में और उसके द्वारा जीवन जीता है तब वह व्यक्ति सक्रिये हो जाता है।

हमारे जीवनों में परमेश्वर के कार्य के प्रति प्रतिक्रिया करने में हमें सब कुछ करने के हमारे प्रयास से बदलाव के आरम्भिक दिनों में, हम

बहुधा घबड़ा जाते हैं। हम यह निर्धारित नहीं कर पाते हैं कि यह बात हमें परमेश्वर कह रहा है, अथवा यह हमारे शरीर की इच्छा है। यहां हमारा निष्क्रिये हो जाना सरल है। हमें यह होने की अनुमति नहीं देनी है। हमें अवश्य ही सक्रिये रहना चाहिये और गलतियां करने का इच्छुक होना चाहिये। परमेश्वर इसे समझेगा।

जब हम अनुग्रह के जीवन में प्रवेश करते हैं, तब हम एक जीवन जीने में प्रवेश करते हैं। हम उन शिशुओं के समान हैं जो चलना सीख रहें हैं। हम गिरेंगे, परन्तु फिर उठेंगे और प्रयास करेंगे। हम प्रतिक्रिया करने के इस जीवन को चलना सीख जायेंगे, परन्तु हमें चलना जारी रखना है।

अनुग्रह द्वारा जीवन जीने के अपने आरम्भिक महीनों में हम सम्भवतः पहले से कहीं अधिक समय एकमात्र परमेश्वर के साथ व्यतीत कर सकते हैं। यदि ऐसा होता है, तो हमें यह याद रखना चाहिये कि यद्यपि यह प्रतीत हो सकता है कि हम निष्क्रीय हैं, परन्तु हम वास्तव में सक्रियतापूर्वक उन सत्यों को लागू कर रहें हैं जो हमने अभी–अभी सीखे हैं।

यह सत्य है, कि नया नियम सिखाता है कि हम ''विश्राम'' के एक जीवन में प्रवेश कर सकते हैं। यद्यपि इब्रानियों 4:10 बताता है यह विश्राम, काम करने से विश्राम करना नहीं है। यह हमारे अपने कामों से एक विश्राम है जिससे कि हम परमेश्वर के कामों में प्रवेश कर सकें।

अनुग्रह के जीवन और कार्य के मध्य सम्बन्ध के विषय में हमें पौलुस प्रेरित के इस कथन के बजाये अन्य कोई अतिस्पष्ट कथन नहीं मिलता है :

> ''परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं: और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ परन्तु मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी किया–

तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था'' (1कुरिन्थियो 15:10)। अनुग्रह हमें कार्य करने को प्रेरित करता है।

अकेले होने को अस्वीकृत नहीं करें

हममें से कुछ लोग स्वभाव से ''सार्वजनिक जीवन'' पसन्द करते हैं। हम सदैव वहां होते हैं जहां कुछ सक्रिये रूप से हो रहा है। अतः हमें बाइबिल अध्ययन और प्रार्थना में अकेले एकान्त की लम्बी अवधियों के लिये पवित्र आत्मा की अगुवाई के प्रति प्रतिक्रिया करना कठिन लग सकता है।

इससे भी अधिक, कुछ अवधि के लिये परमेश्वर हमारे लिये उन मसीही सभाओं जैसे कि सम्मेलन आदि में जाने को असम्भव बना सकता है जो वर्षो से हमारे लिये एक आशीष रहीं है। (यह हमारी गृहकलीसिया में उपस्थित होने के सन्दर्भ में नहीं है – जो अभी भी अत्याधिक आवश्यक है)।

यीशु के साथ अपनी एकता को जीने के आरम्भिक दिनो में, हम एक नया धर्मविज्ञान और जीवन जीने का एक नया तरीका दोनो ही सीख रहे हैं। हम अपनी ओर से निरन्तर सक्रिये होने के एक जीवन से अब प्रतिक्रिया करने के एक जीवन की और अग्रसर हो रहे हैं। ऐसा लगता है कि यदि हम इन परिवर्तनों को अनुभव कर रहे हैं तो हममें से अधिकतर लोगों को परमेश्वर के साथ एकान्त समय की और लम्बी अवधियों को बिताने की आवश्यकता है। अब सोचने के नये तरीके और नयी आदतें स्थापित हो रहीं है।

हम अकेले रहें, यदि यह परमेश्वर की इच्छा है, तो हमें इसे आनन्द के साथ स्वीकार करना होगा और परमेश्वर को यह अनुमति देनी होगी कि जो कुछ उसके मन में है उसे वह हमारे जीवनों में वास्तविक बनायें।

इस मार्ग के केवल एक भाग को ही पूरा नहीं करें

अनेक वर्षों तक मैंने स्वयं ही पाप के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर के प्रति जीवित होने का प्रयास किया था। परन्तु इस अनुभव को मैंने केवल तभी जाना था, जब परमेश्वर ने मुझ पर यह प्रगट किया था कि मैं पहले से ही पाप के प्रति मरा हुआ और उसके प्रति जीवित हूँ। मसीही जीवन में विजय को चुनना ही पर्याप्त नहीं है। दूसरी ओर, यदि हम यीशु के साथ अपनी एकता को महत्व दे रहे हैं परन्तु जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण को त्याग नहीं रहे हैं, तब हमें विजय नहीं मिलेगी। हमें अवश्य ही यह मानना है कि हम पाप के प्रति मरे हुये और परमेश्वर के प्रति जीवित हैं।

वापस नही लौटें

ऐसे अनेक लोग जिन्होंने यीशु के साथ अपनी एकता के जीवन में चलना आरम्भ किया था उन्हें यह प्रलोभन होता है कि शरीर के साधारण जीवन में लौट जायें। इसके अनेक कारण हैं। आप इस पुस्तक में कुछ ऐसी बातों को पहले पढ़ चुके हैं जिनके कारण आप पीछे लौटना चाह सकते हैं।

यहां एक बात है, कि जब परमेश्वर जब हमारे अकेले होने के एक समय की योजना बनाता है तब कुछ लोग यह नहीं समझ पायेंगे कि उनके जीवनों में क्या हो रहा है। अनेक लोग हमारे साथ इस यात्रा को करने की इच्छा नहीं रखेंगे। अब हम कुछ ऐसे लोगों की घनिष्टता में नही रहते हैं जिनके साथ पहले हमारे बड़े घनिष्ट सम्बन्ध थे। इन घनिष्ट मित्रों की हानि भी हमें वापस लौटने पर बाध्य कर सकती है।

इसके साथ ही, अब हम पहले से अधिक दुख उठाते हैं। जब हम अपने क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने, और पुनः जी उठने को मानते हैं और इसे चुनते हैं तो यह परमेश्वर को इसके लिये स्वतंत्रत करता हुआ लगता है कि वह हमे ''शरीर में कांटा'' वाला अनुभव प्रदान करे (जैसे कि पौलुस ने 2कुरिन्थियों 12:7 में

अनुभव किया था), जिससे कि हम अनुग्रह के द्वारा जीवन जी सकें। इससे भी अधिक, शैतान यह जानता है कि अब हम उसके विरूद्ध हैं, और वह बहुधा अन्य लोगों का उपयोग करता है कि हमारे जीवन को कठिन बना दे।

यद्यपि, पीछे वापस लौटने का प्रत्येक प्रलोभन हमारे लिये स्वयं को अधिक सुरक्षित ढंग से अनुग्रह के जीवन में स्थापित करने का एक महत्वपूंर्ण अवसर हो सकता है यदि हम पीछे लौटने के बजाये आगे बढ़ते जाते हैं। अनुग्रह के जीवन में निरन्तर चलने का प्रत्येक निणर्य हमें पीछे लौटने के किसी भी प्रलोभन पर विजय के लिये सामर्थ प्रदान करता है।

हमारी वर्तमान मसीही सेवा

प्रभु यीशु के साथ हमारी एकता को जीने के द्वारा क्योंकि महत्वपूंर्ण परिवर्तन हुये हैं, अतः हम निर्णय ले सकते हैं कि हमारा वर्तमान सारा मसीही कार्य ही गलत है।

हमें यह समझना चाहिये कि यद्यपि हम यह नहीं जान पाये हैं कि मसीही जीवन को कैसे जीयें, परन्तु हमने अपने सम्पूंर्ण जीवन को व्यर्थ नहीं किया है। यदि हमने परमेश्वर से प्रेम रखा है, तो जो कुछ हमने किया है उसका अधिकतर भाग उसकी इच्छा के अनुसार है। हम सेवा के अपने वर्तमान स्थान में सम्भवतः उसकी इच्छा के केन्द्र में है।

अतः हमें परमेश्वर को हम पर यह प्रगट करने के लिये पर्याप्त समय देना चाहिये कि क्या वह हमारी सेवकाईयों में कोई भी बदलाव लाने की इच्छा रखता है। अन्यथा, हम अपनी कलीसिया अथवा मसीही सेवा के लिये बहुत से लोगों के लिये एक समस्या उत्पन्न कर सकते हैं।

यदि अकस्मात हम सेवा के अपने वर्तमान स्थानों से अलग हो जाते हैं, तो लोग सम्भवतः सोच सकते हैं कि हमने परमेश्वर के

साथ अपनी संगति को खो दिया है, और इससे हमारी गवाही को क्षति पहुंचेगी।

उन लोगों की ओर एक नकारात्मक स्वभाव के विरूद्ध सावधान रहें, जो अभी तक यीशु मसीह के साथ अपनी एकता का अनुभव नहीं कर रहे हैं

जब हम उन बदलावों को अनुभव करना आरम्भ कर देते हैं जो तब हम में हुये हैं जब हमने यीशु के साथ अपनी एकता को जीना आरम्भ किया है, तब शैतान हम में उन लोगों के प्रति नकारात्मक स्वभावों को उत्पन्न करने का प्रयास कर सकता है जिन्होंने अभी तक अनुग्रह के जीवन को प्राप्त नहीं किया है।

एक व्यक्ति ने यह स्वीकार किया था कि वह उन लोगों की ओर क्रोध का अनुभव कर रहा था जिन्होंने उसे शिष्य बनाया था क्योंकि उसने जाना था कि वे लोग मसीही वृद्धि के इस अत्यन्त महत्वपूंर्ण सत्य को बताने में असफल रहे थे।

कुछ लोगों ने अन्य उन विश्वासियों के प्रति अपने आत्मिक और बौद्धिक उच्चत्ता की भावनाओं को स्वीकारा था जो यीशु मसीह के अपनी एकता को नहीं समझते हैं।

यहां उन लोगों से जो हमें और हमारे इस नये सन्देश को अस्वीकार करते हैं उनके प्रति रोष अथवा उनसे भले होने की भावना का स्वभाव रखने का प्रलोभन हो सकता है।

हम यह निर्णय कर सकते हैं कि वे सब लोग अपने जीवनों को व्यर्थ कर रहे हैं जिनके प्रति अनुग्रह के जीवन को प्रगट नहीं किया गया है।

यहां उन लोगों के लिये विरोध रखने का प्रलोभन हो सकता है जो ''यीशु के अपनु सर्वोत्तम प्रयास करते हुये'' स्वयं को ''शारीरिक रूप से'' थका रहे हैं।

हम यह निष्कर्ष भी निकाल सकते हैं कि कोई भी उपदेशक जो यीशु के साथ अपनी एकता को नहीं जीता है उसके पास हमें सिखाने के लिये कुछ भी नहीं है।

कुछ लोग इसके लिये प्रलोभित हुये हैं कि अपनी कलीसिया को छोड़ कर एक ऐसी कलीसिया आरम्भ करने का प्रयास करें जो अनुग्रह द्वारा जीवन जीने के सन्देश पर निर्भित हों क्योंकि वे सोचते हैं कि उन्होंने अपनी वर्तमान कलीसिया में कुछ ही भली बातें देखी हैं। यद्यपि, आगे अपने समय पर, परमेश्वर हमारी इस बात के लिये अगुवाई कर सकता है कि अनुग्रह द्वारा जीवन जीने के सन्देश पर आधारित एक नयी कलीसिया स्थापित करें।

यह सभी मनोवृतियां अनुचित हैं। हमें इनके विरूद्ध सावधान रहना है। इनके विरूद्ध हमारी सर्वोत्तम सुरक्षा सामान्यतः यीशु के साथ अपनी एकता को जीना है।

जब हम अनुग्रह के अपने जीवन में एक खतरनाक स्थान का सामना करते हैं तो आशापूर्वक यह परिचर्चा हमारे लिये मूल्यवान होगी। अन्य कुछ बातें भी हैं जिन्हें यहां बताया नहीं गया है। जब हम इस महिमामय जीवन को जीते हैं, तब परमेश्वर, इनके प्रति और विजय के महान स्थानों में हमारा मार्गदर्शन करेगा।

अध्याय–19

आज्ञाकारिता के आज्ञाकारी होना

यह सम्भव है कि जब आपने इस पुस्तक को पढ़ना आरम्भ किया था तब आपने यीशु के साथ अपनी एकता को पहली बार अनुभव किया है। आपको यह अच्छा लगा है। आप जानते हैं कि यह आपके लिए श्रेष्ठ जीवन है। जब तक आप इस पृथ्वी हैं, आप चाहते हैं कि परमेश्वर अनुग्रह में होकर जीवन को व्यतीत करें।

आप इस निश्चित बात को कर सकते हैं। इस अन्तिम अध्याय का उद्देश्य यह दर्शाना है कि अनुग्रह द्वारा जीवन जीना, कैसे एक जीवनशैली बन सकता है।

पौलुस प्रेरित एक कथन के साथ रोमियों 6:3–13 की अपनी परिचर्चा का अन्त करके यह बताता है कि कैसे अनुग्रह के जीवन को जीयें : ''.....तुम व्यवस्था के आधीन नही वरन अनुग्रह के आधीन हो'' (रोमियो 6: 14)।

पौलुस का यह अभिप्राय नही है कि सारे विश्वासी अनुग्रह के आधीन हैं। यहां वह उन विश्वासियों का सन्दर्भ देता है जो रोमियो

6: 3–10 मे सिखाये जाने के अनुसार यीशु के साथ मृत्यु, दफनाये जाने, और पुनः जी उठने की अपनी एकता को समझते हैं और जो रोमियो 6: 11–13 की आज्ञाओं को मानते हैं। गलतियों 5: 18 में पौलुस लिखता है : ''परन्तु यदि तुम आत्मा के चलाये चलते हो, तो

व्यवस्था के आधीन नही रहे हो।''

फिर रोमियो 6: 16 में पौलुस यह समझाता है कि कैसे वे विश्वासी जिन्होने अनुग्रह के जीवन में प्रवेश किया है अन्ततः इसे एक जीवनशैली के रूप में अनुभव कर सकते हैं। वह लिखता है :

> ''क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आपको दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिसकी मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है ?'' रोमियो 6: 16

यह कथन हमें दो विकल्प प्रदान करता है। हम पाप के आज्ञाकारी हो कर या तो पाप के दास हो सकते है अथवा हम आज्ञाकारिता के आज्ञाकारी होकर आज्ञाकारिता के दास हो सकते हैं। हम पौलुस से यह अपेक्षा कर सकते थे कि वह अपने इस कथन में पाप अथवा परमेश्वर कह सकता था फिर भी वह लिखता है कि हम तो पाप अथवा आज्ञाकारिता के आज्ञाकारी हो सकते हैं। हम पौलुस से यह अपेक्षा कर सकते थे कि वह अपने इस कथन में पाप अथवा परमेश्वर कह सकता था। फिर भी वह लिखता है कि हम या तो पाप अथवा आज्ञाकारिता के आज्ञाकारी हो सकते हैं।

आज्ञाकारिता के आज्ञाकारी होने के द्वारा पौलुस का क्या अभिप्राय है ? ध्यान दें, कि आज्ञाकारिता के आज्ञाकारी होने का परिणाम धर्मिकता है। रोमियो 6: 11–13 की अन्तिम पांच आज्ञाऐं यह हैं कि हम अपने शरीर के अंगों को परमेश्वर को सौंपते हैं, जो उनके द्वारा धर्मिकता के काम करेगा। अतः, आज्ञाकारिता के आज्ञाकारी होना, रोमियो 6: 11–13 की पांच आज्ञाओं को मानना है। बार–बार उनका पालन कर के हम अन्ततः अनुग्रह द्वारा जीवन जीने के दास बन जायेंगे।

इस अध्याय का उद्देश्य कुछ ऐसे व्यवहारिक सुझाव देना है,

जो हमारे द्वारा रोमियो 6: 11–13 की पांच आज्ञाओं को निरन्तर मानने से हमें अनुग्रह द्वारा जीवन जीने की एक जीवनशैली का दास होने में सहायता करेंगे।

आदत की सामर्थ को समझें

हम सभी अपने अनुभवों से यह जानते हैं कि हम आदत के नियंत्रण में रहने वाले प्राणी हैं। और हम सबके पास एक ऐसी आदत है जिसे तोड़ना आवश्यक है। यह आदत, स्वंय के ज्ञान और समझ पर निर्भर रहना है। इसके साथ ही यदि हमें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मसीही जीवन जीना है, तो हमें इसके लिए एक आदत को विकसित भी करना है। यह आदत, जीवन के द्वारा हमारी प्रतिक्रिया करने की आदत है। एक ऐसी आदत को बदलना जहां हम प्रतिक्रिया करने को अपने अधिकार में रखते है, सम्भवतः एक लम्बी अवधि की प्रतिक्रिया हो सकती है, परन्तु ऐसा किया जा सकता है। यदि हमें अनुग्रह द्वारा जीवन जीने की जीवन शैली को अपनाना है तो ऐसा करना आवश्यक है।

अध्ययन करने के प्रति गद्यांशों को समझें

यहां हमने पवित्रशास्त्र के कुछ छोटे गद्यांशों का सन्दर्भ दिया है : रोमियो 6: 3–13 ; गलतियों 5: 17–24 ; रोमियो 7: 1–4 ; इफिसियों 2: 4–7 ; इफिसियों 5: 18 ; रोमियों 8: 2– 3 ; गलतियो 6: 14 : और कुलिस्सियों 3: 1–4। यह गंद्याश अत्यन्त महत्वपूंर्ण हैं।

जब आप इन छोटे गद्यांशों का अध्ययन करके इन पर अधिकार प्राप्त कर लेते हैं, तब आप बड़े गंद्याशों का अध्ययन कर पायेंगे। अनुग्रह के जीवन की हमारी समझ और अधिक बढ़ सके इसके लिए रोमियो 5: 12–8: 39 को समझना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए गलतियों की पूरी पुस्तक भी सहायक होगी। इफिसियों 1: 14–22 स्वर्गीय स्थानों में जीवन की हमारी समझ को बढ़ाता है। 2 कुरिन्थियों 1: 3–11 और 12: 7–10 दुख उठाने को और इसके

परिणामस्वरूप हमें कैसे अनुग्रह का जीवन मिलता है, इन सत्यों को समझने के लिए आवश्यक गद्यांश है।

अनुग्रह द्वारा जीवन जीने पर, बाइबिल की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक यूहन्ना रचित सुमाचार है। इसका कारण यह है, कि यह पुस्तक यीशु मसीह को, पिता परमेश्वर पर एक पूर्णतया निर्भर जीवन को जीते हुये प्रस्तुत करती है। यूहन्ना 20: 21 में प्रभु यीशु कहते हैं, '' जैसे कि पिता ने मुझे भेजा है वैसे ही मैं तुम्हे भेज रहा हूँ।'' जिस प्रकार से यीशु ने अपने पार्थिव जीवन को पूर्ण रूप से परमेश्वर पिता पर निर्भर होकर जीया था, वह हमें संसार में यही करने के लिए भेजता है।

समयानुसार, आप भी सम्भवतः यह कहने लगेंगे, ''अब मैं अनुग्रह के जीवन को समझता हूँ और अब मै इसे बाइबिल के प्रत्येक पृष्ठ पर देख पाता हूँ।'' अनेक लोगो ने यह कहा है। यह सत्य है। हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए परमेश्वर के सम्पूर्ण रूप से पर्याप्त होने और उसकी इस पर्याप्त पर हमारे निर्भर होने की आवश्यकता को, सम्पूर्ण बाइबिल सिखाती है।

फिर भी अनुग्रह के जीवन को जीने के हमारे आरम्भिक दिनों में हमें इन कुछ गद्यांशों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है जिन्हे यहां बताया गया है। परमेश्वर थोड़ा–थोड़ा करके यीशु के साथ हमारी एकता की हमारी समझ को बढ़ाता जायेगा !

अन्य सहायक बातें

अनुग्रह की एक जीवन शैली को जीने के लिये परमेश्वर हमें अन्य सहायता देने वाली बातें प्रदान करता है। यह उन बातों के रूप में हैं, जो हमारे नये मित्र हो सकते हैं जो अनुग्रह को समझते और अनुभव करते हैं और हमसे परमेश्वर के साथ अपनी संगति की विस्तार से सहभागिता करते हैं अथवा यह वे पास्टर और

शिक्षक हो सकते हैं जो हमें अनुग्रह के जीवन को सिखाते हैं।

यद्यपि हमें इन बातों को चुनने में अत्याधिक सावधानी बरतनी है। कुछ लोगों ने, हमारे यीशु में होने के सत्य को कभी भी बताये बिना, हममें यीशु के होने के सत्य की सहभागिता की है। कुछ लोग इससे अधिक और किसी विचार की सहभागिता नहीं करते हैं कि हमें विश्वास द्वारा अपने जीवन को जीना है। कुछ लोग तो वास्तव में यह कह कर अनुग्रह के जीवन को नष्ट कर देते हैं कि हमें केवल यही करना है कि, ''यीशु के लिये अपने सर्वोत्तम प्रयास करें।''

याद रखें कि आप पापरहित नहीं हैं

पाप के प्रति मरे हुये होने का यह अभिप्राय नहीं होता है कि हम कभी भी पाप नहीं करेंगे। हम सब पाप करते हैं। तो जब हमसे पाप होता है तो हमें क्या करना चाहिये।

जब हम पाप करते हैं तो हमें पश्चाताप करना है। एक पाप से पश्चात्ताप करने के वही सर्वोत्तम समय है जिस क्षण हम वह पाप करते हैं। इसी प्रकार से, क्षमा प्राप्त करने का सर्वोत्तम समय वही है जिस क्षण हम पश्चात्ताप करते हैं। सामान्य रूप से विश्वास को कार्य रूप देते हुये हम उस एक पाप के लिये जिसे हमने स्वीकार किया है, परमेश्वर को उसे क्षमा करने के लिये धन्यवाद देते हैं। हम चाहे यह कठिन लग सकता है, परन्तु जैसे ही हम एक पाप से पश्चात्ताप करते हैं और परमेश्वर की क्षमा को ग्रहण करते हैं, वैसे ही हमें स्वयं को उस पाप के प्रति मृतक मानना है – और उसी समय अपने उस स्वभाव को भी मृतक मानना है कि हम यह समझते हैं कि हमें सब कुछ ज्ञात है – हमारा वह स्वभाव जिससे पाप उत्पन्न होता है। हमारे प्रति शैतान हमारी इस प्रतीत को मूर्खता दर्शायेगा, कि एक निश्चित पाप की ग्लानि को कभी अनुभव नहीं करना, सम्भव है। आइये, शैतान को नहीं सुनें। हमें पवित्रशास्त्रों का

आज्ञापालन करना है। परमेश्वर हमें निरन्तर बढ़ती हुयी जय प्रदान करेगा।

तनाव मुक्त होने की आवश्यकता को समझें

जैसे–जैसे हम अनुग्रह की जीवन शैली में बढ़ते हैं, हम धीमें– धीमें परिवर्तित होते जाते हैं। कभी–कभी ऐसा लगता है कि हममें कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है। हमें परमेश्वर के हाथों में होने के कारण और परमेश्वर के समय में स्वयं को तनाव मुक्त रखना है। बदलाव उत्पन्न करने के लिये हम यदि कोई भी प्रयास करते हैं तो वहां शरीर कार्य करता है – और यह वास्तविक बदलाव में विलम्ब लाता है।

आत्मा की व्यवस्था को समझें

पवित्र आत्मा एक व्यवस्था के अनुसार सारे विश्वासियों के जीवनों में कार्यरत होता है। पौलुस इसे ''आत्मा की व्यवस्था'' कहता है। अर्थात, पवित्र आत्मा सभी विश्वासियों के जीवनों में एक सेवकाई को पूरा करता है जिससे वह कभी अलग नहीं होता है – इसलिये ''व्यवस्था'' शब्द का उपयोग हुआ है। पौलुस रोमियो 8:2 में लिखता है, ''क्योंकि मसीह यीशु में जीवन की व्यवस्था।'' यूनानी भाषा से अनुवाद में कुछ परिवर्तनों से इस अपेक्षाकृत अस्पष्ट अनुवाद को अधिक सरलतापूर्वक समझा जा सकता है।

इस पर इस प्रकार से विचार करना सहायक है : ''मसीह यीशु के साथ एकता में आत्मा की व्यवस्था बहुतायत का जीवन है।'' तब आत्मा की व्यवस्था का यह परिभाषा हमें मिलती है :

क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने और पुनः जी उठने में यीशु के साथ अपनी एकता को समझने और अनुभव करने के प्रति उनकी अगुवाई करने के द्वारा सभी विश्वासियों को बहुतायत का जीवन देने के लिये आत्मा की व्यवस्था परमेश्वर का अविरत अभिप्राय और गतिविधि है।

यह समझने और विश्वास करने के द्वारा कि हमारे जीवनों में आत्मा अपनी व्यवस्था के अनुसार कार्य करता है, हम परमेश्वर पर और यीशु के साथ हमारी एकता पर, हमारी सोच को केन्द्रित करने का उत्तरदायित्व पवित्र आत्मा पर देते हैं – और अब इस बोझ को स्वयं नहीं उठाते हैं।

आत्मा की व्यवस्था को समझ पाने से पहिले मैं अपनी सोच को परमेश्वर पर और यीशु के साथ अपनी एकता पर बनाये रखने के लिये संघर्ष किया करता था। अब मैं इस बोझ को नहीं उठाता हूँ। अब यह पवित्र आत्मा है जो हमारे क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने, और पुनः जी उठने को हमें याद दिलाता रहेगा।

जैसे–जैसे हम परमेश्वर पर निर्भरता के अपने इस नये प्राप्त पथ पर अग्रसर होते हैं, तो हम जीवन को इतना अधिक उत्तेजनात्मक पायेंगे जिसकी हमने पहिले कभी कल्पना नहीं की थी। जब हम इस पथ पर बने रहते हैं, तो समयानुसार, हम अनुग्रह के जीवन के एक दास बन जायेंगे।

अनुग्रह द्वारा जीवन जीने की जीवन शैली के एक दास बन जाने का बहुमूल्य परिणाम – बहुतायत का वह जीवन है जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु यीशु ने की थी।

निष्कर्ष

इस निष्कर्ष को पढ़ते हुये कुछ पाठक कहेंगे, ''आपने सर्वोत्तम तो अन्त के लिये बचा रखा है।'' ऐसा इसलिये है क्योंकि यहां मैंने कुछ ऐसे लोगों की मोहक और कायल करने वाली गवाहियों की सहभागिता की है जो यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को जीते हैं।

इन गवाहियों को पढ़ना, यह देखने के द्वारा हमें आशीषित करेगा कि प्रभु ने अन्य लोगों के जीवनों में क्या किया है परन्तु इसके साथ ही हम यह भी जानेंगे कि परमेश्वर हमारे अपने जीवनों में क्या कर सकता है। यह गवाहियां अनुग्रह के जीवन को अनुभव करने के मार्ग को स्पष्ट करती हैं।

एक पास्टर की व्यक्तिगत गवाही

जब मैं नौ वर्ष का था, तब मैंने यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता ग्रहण किया था। अधिकतर मसीहियों की भांति मैं यह अपेक्षाकृत रूप से कुछ–कुछ ही जानता था कि मेरे आत्मिक जीवन के बारे में परमेश्वर क्या सोचता था। जब मेरे माता–पिता का तलाक हो गया, तब मैंने आत्मिक शुष्कता के अनेक वर्षों को अनुभव किया था। अपने जीवन के लिये परमेश्वर की इच्छा के ज्ञान की कमी और यह आत्मिक सूखापन मेरे हाईस्कूल और कॉलेज के दिनों में भी बना रहा था।

वर्ष 1975 के क्रिसमस का समय तब मेरे जीवन में विशिष्ट रूप से न्यूनत्तम बिन्दु पर था जब मैं अपने स्वयं के प्रयासों से जीवन के एक ऐसे स्थान पर पहुंच गया था जहां कोई भी मार्ग दिखाई नहीं देता है, और मैंने बड़ी निराशा का अनुभव किया था। उस क्रिसमस

पर मैंने परमेश्वर से एक नयी प्रार्थना की थी जहां मैंने उससे कहा कि मेरे विचार कारगर नहीं थे, और मैं जानना चाहता था, कि मेरे लिये उसके क्या विचार थे।

वास्तव में उस प्रार्थना का अभिप्राय था कि मैं अपने जीवन के प्रत्येक दिन को जीऊँ इस बारे में परमेश्वर क्या चाहता था – जहां मैं अपने तर्क अथवा सर्वोत्तम विचारों पर निर्भर नहीं रहूँ, परन्तु जब मैंने अपनी सबकुछ जानने वाली मनोवृति की असमर्थता को समझा है तो सच्चाई से परमेश्वर की दिव्य अगुवाई को जानूँ जिससे कि मैं विश्राम पा सकूँ और सक्रिये रूप से परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर सकूँ।

यद्यपि, यह मनोवृति और प्रस्ताव अधिक दिनों तक टिका नही रहा था। शीघ्र ही मैंने परमेश्वर के विचारों और अगुवाई के बजाये अपने स्वंय के ''अच्छे विचारों'' और मसीही व्यवहार के बाहरी मापदण्डों पर निर्भर करना आरम्भ कर दिया था। अपनी प्रभुसत्ता में हो कर परमेश्वर ने तब मुझे कुछ मात्रा में सफलता प्रदान की थी जब मैंने ए एण्ड एम यूनिवर्सिटी की बैपटिस्ट स्टूडेन्ट यूनियन और बाद में बैपटिस्ट जनरल कनवेन्शन आफ टैक्सास में मिशन सर्विस कॉर्प्स स्वंयसेवी के रूप में नेतृत्व भूमिकाओं को निभाया था।

वर्ष 1975 से 1978 तक मैंने अनेक लोगो को परमेश्वर के अनुग्रह और यीशु मसीह के साथ मेरी एकता की शिक्षा को समझाते हुए सुना था। यद्यपि 1978 के पतझड़ के मौसम में मैने इस तथ्य पर एक इतने अधिक स्पष्ट प्रस्तुतिकरण को सुना कि इसने मेरे जीवन को बदलना आरम्भ कर दिया।

यीशु के साथ अपनी एकता की समझ की समझ ने मेरे विवाहित जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया और मेरे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आशीष प्रदान की थीं। पति के रूप में, मैंने शीघ्र ही

यह खोज लिया कि मेरी अपनी स्वाभाविक अच्छाई, धैर्य और प्रेम, मेरी अपनी पत्नी नैन्सी के लिए मेरे जैसा पति होने के प्रति पर्याप्त नही थे जैसा मेरा प्रभु मुझे बनाना चाहता था। जब मैंने यह सुना कि परमेश्वर ने, यीशु मसीह के द्वारा इन ''अच्छे गुणो'' को भी क्रूस पर चढ़ा दिया था तब इसने मुझे भलाई, धीरज और प्रेम के परमेश्वर के संसाधनो पर पूर्णतया बाध्य किया था। नैन्सी के प्रति परमेश्वर के प्रेम का माध्यम होने की इसने मुझे अनुमति दी थी।

हमारे वैवाहिक जीवन में संधर्षों का समाधान करने में अनुग्रह के सन्देश ने एक महान प्रभाव डाला था। हमारे जानने पर कि हमाारे बीच मतभेदो की जड़ हमारा पुराना स्वभाव था, हमने स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर के प्रति जीवित समझना आरम्भ कर दिया। इससे परमेश्वर की क्षमा और मेल को हमारे मध्य में अधिक स्वतंत्रता से प्रवाहित होने के लिए द्वार खुल गया था। परमेश्वर हममें से प्रत्येक के द्वारा हममे से प्रत्येक प्रति अपने प्रेम को प्रगट करने में दिन प्रतिदिन अपने अनुग्रह को प्रदान करता है।

एक पास्टर की पत्नी की व्यक्तिगत गवाही

जहां तक मैं याद कर सकती हूँ मैंने यह विश्वास किया है कि परमेश्वर मुझसे प्रेम करता है और अपने बचपन के अति आरम्भ से मैं उसके प्रेम को लौटाने की चाह रखती आयी हूँ।

मैने यीशु मसीह को अपनी 12 वर्ष की आयु में अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया था। अपनी सारी युवास्था में परमेश्वर के लिए मेरे गहरे प्रेम में कभी कोई बदलाव नही आया था– परन्तु मेरे लिए उपलब्धियां पाना निरन्तर एक मापदण्ड रहा था।

परमेश्वर से प्रेम करने की मेरी गहरी इच्छा के साथ–साथ सब बातों को सिद्धतापूर्वक करना मेरी लालसा थी, विशेष रूप से मैं

शिक्षा और संगीत में महान उपलब्धी पाना चाहती थी। इस प्रकार के जोश के द्वारा प्रेरित हो कर मैंने कठिन प्रयास किये थे और इसके परिणामस्वरूप मुझे अनेक सफलतायें प्राप्त हुयीं थी। और मैं मानती थी कि मेरी इन उपलब्धियों में परमेश्वर मेरी सहायता कर रहा था।

उन दिनों में, जीवन सदैव एक मजेदार अनुभव नहीं था। इन उच्च मापदण्डों को प्राप्त करना एक निरन्तर चलने वाला संघर्ष था। इसके साथ ही, जब मैं इतना कठिन परिश्रम करने के पश्चात असफल होती थी, तो एक गहरी निराशा में फंस जाया करती थी।

फिर कॉलेज के दिनों में, जब परमेश्वर की इच्छा में होकर मेरा विवाह एक पास्टर के साथ हुआ, तब मैं आनन्द से भर गयी। मैं जानती थी कि इससे मुझे एक अवसर प्राप्त होगा कि दर्शा सकूं कि एक पासबान की ''सिद्ध'' पत्नी कैसी थी। मैंने सारे पासबानों की पत्नियों के लिये आदर्श बनने के लिये कठिन प्रयास किये। कदाचित ही मैं कलीसिया के किसी काम को करने से इनकार करती थी। परन्तु समयानुसार, मैं अपनी असफलताओं के कारण पुनः निराश रहने लगी।

मैंने स्वयं से पूछा, ''कैसे मैं इतना अधिक परिश्रम करके इतनी असफल हो सकती हूँ ?''

अनेक वर्षों के प्रयासों से और असफलताओं के बाद, मैंने यह जाना कि मैं इन्ही बातों को निरन्तर नहीं कर सकती हूँ क्योंकि मेरे साथ कुछ गलत था। इन उत्तरों की अपनी खोज के पश्चात, मैंने यह समझा कि जो जीवन मैं जी रही थी वह मेरे ''अहम्'' में केन्द्रित था। अपने जीवन में पहली बार मैंने स्पष्ट रूप से यह जाना कि मैं अपनी इच्छा अनुसार और अंहकार से भरा हुआ जीवन जी रही थी।

जब परमेश्वर ने मेरी हृदय की यर्थाथ दशा को प्रगट किया

तो मैंने अपनी आत्मा को गम्भीरतापूर्वक बिमार पाया।

इसी समय मैंने जाना कि मैं नये नियम की अवधारणा के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं कर रही थी, कि यीशु मसीह को मेरे द्वारा जीवन जीना चाहिये। ऐसा क्यों था, इसका अब मैं कम से कम एक कारण जान पायी हूँ।

मेरे ''आन्तरिक'' जीवन की आत्मा की बिमारी के साथ–साथ परमेश्वर ने मेरे ''बाहरी'' जीवन की असफलताओं को बढ़ाना आरम्भ कर दिया था। जैसे–जैसे मैंने और अधिक निराशा का अनुभव किया, उतने ही शीघ्र मैं पूर्णतया शिथिल हो जाने के बिन्दु तक पहुंच रही थी।

इसी समय, जब परमेश्वर मुझे निचोड़ रहा था कि मैं अनुग्रह के द्वारा जीवन जीऊं, तभी मेरे पति ने अनुग्रह द्वारा जीवन जीने के अनुभव को पाना आरम्भ कर दिया था। परन्तु इससे मुझे आशीष का अनुभव नहीं हुआ। वास्तव में सच्चाई इसके विपरीत थी और मैं अपने पति के इस नये प्राप्त आनन्द पर क्रोध का अनुभव करने लगी थी।

परमेश्वर ने जो कार्य मुझ में आरम्भ किया था उसे करना जारी रखा, और एक शनिवार की सुबह, उस समय के एक सप्ताह बाद से जब मैंने अपने पति में परिवर्तन देखने आरम्भ किये थे, मैंने निर्णय लिया कि अब मैं इस प्रकार आगे नहीं बढ़ सकती हूँ – मैं तो आत्मिक रूप से इस योग्य भी नहीं थी कि अगले दिन अपनी सण्डे स्कूल कक्षा को पढ़ाऊँ।

उसी समय, मेरे पति घर आये और उन्होंने मुझे एक छोटी सी पुस्तक दी जिसे मैं तुरन्त ही पढ़ने लगी। उस छोटी सी पुस्तिका के द्वारा परमेश्वर ने मुझे दर्शाया, कि ''मसीह में'' मैं एक नयी सृष्टि थी और इसके परिणामस्वरूप मेरे पास एक नया मन था। अब मैं भिन्न ढंग सोच सकती थी।

उस शनिवार की दोपहर में, पवित्र आत्मा ने मेरे वैचारिक जीवन को बदल दिया था। मैं तुरन्त परमेश्वर को भिन्न रूप से देखने लगी। इसके साथ ही, मैने यीशु मसीह के साथ अपनी एकता को भी देखा– कि मैं उस क्षण से ही उसके साथ एकता में हूँ जिस क्षण मैने अपना जीवन उसे सौंपा था। उस दिन मुझ पर यह प्रगट हुआ, कि मैं पाप के प्रति भरी हुयी और परमेश्वर के प्रति जीवित थी– मैं क्रूस पर चढ़ाये जाने, दफनाये जाने, पुनरूत्थान और सिहांसन पर उसकी पदस्थिति में, प्रभु यीशु मसीह के साथ एकता में थी।

उस शनिवार की दोपहर से मैने इस सत्य को स्वीकार करना आरम्भ कर दिया कि मैं यीशु की मृत्यु, दफनाये जाने, जी उठने और सिहांसन पर उसकी पदस्थिति में उसकी एकता में हूँ– और मुझे तुरन्त बदलाव का अनुभव हुआ।

अतः मुझे एक पासबान की पत्नी के रूप में आनन्द का अनुभव होने लगा था। जब मैंने इस विषय में प्रभु की ओर उसकी अगुवाई के लिए देखना आरम्भ किया तो मेरा प्रार्थना जीवन पूर्णतया बदल गया। यह कितना स्वतंत्र करने वाला था कि मुझे एक निश्चित नमूने के अनुसार प्रार्थना नही करते रहना है परन्तु प्रभु को अनुमति देनी है कि वह अपनी चिन्ताऐं और इच्छाऐं मेरे हृदय में डाले।

सभी लोगों के लिए एक नया और महान प्रेम अब परमेश्वर के हृदय से मेरे हृदय में इस गहरी इच्छा के साथ बहने लगा था कि परमेश्वर को महिमा प्राप्त हो।

अब मैं इस योग्य हूँ कि कलीसिया में तब उन कार्यो का करने से मना कर सकूँ जब उन्हे स्वीकार करने के लिए पवित्र आत्मा मेरी अगुवाई नही करता है।

इसके साथ–साथ अब मैंने एक अभिभावक के रूप में

परेशान रहना समाप्त कर दिया था। परमेश्वर के अनुग्रह से मैंने अपनी सन्तानों और नाती–पोतों को परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया हैं। ''स्वर्गीय'' पिता की देख–भाल में उन्हें छोड़ना अत्यन्त शान्तिदायक है। अब मै स्वंय कुछ करने के प्रयास के बजाये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार एक जीवन अधिक जी रही हूँ, जिसका अभिप्राय है कि मैं ''अपने काम से विश्राम पा रही हूँ'' परन्तु उसके कार्य में सक्रिय रूप से सम्मिलित हूँ।

अब अनेक वर्षों से मैंने स्वयं को पाप के प्रति मरा हुआ और परमेश्वर के प्रति जीवित समझा है और पाप के प्रति स्वयं को मृतक और परमेश्वर के प्रति जीवित रहना ''चुना'' है। मैं प्रतिदिन और एक दिन में अनेक बाद यीशु के साथ उसकी मृत्यु, दफनाये जाने, जी उठने और सिंहासन पर उसकी पदस्थिति में अपनी एकता का दावा करती हूँ और उसे चुनती हूँ। जब मैं यह करती हूँ, तो प्रेमी परमेश्वर मुझमे निरन्तर आशीषमय बदलाव लाता रहता है।

मैं उसके नाम की स्तुति करती हूँ !

अन्तिम शब्द

इस पुस्तक में ''यीशु के साथ एकता'' के कुछ सत्यों के प्रस्तुतीकरण को सम्मिलित किया गया है। नये नियम की यह गवाही है कि ''यीशु मसीह के साथ एकता'' मसीहियों के जीवनों में कार्य करती है। यह व्यवहारिक रूप से कार्य करती है।

इस पुस्तक में हममें से कुछ ऐसे लोगों की गवाहियां भी दी गयीं हैं, जो ''यीशु मसीह के साथ अपनी एकता'' हमारे जीवनों में काम करती हैं। यह हमारे जीवनों में व्यवहारिक रूप से कार्य करती है।

हमें यह स्वीकार करने की प्रसन्नता है कि हम यीशु मसीह में होकर जीवन जीते, और चलते–फिरते, और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरितों के काम 17:28)।